भोजपुरी
2015 जून , अंक 5

आखर

एगो डेग भोजपुरी साहित्य खाति

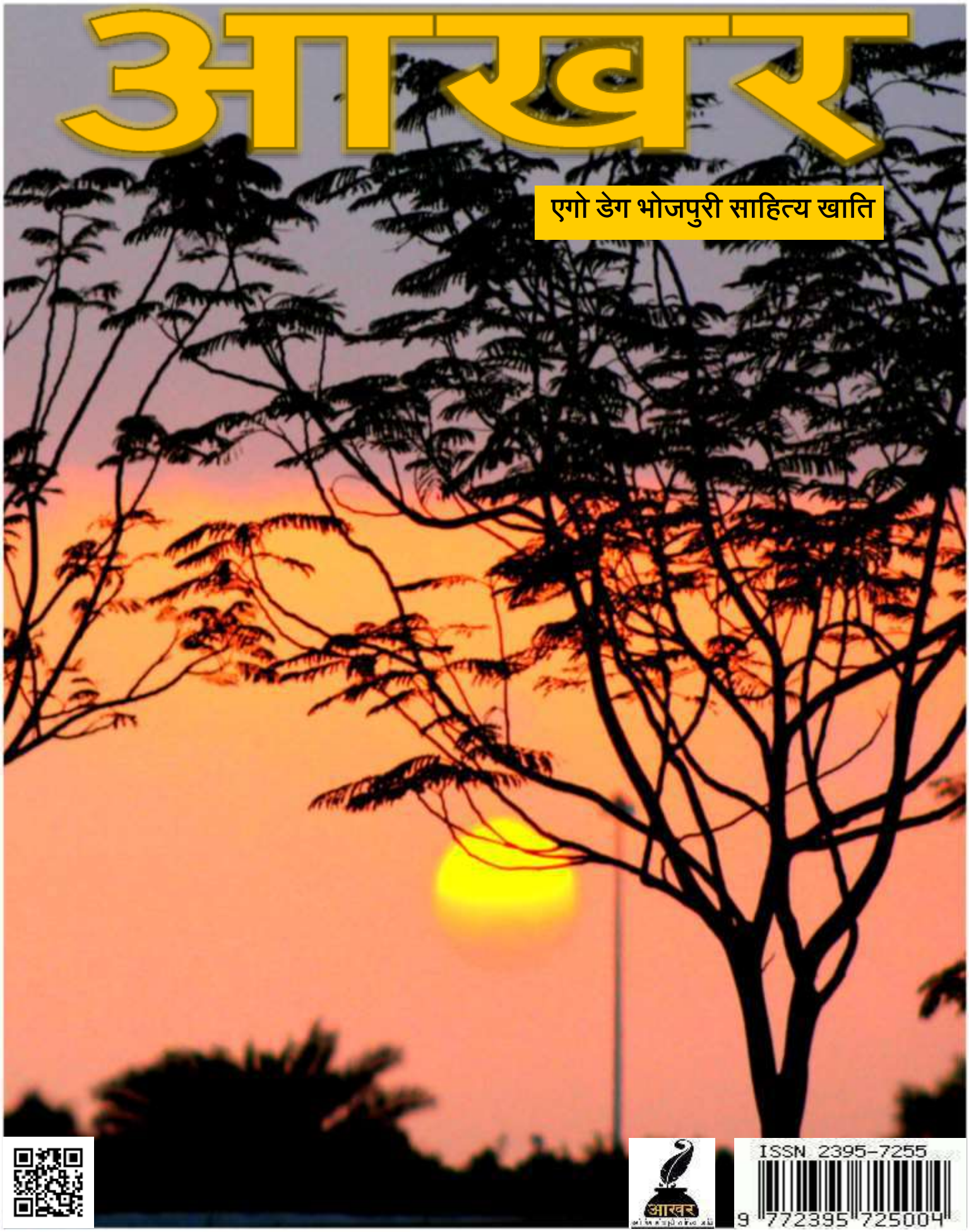

ISSN 2395-7255

प्रकाशन / संपादन मंडल :
संजय सिंह , सिवान
देवेंद्र नाथ तिवारी , वर्धा
शशि रंजन मिश्र , नई दिल्ली
नबीन कुमार , दुबई

तकनीकी -एडिटिंग, कम्पोजिंग
अश्विनी रूद्र , न्यू यॉर्क
अनिमेष कुमार वर्मा , अबू धाबी
छाया चित्र सहयोग
स्वयम्बरा बक्सी , पी. राज सिंह,
चेतन कुमार

आखर पता
ग्राम पोस्ट- पंजवार (पोखरी)
सिवान , बिहार 841509
क़ानूनी सलाहकार
ललितेश्वर नाथ तिवारी , पटना

ISSN: 2395 –7255

आखर

वर्ष: 2015 अंक 5 जून। **ई - पत्रिका**
सब पद अवैतनिक बा।

सूरीनाम
चान ई. एस. चुन्नी

तइयारी
अनूप श्रीवास्तव

परधानिन
सरोज सिंह

कबीर
संतोष पटेल

काउ फादर आ लोकगीत
समता सहाय

बियाहकटवा कि कलाकार
तंग इनायतपुरी

भोजपुरी सिनेमा: अब गाँव आ माटी के महक बा नदारद
धीरेंद्र राय

जज के ऊपर के बा ?
गौरव सिंह

परामर्श मंडल
प्रभाष मिश्र , नासिक
अतुल कुमार राय , बनारस
धनंजय तिवारी , मुंबई
चंदन सिंह , पटना
सुधीर पाण्डेय , दुबई
पंडित राजीव , फ़रीदाबाद
अजित तिवारी , दिल्ली
बृज किशोर तिवारी , सोनभद्र

प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरुरी नइखे की संपादक के विचार लेखक के विचार से मिले । लेख पे विवाद के जिमेदारी लेखक के बा।

संपर्क : आपन मौलिक रचना , लेख ,कविता , फोटो , विचार आखर के ईमेल-आईडी aakharbhojpuri@gmail.com पे भेज सकेनीं। सुविधा खातिर रचना हिंदी यूनिकोड में ही भेजीं।
मुख्य पृष्ठ छाया/आवरण : अनिमेष कुमार वर्मा , अश्विनी रूद्र
रेखा चित्र : शशि रंजन मिश्र

www.aakhar.com | facebook/Aakhar | Twitter: @aakharbhojpuri www.bhojpurisahityangan.com

आखर के फुलवारी

आपन बात :	आखर जमात	4
बतकूचन :	सौरभ पाण्डेय	6
गीत :	जौहर शाफियाबादी	9
कबीरदास :	देवेंद्र नाथ तिवारी	10
कबीर के भाषा:	संतोष पटेल	11
सूरीनाम में हिंदुस्तानी प्रवासन के कहानी :	चान ई० एस० चुन्नी	15
गाँव :	गोबर्धन भोजपुरी	18
करे अगवानी :	फतेहचंद बेचैन	19
भोजपुरी लोकगीत : गाँव आ लोक जीवन :	रविकांत सिंह	20
गोकुल जइसन गाँव :	कुमारी विनीता 'रंजन'	23
दू गो कविता (हमार गाँव, बेटी) :	चंद्रभूषण पाण्डेय	24
केतना बदल गइल बा गाँव :	नुरैन अंसारी	25
कविता (मोर गाँव रे, गउंवा के माटी) :	संतोष कुमार शशि	26
बाउजी के डायरी (पहिला पन्ना) :	अनिमेष कुमार वर्मा	27
एहवात (लघुकथा) :	गणेश जी बागी	29
नसीब :	अभिषेक भोजपुरिया	30
काऊ फादर (लघुकथा) आ बेटी के बियाह गीत :	समता सहाय	32
बंगाल सूबा में शोरा के व्यापार (भाग-2) :	पी० राज सिंह	34
भोजपुरी संस्कार गीतन में नीति मूल्य :	देवेंद्र नाथ तिवारी	37
बेटी बियाह: तइयारी :	अनूप श्रीवास्तव	40
परधानिन :	सरोज सिंह	42
ग्लोबलाजेशन, ग्लोबल वार्मिंग -	—	—
ग्लोबल विलेज आ महाभारत :	निराला	46
दिल जब बच्चा था जी (भाग-5) :	बृज किशोर तिवारी	48
भोजपुरिया इलाका में शादी -बियाह :	डा० रीता सिन्हा	49
पारंपरिक गीतन में श्लीलता आ अश्लीलता :	उदय नारायण सिंह	50
एगो गीत, एगो कविता :	गोरख प्रसाद मस्ताना	52
बियाहकटवा की कलाकार :	तंग इनायतपुरी	53
भोजपुरी दोहा :	अशोक कुमार तिवारी	55
दू गो लघुकथा :	केशव मोहन पाण्डेय	56
गुईयाँ :	डा० सोनी पाण्डेय	57
गरीबी के फसरी :	प्रभाष मिश्र	58
जज के ऊपर केहु बा का ? :	गौरव सिंह	61
छनुकी :	अरविन्द कुमार पाठक	63
अगुवा :	धनंजय तिवारी	64
भोर :	ज्योत्सना प्रसाद	67
यात्रावृतांत : सरकुंडी दर्रा (पहिला भाग) :	रौशन कुमार	70
सपना: हकीकत से अंजान (भाग-1) :	जलज कुमार अनुपम	74
भोजपुरी में फइलल अश्लीलता के-	—	—
खिलाफ खड़ा – अम्बा :	अविनाश राव	77
सिनेमा बिना कवन अकाज हो जाई :	नितिन चन्द्रा	78
भोजपुरी सिनेमा: अब गाँव आ माटी-	—	—
के महक बा नदारद :	धीरेन्द्र राय	80
सियासत के आपन ताकत देखावे के पड़ी :	निरंजन कुमार मिश्र	84
सामाजिक चरित्र (लघुकथा) :	ब्रिज भूषण चौबे	85
पर्यटन : गुप्तधाम रोहतास :	आदर्श तिवारी	86
दू ठो कविता :	श्वेताभ रंजन	87
भोजपुरिया दोहा :	आचार्य संजीव वर्मा	88
राउर बात :	आखर के ओर से	90
निहोरा :	आखर के ओर से	91

आपन बात

समाज के प्रारम्भिक इकाई परिवार हऽ । "बियाह" ए इकाई के बीज हऽ । एहि बीज से जनमेला परिवार । परिवार से समाज, आ समाज से वृहत समाज । भोजपुरिया समाज बियाह के एगो उत्सव के रुप में मनावेला । एह उत्सव में नहा के भोजपुरिया संस्कृति बिहँस उठेले । सांस्कृतिक तत्वन के महाकुम्भ लागेला लगन में । एह महाकुम्भ में गोता लगाके आदमी के साथे साथे पशु पक्षी भी तृप्त हो जाला । सामाजिक एकता के जवन विहंगम दृश्य भोजपुरिया बियाह में लउकेला, उ अद्भुत बाटे । कुछ संस्कारन में भाई के जरुरत बाटे, त कुछ में भौजाई के । मामा के बिना त बियाहे ना हो सके । बेटी के बियाह के पहिले टोला-मोहल्ला, गाँव-जवार, हितई-नतई के लोग खायेक लेके आवेला । ई खाली खायेक ना होला बलुक जकड़ल सम्बंधन खातिर संजीवनी होला । नईहर से नेवता खातिर निकलल बहँगी में लचकत छाँटल-फटकल अनाज के दाना भी अपना भाग्य पर इतरात कँहार से कह उठेला-

तनी जल्दी चलु रे कँहरा, जल्दी चलु

ताकत होइहें दिदिया बहरा, जल्दी चलु ।

बियाह रोपाते गीत गवनई शुरु हो जाला । संझा-पराति, मइया के गीत, गाई के गोबरे से आगे बढ़त, बात हास-परिहास तक जाला । हास-परिहास अपना चरम पर पहुँच के भले "गारी" बन जाव, बाकिर ई गारी सुने खातिर सबके मन लालायित रहेला । जे गावेला उहो पीछे ना हटे आ जेकरा खातिर गवाला उ छाव चाहे जेतना क लेव, मने मने गच्च रहेला । बरिसन के मन के मईल एह उत्सव के प्रवाह में बह जाला । कन्यादान के बेरा बेटी के "बाबा" के साथे हीत-परित, आपन-बैरी सब एक हो जाला । चारु दिशा के लोरिआइल आँख आ छटपटात करेजा के साथे प्रकृति भी बेटी के बाबा के साथे रो पड़ेले-

धीरे बहे गंगा मधुरे बहे जमुना, सरजू बहेला मँझधार

ताही पइसी बाबा हो थर थर काँपेलें, कइसे करब कन्यादान ।

2जून के कबीरदास जयंती मनवनीहजा हमनी के । संत कबीर के आगमन वसुंधरा पर ओह बेरा भइल रहे जब समाज धार्मिक जकड़न में उलझल रहे । एगो धर्म नया नया उपटल रहे । अपना विवेक आ उपलब्ध अवसर के लाभ उठाके सत्ता प्राप्त कइलस । दुसरका धर्म सनातन काल से चलल आवत रहे। आप-अपनी के श्रेष्ठ देखावे के कामना धर्म के विकृति के राह खोल दिहलस । संत कबीरदास जी समाज के ध्यान एह विकृति का ओर आकृष्ट कइनी । कठमुल्लापन आ धार्मिक रुढ़िवादिता पर जम के हल्ला बोलनी । उँहा के साफ कहनी कि सत्य के तलाश खातिर ज्ञान मार्ग पर चले के पड़ी । ई राह दुष्कर जरुर बा बाकिर गुरु के निर्देशन में एही राह पर चलके सत्य से साक्षात्कार कइल जा सकता ।ई बात खाली उँहा के कहनी ना बलुक अपना जिनगी में जियनी । जवन आदमी अपना बारे में दो टूक कहता कि कलम आ सियाही हाथ से नइखे छुआईल, ओकरा चिंतन के स्तर कौतुहल के विषय बा । आज संत कबीर पर दुनिया भर के पचासन विश्वविद्यालयन में शोध कार्य हो रहल बा । ज्ञान के उत्कर्ष आम जन के भाषा में जब आकार लेला त केतना सहजता से गूढ़ से गूढ़ बात कह जाला एकर एगो उदाहरण देखीं, जवना में भीतर के अंतः के जगावत कबीरदास जी बिना लाग लपेट के इशारा करतानी-

जागु जागु रे ननदिया महलिया आइल चोर ।

5 जून के दुनिया भर में पर्यावरण दिवस मनावल जाला । पर्यावरण संतुलन के अवधारणा विकास के महत्वाकांक्षा के नीचे दबा के क्रंदन कर रहल बा । प्रकृति के बेपानी करे के कोशिश जीव जगत पर भारी पड़ रहल बा । सीमित होत संसाधन आ आदमी के बढ़त लालसा के बीच के विरोधाभास सामने आ रहल बा । कबो बाढ़ त कबो सूखा । देश के आधा भाग में अतिवृष्टि त आधा में अनावृष्टि । कहीं खुबसूरत पहाड़न के रौद्र रुप, त कहीं बर्फबारी के खौफ । एक दिन के बहस आ आयोजन से कुछ बदले वाला नइखे । जब ले जन जन के मानस पटल पर ई चेतना अंकित ना होई, तब ले प्रकृति के बेतहाशा दोहन होत रही । त्वरित लाभ के आकर्षण में बन्हाईल मानव अपना भावी पीढ़ी के भक्सी झोंके खातिर पटकथा लिखत रही ।

भोजपुरिया समाज अपना पर्यावरण के लेके हमेशा चैतन्य रहल बा । पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे वाला वृक्षन में समाज देवता के देखेला । नीम, पीपल, समी, केला एकर उदाहरण बा । आम के पल्लव के बिना त कवनो

शुभ काम के कल्पना नइखे कईल जा सकत। हमनी के समाज पीढ़ी दर पीढ़ी सांस्कृतिक प्रतीकन के माध्यम से ई चेतना हस्तांतरित करत आईल बा। आजुओ करत बा। एगो बानगी देखीं-

नीमिया के डाढ़ि मईया लावेली हिंडोलवा कि झूली-झूली ना

मईया मोरि गावेली गीतिया हो कि झूली-झूली ना।

स्वाभाविक बा कि जहाँ देवी के वास रही, ओकरा संरक्षण खातिर आम जन सक्रिय रहिहन।

आज के दौर में भोजपुरी गीत-संगीत निरंतर पतन का ओर जा रहल बा। एकर सबसे बड़ कारण बा तटस्थ लोग के खोखलापन आ जागरुक लोगन के दुविधा। समाज जेकरा से नेतृत्व मांगेला अगर उ मौन रह जाई त अयोग्य लोग आगे आ जईहन। समाज जेकरा में आपन रक्षक देखेला अगर उ दुविधा में आ जाई त भक्षक रक्षक बने के दावा करे लगिहन। आज जरुरत एह बात के बा कि जमल पानी में रोड़ा फेंकल जाव। तरंग के धार में डूबत उतरात मलीनता के किनारे आवे के पड़ी। निर्मलता मूल तत्व हs। इहे स्थायी रहल बा आ आगे भी रही। ध्यान रहे कि सभे अपना हिस्सा के काम करत रहो।

हृदय के जवना गहराई से रउआ सभे आखर के अंगीकार कइले बानी, ओकर थाह लगावल सम्भव नईखे। हमनी के यात्रा मार्ग हमेशा निर्विघ्न बनल रही अगर एहिलेखाँ रउआ सभे के मार्गदर्शन मिलत रही। आखर के जून अंक एहि विश्वास के साथे समर्पित करत ...

टीम आखर

बतकूचन...

घर- आँगन, दर-दरवाजा, दुआर-कोठारी, खिड़की-अहाता, जहवें देखीं, सभ जगहा अपना-अपना ढङ-रङ के हीत-नाता, मरद-मेहरारू, छोट-बड़ अँड़िसल बाड़े, परल बाड़े । थाकल, थहराइल, हँकासल, पटाइल ! जेठ के टभकत घाम । सुकुँवारन के का पूछेके बा, एक से एक मजगरन के मुँह मछरी अस बवा गइल बा । बाकिर, बियाह परोजन के दिन । सर्हियाइ के मनसुन्नी बतकूचन चल रहल बा । ओह परिवारन के, जहवाँ परोजन बा, मेठ, जवान भा लइकन के गोड़ में त जइसे चकरघिन्नी लागल बा । होने जवन जानी नइखी पटाइल, ऊ घर के मेहररुअन सङे बाझल बाड़ी । काम के कमी बा ? गिनही के नइखे । 'ढेर दिना प भेंटऽइलू हा हो, ए फुआजी..' कहत जवन ना गङ-जमुन जलधारा बहे लागऽता कि कवनो अनमना बुझाते अचके में 'आ मार बढ़नी रे..' कहत बिलाहूँ जाता ! लइकियन के त जइसे कुल्हि अबूझ बूझे के बेरा आ मौसम आइल बा बुला ! नाता-रिस्ता, बियाह-बेवहार के माने-मतलब बूझे में 'बाड़ा' नू रऽस बा ! 'आह्याहि' करत रहि-रहि के फेंकर देत बाड़ी स । परिवार के मेठ भा जवन जाना के नाँवे परोजन ओजाइल बा, हुनुकर बड़-बूढ़-बाप जे होखसु, उनकरा जिनिगी भर के कुल्हि कइलका एही बेरी लउकि जाई । लउकि का जाई, लउक रहल बा, पिछला डेढ़ महीना से । बिटुराइल सभ हीत-नाता, सङ-सँघतिया आँखि फारि-फारि गुम्मी बन्हले बा लोग - "ईहो अब देखिये लियाव, ई दुअरा कइसे सजि रहल बा !"

खइनी मीसत हलुअइया लिस्ट थमवले बा, आ चौकी प ओठङल छोटका च्चा के राह जोह रहल बा - "सभ कुछ के बेरा नू होला जी.. काल्हुए परोजन हऽ आ हई देखीं कुबेरा ! बाद में हमरे प्रान खातिर चढ़ि बइठी लोग.. " रहि-रहि लागे बुदबुदाये - "ई कवन ढङ हऽ महराज.. नवका त ना हऽ ई लोग, पुरखन से नाँव बा । बाकिर, डालर-चाचा के का कहाव.. रङ-ढङ त नवके अस ओढ़ले बानीं"

छोटका च्चा आजकाल गाँव-जवार में 'डालर-चाचा' के नाँवें 'फेमस' भइल बाड़े । भोजपुरिहा जवान दुनिया में कहवाँ नइखन जात स, कहवाँ से कमाइ नइखे आवत स । एही अङने माड़ो गड़ाइल बा, सजावे के झालर आ फुदेना बिदेस से आइल बा । आ सुनाता जे चालीस-पैंतालिस गो ले लमकी कार आ पाँच गो ले लक्जरी-बस में बरियाति आई । जवारो में नेवता सबहरे के गइल बा ।

होने बाजा आला के अबहीं ले पते नइखे ।

"जा मरदे, का नीमन रहित जे मिलिटरी बैण्ड कऽ दियाइत, छोटका च्चा से पहिलहीं कहले रहनीं । सान आ मान त आलगा, टाइम प दुअरा ठाढ़ त भ जइते सऽ बाकी, कहाला नू, बऽड़ का आगा आ घोड़ का पाछा ना होखे के ! अब धउरऽ उन्हनीं का पाछा घामा-घामा " - मननजी मारि तनाइला के नकफोरा भइल रहले ।

कहे के माने, जेकर जइसन बेंवत, तइसने में बाझल । ओइसने तैयारी आ बेवस्था में अझुराइल । अइसना में कपरा घामो चूओ तऽ का चूओ ? जेठ के बीखि घाम दँवकत उछाह आ जिम्मेवारी से बेर-बेर हार रहल बा । दुपहरियो मारि गुम्मस कइले अँइंठल बीया । गाछ के पतई ले नइखे हीलत । तवना प पंडीजी के कइलका अलगे आफत कइले बा । काँच काठी आ ओद गोईंठा से उठत मरिचाह धुआँ ! आँखि फोर के जइसे लोर सङे किरकिरी चुआ दीही । अइसना में फर्राटा सुख का

सौरभ पाण्डेय

सौरभ पाण्डेय जी के पैतृक भूमि उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के द्वाबा परिक्षेत्र हऽ । रउआ पच्चीस बरीस से सपरिवार इलाहाबाद में बानीं । पिछला बाइस बरीस से राष्ट्रीय स्तर के अलग-अलग कारपोरेट इकाई में कार्यरत रहल बानी । आजकाल केन्द्रीय सरकार के परियोजना आ स्कीम के संचालन खातिर एगो व्यावसायिक इकाई में नेशनल-हेड के पद पर कार्यरत बानी । परों को खोलते हुए (सम्पादन), इकड़ियाँ जेबी से (काव्य-संग्रह), छन्द-मञ्जरी (छन्द-विधान) नाँव से राउर किताब प्रकाशित हो चुकल बाडी स । साहित्य के लगभग हर विधा में रउआ रचनारत बानीं आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भासा में समान रूप से रचनाकर्म जारी बा । साहित्यिक संलिप्तता के दोसर क्षेत्र बा - सदस्य प्रबन्धन समूह ई-पत्रिका,"ओपनबुक्सऑनलाइन डॉट कॉम' ; सदस्य परामर्शदात्री मण्डल त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वगाथा' ।

दी, भँड़ोल ढेर कऽ रहल बा। एके बन्न करावऽ महराज ! बेना हाँकत सभ बऽड़ आ प्रणम्य लोग दुअरा खटिया-तखत-चौकी परले-सम्हरले सगरे समाजे ना 'विश्व' भर के समस्या प चिन्तन -मनन करत अझुराइल बा ! धनबादआला चाचाजी त रहि-रहि ओबऽमे प खीसिया उठस - "ससुरा जब ऊ पहिला हाली आइल रहे, तबहीं हम कहनीं, जे ई बड़का फेंकू हऽ। बोली के गोली से सरवा होली खेली। बाकि नाः, सउँसे अमरीका जइसे बउराइल रहे.. अब भोगसु अमरीका राम"

उनका एह सोझ निर्णय प केहू का बोलो ! बड़ मनई ! छौ बरिस भइल, बीस-पच्चीस दिन अमरीका रहि के का अइल बाड़े, अमरीका के कवनो बिसय प उनके विशेषाधिकार रहेला।

"का जी, अमरीको में परधानी लड़ाला " अब जतना बुद्धि ओइसने सवाल !

चाचाजी के त ई खनखनाइ के लागल - " आ ना चुप रहबऽ.."

अइसनन से सचकी का बतियावल जाव !

"हमार गँइयो सरवा ऊहे रहि गइल, भकचोन्हर के भकचोन्हर !" - चाचाजी कनखिये तिकवत मुँह फेर लेलन।

ढाला प के चाह-गुमटियो प आजकाल बतकूचन के बिसय ईहे बा - "चलऽ साध पुरा कऽ दिहलन स लइका छितेसर पधिया के "

"ए महराज ई बियाह हऽ ? फुट्टानी हऽ फुट्टानी ! आ हे फुटानी के गोड़ ना, पाँखि होले "

"त तूँ काहें जऽरि-मुअलऽ ए गोसाईंजी ?"

गोसाईंजी छन्न दे तड़क परले - "हम का जरऽब आ मुअब जी ? गँइया-जवार में अउरी केहू के बेटी-बेटा बा कि ना ? लूर-लकम-बेवहार नसाता त इन्हनीं लोगन का मारे। जिनका बेंवत बा, तका ऊ लगिहें आगी में मूते ?"

"हई लीहीं.. अब हिनकर सूनीं ! हातना केहू सोचऽता जी ? भाए, आपन काम बनता, भाँड़ में जाए जनता ! का रउओ गोसाईंजी !.. हा हा हा.. "

"ई ठट्ठा तूँ नइखऽ करत ए बाचा दरोगाजी के 'गान्ही छाप' बोलऽता.." गोसाईंजी पितिया भरले - "ईहे भोजपुरिहा लोगन के सोच आ बेवहार बा, एक सुरुए से, आदर्श के नाँव प गुमान, आ बेवहार के नाँव प ढोंग !"

गोसाईंजी त जइसे रोकले ना रुकले, - "के सकी अइसना में जी ? कवना के पूत नइखे ? भा के कवना के बाप न हऽ ? सभ के सभ बा। सभ पर सभ बा। कहलो जाला 'बाढ़े पूत पिता के धरमे'। एही के तुक में तुक मिलाईं 'बुचिया जाई अपना करमे' ओह्होः ! का ई खलसा तुक हऽ ? सउँसे जिनिगी भर के गाथा हऽ!"

इहवाँ दुआर पर जाने काहें होने चुल्हानी में बड़की माई रेस भइल सुनऽइली।

"का रे रमौतिया का भइल बा रे ? का गादहि मचल बा ?.." दुअरा केहू पुछलस।

दस बरिस के रमौतिया, नन्हकू भऽर के लइकी, पुछाते आङना ओरे धऽउरि चलल।

रमेसर दूबे, गाँव भर के भउजइयन के देवर बनत फीरेले, तले अङौछी से मुँह तोपले खें-खें करत बहिरी निकलले - "बड़की माई आजु केहू के जीये ना दीहें ए बाबू.. परिछावन के लोढ़ा साफा-ओफा कके धइले रहली हऽ। बनारसवाली ओही लोढ़वा से अपना कमरा के मोरी बन कऽ देले बाड़ी.. काजे पाछा गड़हवा से मूस आवत तारे स !"

"हा हा हा अब उनको का गलती ? उनका होस में मसाला आ पिसान त मिक्सी में होत चलल आइल बा !"

"त जाऽऽसु, मिक्सिये से परीछ देसु !!" - बड़की माई के पारा त जइसे बहिरी छलके प आइल रहे।

सङे-सङे मँझलियो चाची तड़क उठली - "अउरी बिलायत के पढ़लकी लेइ आवसु "

जाने काहे मँझली चाची के एह वक्रोक्ति में क्रोध कम, भँड़ास ढेर बुझात रहे।

सचकी अब का परिछाओ ? का पुजाओ ? आजु के कनिया ई कुल्हि चीजुअन के नाँव आ उपयोग जनिहें तब नू पूजे आ परिछे के बात करिहें ! का रहिये गइल बा ? ना पीढ़ा, ना पाटी, ना जाँत, ना ओखर, ना सिरीस, ना इनार, ना ढेंकुल ! परोजने के परोजन ई कुल्हि जोहाता आ लउकऽता। ना तबके जीवन-ढङ रहि गइल बा, आ ना ओह लाएक बेवहारे बा। बाकिर, जग-परोजने बिधि-बेवहार त मनावले जाता। ना

www.bhojpurisahityangan.com

त अबके बरियात में केहू हाथी-घोड़ा ले आवऽता ? 'बनल' लोगन के सवखो बा, त घोड़ा के जागहा टट्टू धउरऽ तारे स। तवनो प सङ वाला खेतन के मालिकन से कतना निहोरा करे के परऽता, ऊ आलगा। होने बरियात के लकम प जवन कहाओ कमे होखी। लइका के सँघतियन के कहे, लइकवे टुन्न हो जातारन स। अब हेह में "तमंचा प डिस्को.." होता त कवन बेजाईं बा ! रात भर बरियात ना उत्पात होता। ऊ एलजी के तड़तड़ी मराए लागऽता, जे समियाना के सूता-सूता छितर जाओ। बरियात के ना सान बा, ना मर्जादा। बाकी आजु के जवान एही में टुन्न बाड़े। तब के समय बरियात जनवासा में आवे त अस्थिराह होखते सवाल-जवाब के दौर चले। एक-से-एक सवाल आवऽ सऽ। अब ना ओइसन सवाल-पुछनिहारे रहि गइल बाड़े, आ ना केहू जवाब खातिर बइठते बा। कहाला जे, रावण के लंका में भौतिक सुख के पारावार ना रहे। धन के मद में लोग आन्हरे ना भइल रहले, मन-करम-बचन से राछछ भ गइल रहले। आजु के कवनो भोजपुरिहा बरियात देखि लीहीं, झट दे बुझा जाई जे लंका के ऊ समाज कइसन होखी आ कइसे बेवहार करत होखी !

बियाह के दोसर दिन हऽ। माड़ो में चारूओर से पर्दा आ साड़ी तनाइल बा। समधी बऽर हीत आ पाहुन सङे पाँति में बइठल बाड़े। टेङर बो के निकहा पूछ बा आजु। टटकारि के गारी गावे में उनकर जोड़ओ त नइखे। "देखो-देखो रे बिदौतिया तोर भसूर आवेले " भा "हाथी-हाथी सोर कइले गदहो ना ले आया रे .. तोरा.. " से सुरु भइल टेङर बो के टाँसी सुननिहारन के कान से धुआँ निकाल देला।

भोजन सुरु भइल। जीभि आ कान दूनो के आपन-आपन रऽस मीलि रहल बा ! मन निकहा मनसाइल भइल बा। हथेली भर के फुलवरा हाथहूँ ले ना ओड़ाओ, तनकी में फसकि जाये !

तले त मुक्ति बाबा खिसिया भरले। सोझ सिउजी के अवतार ! उठि गइले - "हम ना खाइब !" फुलवरा चभकत पाँति सन्न !

"काहें ए बाबा ? का भइल ?कुछऊ बोलऽब "

बाबा छछाते दुअरा अक्सर्हे खाटी पटा गइले। उपधियाजी आपन मूड़ी पटक देनीं उनका गोड़ प - "बड़का बाउजी रउआ दस जूता मार लेब हमरा कपार पऽ, जवन हमरा से कवनो बेजाईं भइल होई"

उपधियाजी के कतनो रिरियऽइला प बाबा काहें तनिको खँखारहूँ जासु।

"ए बाबा.. देखीं जी, बोलबो करऽबि" - सभ ओर से मनउवल होखे लागल।

"कुच्छु ना कुछऊ नइखे जा तूँ लोग पावऽ लोग.. एकदम्म से पँजरे नइखे आवे के " - चलत मान-मनउवल के आध घण्टा बाद राम-राम करत बाबा हुनुकले।

आ जवन ना हुनुकले जे सभ के सक्केदम बन भ गइल। माँड़ो में बइठला बीस-पचीस मिनट ले भ गइल रहे। बाकिर, बाबा के नाँवें अबहीं ले एगो गारी ना गवाइल रहे। मुक्ति बाबा एही प छनकि गइनीं - "हई अपमान ? अनेरिया हईं हम का रेऽ ? नाँव ले नइखन स देले हमार ? लइका के बाप के बड़का बाबूजी हईं.. कहि द सऽ अइसहीं इलाहाबाद नइखीं बसल"

छितेसर पधिया के जान में जान आइल। बाबा मनले। माड़ो में बान्हल धोती का पाछा से खलिहा टेङर बो से गारी गवावल गइल। सङे कवनो मेहरारू ना। टेङरो बो चुन-चुन के जवन ना रेघाइ-रेघाइ गारी गवली जे मुक्ति बाबा के दूनो कान हरियर हो गइलन स। कनखिये तिकवत काने-जीभे रस लेत मुक्ति बाबा प्रसन्न भ गइले ! बुढ़ऊ के 'माइण्ड के इण्डिया' जवन ना 'अप्प' भइल जे तीनि गो ले फुलवरा ऊपर से चाँप लिहनीं उहाँ का। पेट आ हाजमा बाद में देखाई !

सही कहल बा हर बिधि के आपन-आपन लालित्य बा ! आपन-आपन छोह हऽ। परम्परा आ बेवहार के महीनी हऽ ई कुल्हि ! बाकिर ईहो ओतने साँच बा जे सभ बड़ा तेजी से बिलाइल जा रहल बा ! कहवाँ रहि गइल बाड़े अपना गाँव-जवार में अब मुक्ति बाबा ? कहल बा जे, 'बहता पानी निर्मला, बन्धा गंदा होय'। लोक आ समाज बहते पानी हऽ। बाकिर, ई कवन बहाव हऽ ए रामजी !

कुल्हि चहल-पहल आजु चार-पाँच दिन में खतम भ गइल ! आइल लोग अब गइल लोग हो गइल बा। उपधियाजी के जिनिगी फेरु समरस हो गइल, जइसे रहे। फेरु उहे बात रे उहे बात !

छितेसर पधिया लोटा थमले ढाला प से आवत लउकले। बिसेसर हजाम गोड़ लगले - "बाबा कुल्हि निकहा निपटि गइल नू ? खूऽस बानी नू रउआ ?"

"ईहो कहे के बा बिसेसर!" बेरुकले कहत छितेसर पधिया बढ़त गइलन।

घरवा दूनो बूढ़ बेकतिये भर ले रहि गइल बाड़न। भाँय-भाँय करत खोंतवा एइजे बा, ओसहीं तिकवत। चिरई-पंछी, गूदी-फुरगुद्दी उड़ि गइली स। फेरु अगला कवनो परोजन में बिटुराए के दिन-घड़ी बनी। तले उपधियाजी आ उनकरा अस पीढ़ी के लोग ररेठा से दुआर प उधियाइल आइल पतई

गीत

शीतली बेयरिया हऽ अँचरा के छइयाँ,
गिनाई दुख आपन कवन- कवन सइयाँ

अँखिया में जादू, कजरिया में टोना
हमरा ना आवे करे कवनो चोन्हा,
बिरहा के मातल रहब एही ठइयाँ
गिनाई दुख...

गउवाँ नगर छुटल, बाबा अँगनइया,
सखिया सलेहरी आ सब पहुनइया,
चढ़ली जवनिया के रूत अँगरइया
गिनाई दुख...

जनी जा बिदेस सइयाँ घरही में रहऽ,
मिली जुली दुखऽ सुखऽ संगे-संगे सहऽ,
चहकी अँगनवा में अपनो चिरइया
गिनाई दुख...

शहर के ओरी का बढ़ाइले पउवाँ,
ओकरो से निक बाटे देखी आपन गउवाँ
खेत खरिहनिया में बाजे शहनइया
गिनाई दुख...

जौहर शाफियाबादी

जौहर शाफियाबादी जी शाफियाबाद शरीफ गोपालगंज , बिहार के रहे वाला हई। अपने भोजपुरी खाति सबसे पहिले 1970 में गोपालगंज अनुमंडलाधिकारी के सोझा अनशन कइले रहीं। भोजपुरी साहित्य के आँचर में हर विधा में सृजनरूपी खोइछाँ भरे में रउआ नेह-छोह से जुटल बानी। भोजपुरी में पहिला गजल महाकाव्य 'रंगमहल', ऐतिहासिक उपन्यास 'पुरबी के धाह', ललित निबंध संग्रह ,कबिरा खड़ा बाजार में, 'वेद और कुरान' सहित दर्जन भर बहुचर्चित कृति प्रकाशित भइल बा। वर्तमान में इहाँ के 'भोजपुरी व्याकरण' लिखे में पूर्ण मनोयोग से जुटल बानी।

कबीर दास

लेखक: देवेंद्र नाथ तिवारी

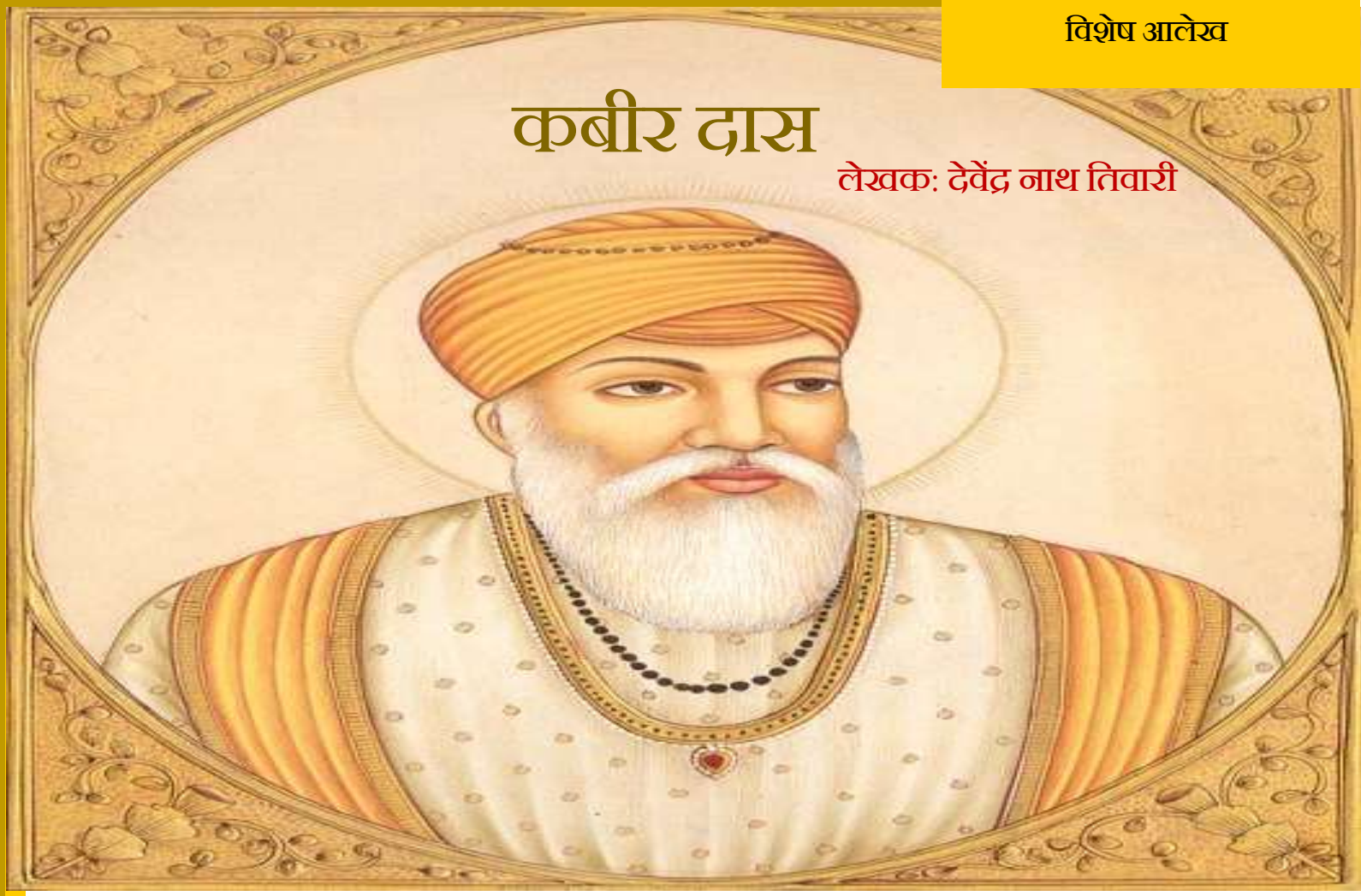

“ हमन है इश्क़ मस्ताना, हमन को होशियारी क्या,
रहें आजाद या जग में, हमन दुनिया से यारी क्या।

संत, साधु आ सन्यासी के परिभाषा देश, काल, समय के अनुसार बदलत रहेला। आम बोलचाल के भाषा में संत के मतलब जिनगी आ आचरण में पवित्रता, लोक मंगल के भावना, सहज-सरल रहन सहन, संतोष के भाव से भरल इंसान। केहु संत भक्तिमार्गी होखेला, केहु ज्ञानमार्गी, केहु हठयोगी, केहु में आत्मबोध अधिक रहेला, केहु परमात्मा के चिंतन में लागल रहेला। कबीर दास लोक संत रहनी आ इहे लोक कल्याण के भावना उँहा के लोक में रहे खाति प्रेरित कइलस। इहाँ इ बतावल जरूरी नइखे कि कबीर के भाषा भोजपुरी हऽ। उहाँ के स्वयं कहत बानी-

बोली हमरी पूरबी, हमें लखे नहीं कोय।
हमके तो सोई लखे, धुर पुरब का होय ।।

अगर ध्यान से देखीं तऽ इहाँ के जिनगी के सबसे बड़हन आदर्श सदाचरण से रहल आ समाज में फइलल कुरितियन, पाखंड के विरोध अउर सामाजिक समरसता के मजबूत कइल बा। कबीर बाबा ना फकीराना चोला धारण करत बानी, ना ढाढ़ी बढ़ावे ना जटा धारी बने के कोशिश करत बानी। कबीर बाबा के कहनाम बा-

मन ना रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा।
आसान मारि मंदिर में बईठे, ब्रह्म छाड़ी पूजन लागे पथरा ।।
कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौले, दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गइले बकरा ।।
जंगल जाइ जोगी धुनिया रमवलै, काम जराय जोगी होइ गइले हिजरा ।।
मथवा मुड़ाय जोगी कपरा रंगौलो, गीता बाँचि के होइ गइले लबरा ।।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, जम दरवजवा बाँधल जइबे पकरा ।।

ऊँहा के आपन कर्म (बुनकर) के साथे ईमानदारी से परम सत्ता से जुड़े के प्रयास करत बानी। साँच पूछीं तऽ कबीर के जिनगी के हर अंग में साधुता आ लोक मंगल के भाव भरल बा। ऊँहा के चमत्कार नइखी करत बाकि लोक में ज्ञान आ दर्शन के भाव आम लोगिन के बोली-वाणी में समझावे के राह पऽ

आगे बढ़त बानी-

बिन नैनन के सब जग देखे, लोचन अचते अंधा।
कहे कबीर कुछ समझिं परिहें, यह जग देख्या धंधा।।

अंतरमन के प्रेरणा से उन्मुक्त लौकिक चिंतन के प्रश्रय का बदौलत कबीर बाबा जवन सिरजनी ऊ युगबोध, जीवन दर्शन के आत्मसात करत मानवता आ विश्व कल्याण के उद्घोष बनल। जे जइसन देखल कबीर के साहित्य में ओइसने भाव मिलल। केहु के सूफी नजर अइनी, केहु के तत्त्वदर्शी, केहु के दार्शनिक, केहु के निरगुनिया। इहे कबीर के खासियत बा। बतौर बानगी हई निर्गुण गीत देखीं।

नैया नीचे नदिया डूबी ए नाथ जी, अब नइया में नदिया डूबी ।।

एक अचरज हम आउर देखली, कुइयाँ में लागल बाड़ी आगि।
पनिया भरि जरि कोइला हो गइल, अब सिधरी बुझावतऽ ताड़ी आगि ।।
नैया नीचे...
एक अचरज हम आउर देखली, बानर दुहे धेनु गाइ।
अजी दुधवा दुहि दुहि अपने खइले, घीउवाँ बनारस जाइ।।
नैया नीचे...
कुछ खइले कुछ भुँइया गिरवले, कुछ मुहवाँ में लपटाइ।
कहेले कबीर बचन के फेरा, ओरिया के पानी बड़ेरिया जाइ।।

आत्मअनुभूति सच्चा उपासना हऽ। कबीर बाबा के भीतर-भीतर अनहद राग बाजत बा। एह प्रेम प्रकाश के गहिर सागर खाली प्रकाश ज्ञान-प्रकाश से प्रकाशित बा। ऊँहा के खुद कहत बानी-

प्रेम के पिआला पिआइ के हो, गुरू देलें बउराइ।
बिरहा अगिनि तन तलफइ हो, जिय कुछ व सुहाइ।।

कबीर के भाषा : भोजपुरी

संतोष पटेल

ईसा के जनम एगो महत्वपूर्ण घटना ह जवन समय के दू हिस्सा में बाँट देलस, ईसा से पहिले (BC), आ ईसा के बाद (AD) इ एगो दुनिया के लमहर घटना बा। हम एही तरह (analogy) पर भारत के ख्यात भाषावैज्ञानिक डॉ राजेंद्र प्रसाद सिंह जी के भोजपुरी भाषा के लेके एगो प्रतिमान देख रहल बानी जवन कबीर के लेके बा। कबीर से पाहिले भोजपुरी आ कबीर के बाद भोजपुरी, इहाँ के आपन एगो शोध पुस्तक "भोजपुरी के आधुनिक भाषाशास्त्र" में भोजपुरी के निर्माण प्रकिया में कबीर के काल के विभाजक रेखा मानते दू गो बड़ा महत्वपूर्ण लेख लिखले बानी एगो "कबीर पूर्व भोजपुरी भाषा के निर्माण प्रक्रिया" जेकरा में बतावल बा कि भोजपुरी भाषा के कुछ आदिम सूत्र वेद में बा। ओकरा बाद डॉ सिंह के दुसर आलेख "कबीर के बाद भोजपुरी भाषा" में कबीर के भाषा भोजपुरी बतावल गईल बा संगे संगे निर्गुण सम्प्रदाय के धरम दास, धरनीदास, पलटू दास, दरियादास, सरभंग भा शिवनारायणी संप्रदाय के कवियन के कविता में भोजपुरी निखर के आईल बा।

डॉ राजेंद्र प्रसाद सिंह जी के अनुसार - भोजपुरी भाषा और साहित्य के इतिहास में कबीर वर्तन - बिंदु (turning point) हैं। इसलिए भोजपुरी भाषा और साहित्य का काल - विभाजन कबीर को केंद्र मानकर किया जाना चाहिए।

कबीर के भाषा पर विचार कइल जाव आ हमनी भाषा के अध्येता लोगन के उहाँ पर दिहल मत के अवलोकन कइला पर आउर उलझत चलि जाइब. सोझराये के जगह ओझराये के जादे उमेद बा ओकर कारन में भोजपुरी क्षेत्र के विद्वान लोग जादे बा, उहो हिंदी के विद्वान लो, जे खखार के कहे मे का जाने कांहे लजात बा लो कि कबीर के भाषा भोजपुरी हऽ।

कबीर के वाणी के संग्रह 'बीजक' कहाला. जेकर तीन गो भाग बा - रमैनी, सबद, आ साखी। एकरा बारे में सबसे पाहिले रउरा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचार देखि - सांप्रदायिक शिक्षा और सिद्धांत के उपदेश मुख्यत: साखी के भीतर है जो

दोहे में है. इसकी भाषा सधुक्कड़ी अर्थात राजस्थानी,पंजाबी मिली खड़ी बोली है, पर रमैनी और सबद के गाने के पद हैं जिनमे काव्य की ब्रज भाषा और कहीं कहीं पुरबी बोली का भी व्यवहार है (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ -75)

मामिला इहे से बिगड़त बा. कबीर दास के बानी के उहाँ के चेला आ कबीर पंथी संत लोग एकवट कइले बा एह में कवनो दू राय नइखे, पाठ भेद में अंतर एह लेखा बा की राजस्थानी कबीर पंथी, काशी-गोरखपुर, आ पंजाब के 'गुरु-ग्रन्थ साहिब' में कबीर के बानी अलग अलग भाषा में संकलित बा।

मसलन डॉ माता प्रसाद गुप्त आ डॉ पारसनाथ तिवारी राजस्थानी परम्परा में जोर दे रहल बा कि कबीर के भाषा राजस्थानी बा, डॉ रामकुमार वर्मा आ बाबूश्याम सुन्दर दास पंजाबी परम्परा में कबीर के 'बनियन' के भाषा संरचना के पाठ तय करे के आधार बनावल लो। बाकिर डॉ शुकदेव सिंह के सम्पादित 'बीजक' में अवधी, भोजपुरी भा पूर्वी प्रदेश के पाठ परम्परा के भाषा संरचना के दृष्टि से निर्णायक महत्व प्रदान कइल गइल बा।

इहे बात के Christian Lee Novetzke, आ Hawley लिखत बा - kabir's literary legacy grew into three major streams: the Eastern tradition, composed in areas of present-day Bihar and uttar pradesh, is preserved in the Bijak and represents a collection of verses sacred to the Kabir Panthis; the Sikh tradition records verses attributed to kabir in the Guru Granth Sahib, themselves culled from older manuscripts, especially the Goindval Pothis; and the western or Rajasthani tradition, where Kabiris on of the Dabu Panthi's lumanaries, remembered in the Pancavani and Sarvangi collections..... .. extracted from the book - Christian Lee Novetzke, " History, Bhakti and Public Memory, page-60, Permanent Black,2009.

अध्येता विद्वान डॉ शुकदेव सिंह के शोध एह दिसाई बड़ा प्रासंगिक बा उहाँ के लिखत बानी की –"कबीर पंथ में महत्वपूर्ण 'भगताही पंथ ' के संस्थापक भगवान गोसाई कबीर के वचनों को लिपिबद्ध करने का यथासंभव प्रयास किया कबीर के रमैनी, सबदी, साखी, और सबदी के विभिन्न रूपों यथा - चांचरि, वेली, विरहुली, चौंतीसा, इत्यादि को भी भगवान गोस्वामी ने ही लिपिबद्ध किया और उन्होंने इस ग्रन्थ-गुटिका का नाम 'बीजक' रखा। बीजक यानि मूल मन्त्र, बीजक अर्थात कबीर के अनेक प्रकार के कथनों का तारतम्यबद्ध निश्चित प्रकार के केन्द्रीय विचारों से अभिप्रेरित उक्तियों का संग्रह। भगवान् गोसाई का 'बीजक' धीरे धीरे कबीर का प्रतीक बन गया (भगताही पंथ: वृत्त, संत कबीर और भगताही पंथ, डॉ शुकदेव सिंह, विश्वविदयालय प्रकाशन, पृष्ठ-5) एही किताब में डॉ साहेब कबीर के नाता चंपारण से जोडत बानी। कबीर के चंपारण कनेक्शन देखीं –

Champaran is known for the experiment with truth and non-violence of Mahatama Gandhi year back in 1917 but is also the first preaching place of Saint Kabir. Chatia- Barharwa, the first preaching place of the great sanit is 10 km away from Areraj, a subdivision under East Champaran district where the first Math of the Firke-Bhaktahi branch of kabir panth was established year back in 1577.(The Hindustan Times, Patna, Thursday, November 27, 1997)

भासा के स्तर पर हमनी के कबीर बाबा के ऊपर भाषाशास्त्रीय लोगन के विचार के अवलोकन कइल जरुरी बा

संतोष पटेल

बेतिया, पश्चिम चंपारण, बिहार के रहे वाला संतोष पटेल जी , रिसर्च स्कॉलर (भोजपुरी), हई , यूजीसी नेट क्वालिफाइड, एम ए, एमफिल के संगे संगे सिनिअर डिप्लोमा - गायन (संगीत) मे , संपादक - भोजपुरी ज़िन्दगी, सह संपादक - पपुर्वांकुर, (हिंदी - भोजपुरी), साहित्यिक संपादक - डिफेंडर (हिंदी- इंग्लिश- हिंदी), रियल वाच (हिंदी), उपासना समय (हिंदी), हई । कई गो भोजपुरी आ हिन्दी किताब लिख चुकल बानी , कुछ शोध परक भोजपुरी किताब प्रकाशन मे बडुवे

सबसे पहिले देखल जाउ कि डॉ सुनीति कुमार चटर्जी का लिखत बानी बाबा कबीर के भाषा पर –

" Kabir was an inhabitant of the Bhojpuriya tract, but following the practice of the Hindustani poets of the times, he generally used Braj-Bhakha and occasionally Awadhi. His Braj-Bhakti at times, betrays an eatern-Bhojpuriyan from here and there, and when he employs his own Bhojpuriyan dialect, Braj-Bhakha and western forms show themselves.(p-68, भोजपुरी भाषा का इतिहास, रास बिहारी पाण्डेय)

सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ सुनीति कुमार चटर्जी भोजपुरी भाषा के सम्बन्ध में लिखे के क्रम में लिखले बानी कि कबीर के पद भोजपुरी भाषा में लिखल बा -जइसे –

1.कनवा फराई जोगी जटवा बढ़वले,
2.सुतल रहलौं में नीर भरि हो
3.बाबा घरे रहलू त बबूई कहइलू
4.का ले जइबो प्रीतम घर अइबो

(साभार - ओ एंड डे बंगाली ऑफ़ लिटरेचर, भाग-1, डॉ सुनीति कुमार चटर्जी, साभार- संतकवि कबीर की भाषा - डॉ जयकांत सिंह जय)

ओही लेखा डॉ उदय नारायण तिवारी जी, (भोजपुरी भाषा और साहित्य के पेज -254-57 में) तक़रीबन चार पदन के चर्चा कइले बानी जवन निचे दिहल बा –

1. कौन ठगवा नगरिया लुटल हो
2.तोर हीरा हिराइल बा कीचड़े में
3. सूतल रहूं मैं नीद भरि हो, गुरु दिहलें जगाई
4.अपने पिया की मैं होइबो सोहागिनि

एकरा बाद उहाँ के वेल्वेडियर प्रेस से प्रकाशित 'कबीर साहेब के शब्दावली' के चर्चा कइले बानी जहाँ से ऊपर दिहल कविता लिहल गइल बा एह पदन के भाषा भोजपुरी बा जबकि कहीं कहीं अवधी के पुट बा। डा॰ उदय नारायण तिवारी मानत बानी - वास्तव में कबीर की मातृभाषा बनारसी बोली थी, जो भोजपुरी का ही एक रूप है। प्राचीन काल में, आज ही की भांति, इस बोली का कोई साहित्यिक महत्व न था, अतएव जब कबीर की प्रसिद्धी हुई तो उनके पदों को पछाह की साहित्यिक भाषाओँ में रूपान्तर आवश्यक था। (पृष्ठ -256, वही)

डॉ मैनेजर पाण्डेय 'भोजपुरी के आदि कवि : कबीर, आलेख में कहत बानी-

" कबीर दास भोजपुरी के कवि रहीं। एक बात के कइगो आधार बा. पूरा भक्ति आन्दोलन संस्कृत के खिलाफ मातृभाषा में सृजन के आन्दोलन रहे,भक्तिकाल के सब संत अपना - अपना मातृभाषा में आपन आपन बात कहल । इ अखिल भारतीय आन्दोलन रहे"

(पेज- ४, भोजपुरी के आदि कवि कबीर)

एही बात के कबीर बाबा क इसे लिखत बानी-

संस्कीरत है कूप जल भाखा कहता नीर
तन मन को सीतल करे निरमल करे सरीर

बकौल डॉ पाण्डेय, कबीर बाबा कहत बानी - बानी मोर पुरबी ... एकर मतलब भइल की कबीर के कविता भोजपुरी के कविता ह। अइसन नइखे की श्यामसुन्दर दास आ रामचंद्र शुक्ल के सोझा भोजपुरी के रूप ना रहे बाकिर उहाँ सभे भोजपुरी के साफ़ -साफ़ उल्लेख करे के बदले ओकरा के बिहारी भा फेर पुरबी बोल कह के आपन असमंजस पाठक के सौंप दिहली आ ओह सभे के भ्रम में डलली।

डॉ अनिल कुमार आंजनेय भोजपुरी अकादमी, बिहार से प्रकाशित पुस्तक 'विचारबंध' में एगो सवाल खड़ा कइले बानी हिंदी के महंत संपादक लोगन से –

" बोली हमरी पूरब की, हमें लखे ना कोय,
हमको तो सोई लखे जो धुर पूरब का होय"

एह साखी के देनिहार कबीरो का भाषा पर ले भोजपुरी के भभूत झारी के खरखरात पछिमहा रंग देबे के अनरथ कइल। एह लोग के बउसाव चले त खांटी पुरुबिहा संत शिवनारायण स्वामी, गुलाल साहेब, भीखा साहेब, धरनी दास आदि के भी खड़ीबोली के पहाड़ा पढ़ा देउ"(पृष्ठ -9)

मूल्यांकन -

प्रो॰ गदाधर सिंह ' भोजपुरी साहित्य के इतिहास' में कबीर के भाषा पर लिखत बानी कि- कबीर के भाषा पर एने खूब विचार हो रहल बा आ प्रत्येक विचारक क्षेत्रीय दृष्टिकोण के आधार पर कबीर के भाषा पर विचार क रहल बाड़ें. जइसे आज तक कवनों इतिहास व्यक्ति-निरपेक्ष हो के नइखे लिखाइल, ओसही कबीर आ कबीर- साहित्य पर निरपेक्ष दृष्टि से विचार करे के केहू साहस प्रदर्शित नइखे कइले कबीर कहतारे की जे आपन घर पहिले जारे, उ हमरा साथे चले, बाकिर एहिजा स्थिति ई बा कि कबीर के लुकाठी से दोसरे के घर जारे में सभे तत्पर बा, आपन घर ना." (पृष्ठ - 214, संत सम्प्रदाय के कवि)

कबीर वाड्मय (खंड-१,पृष्ठ -16 पर) तीन खंड में प्रकाशित भइल. एकर संपादक द्वय डॉ जयदेव सिंह आ डॉ वासुदेव सिंह बानी. संपादक द्वय कबीर के भाषा-स्वरूप प नया ढंग से विचार कइले बानी सभे.-

"चूँकि रमैनी के पाठालोचन में शुकदेव सिंह एह निष्कर्ष पर पहुचल बानी कि कबीर के भाषा के मूल ढांचा अवधी आ भोजपुरी पर पडल बा एही से कबीर वाड्मय के संपादक द्वय साखी आ सबद के पद में पंजाबी आ राजस्थानी के प्रयोग के असंगत मानत बा लोग। संपादक द्वय के मोताबिक कबीर के स्वभाविक भाषा पंजाबी आ राजस्थानी ना भोजपुरी आ अवधी रहे।

इहाँ ई बतावल जाएज बा कि डॉ कृष्णदेव उपाध्याय 'भोजपुरी साहित्य' के इतिहास में, रासबिहारी पाण्डेय 'भोजपुरी भाषा के इतिहास में, नागेन्द्र प्रसाद सिंह ' भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास में कबीर के भाषा भोजपुरी बतवले बानी।

निष्कर्ष :-

प्रो गदाधर सिंह के 'कबीर के भाषा' दिहल विश्लेषण देखि आ तय करीं -

" कबीर के समय में राजस्थान में डिंगल साहित्य के भाषा रहे। ब्रज भाषा के पिंगल कहल जात रहे, बाकिर एकर प्रचार ओह घरी अतना ना रहे, जतना अष्टछाप कवि लोगन के समय में भइल. दिल्ली में हिन्दवी रहे, दक्कनी में हैदरावाद, दौलताबाद, आ गुलमर्ग में भी रहे, एकर दक्कनी हिंदी नाम रहे, एकरा अतिरिक्त अवधी आ भोजपुरी के क्षेत्र रहे, भोजपुरी बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य परदेश के कुछ जिलन आ नागपुरिया के नाम से झारखण्ड के कुछ जिला में बोलल जात रहे. कबीर के काशी क्षेत्र ह, विद्यापति मिथिला में, सिद्ध लोग मगध में, आ नाथ पंथ के गोरख नाथ के गोरखपुर भोजपुरी क्षेत्र रहे. अवधी आ भोजपुरी में उतना समानता बा कि जरा सा बदवाल क देला पर दुनों में कवनो अंतर ना रहि जाई, ... अब सवाल बा कबीर के मूल भाषा का हो सकेला?(भोजपुरी भाषा के इतिहास,पेज -217)

प्रो॰ सिंह लिखत बानी - " जइसे भगवान बुद्ध के वचन मगधी में रहे, बाकिर बाद में चलि के ओह भाषा के मध्यदेश के भाषा पालि के ढांचा में ढाल दिहल गईल, ओसहीं कबीर के भाषा मूलत: बनारसी भोजपुरी रहे बाद में उनकर शिष्य लोग ओकरा के कइ रंग में रंग देहल। नागरी प्रचारिणी सभा के संस्करण में पंजाबी आ राजस्थानी के प्रभाव बहुत बा, बाकिर यदि ठीक नजर गड़ा के जांच कइल जाव, ओकर असली जाति के पहचान हो जाई। ओह में भोजपुरी के संज्ञा शब्द मिलिए जाई क्रिया पद भी आपन मूल रूप में भेंटा जाई.(पृष्ठ- 218) आ कबीर काशी के रहेवाला रहीं बनारस के बोली मूलत: भोजपुरी बा आ एही से कबीर एही बोली में आपन बात कहले होखब।

निष्कर्ष इहे बा कि हमनी कुछ लोगन के विचार देखीं कि उहाँ सभे कबीर के भाषा के का कहत बानी। रेवडेंट अहमद शाह, विचार दास जी के साथे हमनी जा सकिला कि कबीर के भाषा क्रमश: बनारस, मिर्जापुर आ गोरखपुर के आसपास के बोली ह, आ प्राचीन पूर्वी ह, पंडित परशुराम द्विदेवी के मत कबीर के भाषा में पूर्वी हिंदी(भोजपुरी) भी बा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवदी कबीर पुस्तक में कबीर के पद संकलित कइले बानी। आ भाषा में भोजपुरी के अधिकता बतवले बानी। कुल विन्दुअन के देखला के बाद – कबीर साहेब बनारस के रहीं आ इ बात सभे जानेला कि बनारस के बोली भोजपुरी हीयs. एही से कबीर के भोजपुरी के आदिकवि स्वीकार कइल जाला।

सूरीनाम में हिंदुस्तानी प्रवासन के कहानी

चान .ई.एस. चुन्नी

भोजपुरी अनुवाद : शशिरंजन मिश्र

सन 1873 से 1916 के बीच लगभग 34,000 गिरमिटिया मजदूर भारत से सूरीनाम गईले । कलकत्ता से 64 जहाज जवना में एगो जहाज के नाम “लाला रूख” रहे, गिरमिटिया मजदूरन के लेके सूरीनाम रवाना भईल । अलग अलग प्रांत के लोग जब सूरीनाम पहुंचल त अपना के हिंदोस्तानी कहलस । लगभग 3000 हिंदोस्तानी लोगन के मोहल्ला अगल बगल बनल । इहे लोग आज सूरीनामी हिंदोस्तानी कहाला ।

सूरीनाम पहिले डच लोगन के निवास रहे आ एह लोग के खेतीबारी, जेह में चीनी(ऊख), कौफ़ी ,रूई के खेती खातिर मजदूरन के जरूरत रहे । एहिजा दिहाड़ी मजूरी के भाव आदमी पे 12 आना आ मेहरारू लोग के 8 आना मिलत रहे , उहे जवन भारत में 1-2 आना दिहाड़ी मजूरी रहे । एकरा अलावे आवे जाये खातिर गाड़ी के साधन, कपड़ा, खाना, घर, इलाज आ दवाई के वेवस्था करीब 2-3 महिना ले मुफ्त रहे, जवन पाँच साल के बेगार के एवज में रहे । एकरा खातिर एगो समझौता (एग्रीमेंट) बनवाल गइल, आ जे भी एह एग्रीमेंट से सूरीनाम आइल उहे लोग गिरमिटिया कहाईल । हालांकि, पाँच साल के बाद उ लोग चाहे त भारत आ सकत रहे भा सूरीनाम में बस सकत रहे । करीब 12,000 लोग भारत लवट गइल बाकी अधिका लोग सूरीनाम मे बस गईले, एह लोग के करीब 2 -5 एकड़ जमीन जीवन यापन करे खातिर मिलल । ई लोग एहिजा छोट किसान बन गईले ।

बाकी जे लोग लवट के भारत आइल उ लोग जमींदारन के अत्याचार, भेदभाव आ विधवा लोगन के स्थिति, गरीबी आ

प्रोफेसर चान इ०एस० चुन्नी

प्रोफेसर चान० ई०एस० चुन्नी (पारामारीबो, 1953) जी “हिंदोस्तानी प्रवासन इतिहास आउर भारतीय डायस्पोरा” के प्रोफेसर बानी। इंहा के नीदरलैंड के फ्री एमस्टर्डम यूनिवर्सिटी में लाला रूख के पोस्ट पे बानी ।

विकास के बाधित राह देखि के गिरमिटिया मजदूर फेर से भारत छोड़ देले। एकरा खातिर अंगरेजन के राजकाज, एहिजा के प्राकृतिक प्रकोप जईसन ढेर कारण बनल जेकरा कारण उ लोग फेर से गिरमिटिया मजूर बने के आ फेर से विदेश में बसे खातिर आपन कदम बढ़ा दिहले।

हिंदोस्तानी समाज के निर्माण

हमनी के ध्यान देवे के चाहीं की जे भी गिरमिटिया मजदूर भारत आइल ओह में लगभग सत्तर प्रतिशत लोग 16 से 35 साल के रहे। ओहु में लगभग दू तिहाई लोग 20-30 साल के रहे , कुछे लोग 40 साल आ कुछ ऊमीरदराज (2%) रहे जबकि एक चौथाई लोग 20 साल के नीचे रहे। परदेस में एक दोसरा के सहारा बने खातिर एह गिरमिटिया लोगन के बीच भर्ती के बाद आपसी आत्मीयता बनल। जहाज़ी भाई-बहिन, डिपो भाई-बहिन जईसन जमात में लोग आपसी प्रेमभाव से एकजुट भईले। एह गिरमिटिया समूह में अधिका लोग अकेले ही रहे जे सूरीनाम के बागान में एक एक गाँव एक देस के बन के सिर्फ हिंदोस्तानी रहे। ओह घरी गाँव के नाता निभावल बहुत जरूरी रहे। आपन गाँव जवार के तरह एहिजा भी ग्राम पंचायत के नैतिक मूल्य राखल गइल। उदाहरण खाति अगर गाँव के केहु कुछ अनैतिक काम कईले होखे , जईसे गाँव के लईकी के साथे बदसलूकी कईले होखे ओह के गाँव से निकाल दियाई आ उ कुजात हो जायी। सजा के भी व्यवस्था भईल कि अईसन आरोपी के कुछ जुर्माना भी लगावे के व्यवस्था कइल गइल। ईसाई समाज के छुट्टी के बीच हिन्दू आउर मुसलमान लोगन खाति भी परब त्योहार के छुट्टी राखल गइल। हिन्दू के 32 आ मुसलमान के 16 धार्मिक छुट्टी राखल गइल। समाज छोट रहे आ सब धरम के लोग मिलल जुलल रहे एह से सब परब त्योहार साथे मनावल जात रहे। फगुआ, दिवाली, भागवत, मुहर्रम सब साथे मनावल गइल।

चूंकि धार्मिक आधार पे इ समूह बहुत छोट रहे एह से हिन्दू आ मुसलमान के बीच भी बियाह के भी मान्यता दियाईल। रीति रिवाज निभावे खाति परिवार के जरूरत होला, एह से भाई आ बहिन के रूप में परिवार में शामिल कर लियाईल। छोट लईकन आ अनाथन के निःसंतान भागीदार लोग स्वीकार कर लेले आ एह तरह से हिंदोस्तानी समाज बनल।

एह गिरमिटिया समाज में ओह घरी एक भरी कमी इ रहे कि औरत मरद के अनुपात विसम रहे जे एह लोग के परिवार बनावे में बड़का बाधा रहे। जे लोग सूरीनाम आइल रहे ओहमें मरद के संख्या 23,405(70%) आ मेहरारू के संख्या 10,232 (30%) रहे। 100 मरद के तुलना मे 40 महिला के अनुपात पारिवारिक आवश्यकता के हिसाब से सही ना रहे। लईका सभ में संख्या (कुल 4,360, 13%) के हिसाब से लिंगानुपात लगभग सही (2458 लईका, 902 लाईकी) रहे। हिंदोस्तानी महिला के कमी आ हिंदोस्तानी समाज से बाहर शादी आ यौन संबंध के घृणा के रूप में देखल भी हिंदोस्तानी महिला के स्थिति मजबूत कईलस। महिला लोगन में आधा वयस्क महिला लोग शादीशुदा रहे। एकल आ विधवा-विधुर लोग जाड़े ज़िंदादिल आ मुखर रहले लोग। सूरीनाम आके उ लोग जादे स्वतंत्र हो गइल। आपन साथी चुने के आजादी के साथे अदला बदली के भी स्वतन्त्रता मिलल। एही समाज में बहूसाथी (पति) प्रथा भी स्वीकार कर लेवल गइल। एकरा अलावे लईकी लोगन के भी स्थिति मजबूत रहे, बियाह करे खातिर पईसा (दहेज/मेहर) भी दियात रहे।

एकर कारण इ भी बनल कि सूरीनाम आवे वाला लोग अधिकांश मजदूर लोग पश्चिम बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेश के रहे एह से एक तरह के रीति रिवाज के बंचावल आसान रहे। हिन्दी, भोजपुरी आ अवधी बोलेवाला समाज में आगे चलके मिलल जुलल आ बदलल रूप सरनामी हिन्दी बनल। बहुते हिंदोस्तानी लोग विदेशीभाषा के आसान रूप सरनाम टोंगों आ बाद में कठिन डच के भी सीख लेलस लोग। इ सरनामी हिन्दी आजों सूरीनाम में फलत फुलत बा बाकी एकर एही समाज जे गुयाना आउर त्रिनिदाद में बसल रहे, ओहिजा एकर रूप फीका पड़े लागल बा।

लगभग 16% लोग के जान के नुकसान रोग से, पानी में डूबे से आ बागान प्रबंधन के शोषण आ अत्याचार से भईल। बाकी जे लोग बाँच गईले उनका लोग के मेहनत, कमख़र्च आ शांतिप्रियता के कारण धीरे धीरे उ लोग सम्पन्न हो गइल। पहिले छोट किसान आ बाद में व्यवसायी बनले। 1950 के दशक के बाद एहिजा शिक्षा के स्तर में भी सुधार भईल आ लोग समाज के हरेक क्षेत्र में प्रतिनिधित्व करे लगलें। 1930 के दसक में इ लोग आपन समाज के जनसंख्या वृद्धि पे ध्यान देवे के शुरू कईल आ एकर नतीजा लिंगानुपात के सुधारे में काम आइल। इंहा तक कि बुढ़ मरद आ जवान मेहरारू के बियाह भईल (बुढ़वा हे घरे- जब कवनों मेहरारू आपन मरद के सूचित करे त अईसहीं पुछे)। इ लोग विधवा जब विधवा हो जात रहे त “पुनर्विवाह भा अकेले” रहे इ चुने के आजादी रहे। 1940-1970 के बीच हिंदोस्तानी मेहरारू लोग बहुते संतान

उत्पन्न कईलस। कबो कबो दस से भी ऊपर। हमार मौसी के ही उन्नीस बाल-बच्चा रहे आ सभे स्वस्थ रहे। एकर कारण सभे के उचित पोषण आहार मिलल। उपजाऊ जमीन के पैदावार, मछली, दाल-भात आ सब्जी जईसन स्वस्थ आहार खूब मिलत रहे।

1970 तक हिंदोस्तानी समाज के आबादी सूरीनाम के मूल निवासी क्रीओल से ज्यादा हो गइल। बहुत से हिंदोस्तानी शिक्षा में ऊंचा स्थान ले ले आ बहुते लोग देस के राजधानी पारामारीबो भी पहुंचल जहां क्रीओल लोग के बहुतायत रहे। 1969-1973 के बीच हिंदोस्तानी समाज सूरीनाम के सत्ता भी हासिल कर लेलस। हालांकि क्रीओल लोग एकरा के आपन अस्तित्व खातिर खतरा बुझल आ फेर कुछ जातीय ध्रुवीकरण भी भईल। 1973 में क्रीओल लोग के पार्टी बहुत कम अंतर से चुनाव जीतल। क्रीओल नेता आ प्रधानमंत्री के घोषणा आइल कि दू साल के भीतर सूरीनाम के नीदरलैंड से आजादी मिल जायी। सूरीनाम के हिंदोस्तानी समाज नीदरलैंड के रायल किंग्डम में अपना के सुरक्षित मानत रहे। एही कारण से ढेर लोग के डच नागरिकता भी रहे। एह घोषणा के बाद ढेर हिंदोस्तानी लोग अपना के सूरीनाम में असुरक्षित महसूस कईल आ नीदरलैंड बसे के तैयारी में लाग गइल। मध्यवर्गीय परिवार आपन जमीन संपत्ति के बहुत कम दाम में बेच के भा जेकर सूरीनाम में आपन परिवार बांचल ओकरा के दान कर के नीदरलैंड में बस गइल। ढेर लोग खाति इ बहुत दर्दनाक अनुभव रहे, 100 बरिस के भीतर दु पीढ़ी के बीच दूसरा बार विस्थापन आ प्रवासी बनल।

नीदरलैंड में फेर से हिंदोस्तानी समाज के पुनर्गठन कईल गइल। फेर से संस्कृति निखरल आ नीदरलैंड के संस्कृति के साथे घुलमिल के एक हो गइल। भारतीय सिनेमा के बढ़त प्रभाव आ संचार माध्यम (उपग्रह टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइल फोन) प्रवासी भारतीय से एह समाज के पहचान बनावे आ बरकरार राखे में मदद मिलल। ढेर लोग आपन जड़ के खोज करे बिहार आ उत्तरप्रदेश दौरा कइले। इ लोग अपना के भारत से जुड़ल महसूस त करेला बाकी एक पारिवारिक रिश्तावाला कड़ी नईखे बनल। इ लोग भारत में जाती,समाज आ रंगरूप से जुड़ल भेदभाव के कारण अपना के असहज महसूस करेला।

एही बीच 1980 में, सूरीनाम के शासन व्यवस्था मिलिट्री के जिम्मे आइल आ 1987 में फेर से लोकतन्त्र बहाल कईल गइल। एह बार क्रीओल, हिंदोस्तानी, आ आउर समाज के लोग के बीच सत्ता के बंटवारा कईल गइल। सूरीनाम के आबादी करीब आधा लाख के बा आ अब जातीय संबंध सौहार्दपूर्ण बा। हिंदोस्तानी आजों बड़हन समाज बा आ एहिजा हिंदोस्तानी संस्कृति के जिंदा रखले बा। अब इ लोग नीदरलैंड आ हिंदुस्तान के समाज मे रिश्ता बना रहल बा। हिंदुस्तान पैतृक भूमि ह एहिजा से सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक जुड़ाव बहुत महत्वपूर्ण बा। खास करके नृत्य-संगीत आउर कला के आदान-प्रदान खातिर।

कुल मिला के गिरमिटिया मज़दूरन के प्रवासी भारतीय बनला के आ एक नया सामाजिक संस्कृति के बनावे आ बढ़ावे के इ अद्भुत कहानी बा। जेह में इ लोग आपन सभ्यता आ संस्कृति के विषम परिस्थिति में भी बँचा के राखल। आज सूरीनाम में 300,000 से भी अधिका सूरीनामी हिंदोस्तानी रहेलें। नीदरलैंड के कुल डच आबादी के 1 % लोग (175,000, 2013 के गणना) प्रवासी भारतीय समाज के हिस्सा बाड़ें।

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव

1. आपन गउवां

घन बसवरिया बीया पीपर आ बर बा।
अइहS ए जुम्मन चाचा ओइजे हमार घर बा।।

तलवा तलइया के का करीं बड़इया
बहुते नीमन लागे करमी लेड़इया
पूछते पुछत चाचा चलि आइब रउआ
गउँवा के पुरूब बरम जी के चउरा
आम अमरूधिया कटहर बड़हर बा
अइह ए जुम्मन चाचा...

बीया मसजिदिया शिवाला बाटे भारी
मौलवी अजान पूजा करेले पुजारी
पंडी जी धोबी के चाचा कहि बोलावेले
बाबू साहेब सबका से दोस्ती चलावेले
लागल खड़न्जा पगडंडी डहर बा
अइहS ए जुम्मन चाचा...

गउँवे में भूत बाड़े गउँवे में सोखा
बिगरल बनावेलन सनिचरी के कोखा
होखेला झगरवा तऽ पंच फरिआवेले
धुरी बाबा मन के मइलिया मेटावेले
टीबुल सरकारी बाटे अवरी नहर बा
अइहS ए जुम्मन चाचा...

केहुवे जे मुवेला तऽ छोड़ी हरवाही
सब केहु एके साथे जाला परवाही
ईदिया का दिने हिंदु खाले जाक संग में
फगुआ के दिने मुसलिम रंग जाले रंग में
बाड़ा मनसायन लागे कुछु के ना डर बा
अइहS ए जुम्मन चाचा...

भोरहीं में निर्गुन गावे शिवजी गोसाईं
चकरी चलावेली कलावती के माई
कुछऊ जो घटेली तऽ मिल जाला पइँचा
अइब त मिली जाई भाव के गलइचा
सतुआ खिआइबि तोहके नाही लगहर बा
अइहS ए जुम्मन चाचा...

2. गाँव गीत

परती परास अकरौटा आ भीटा,
कहीं कहीं लउके ले रेही रे मोरा,
गउँवा के लमहर सरेही रे मोरा।।

घुरहू के खेतवा में बड़े-बड़े ढेला
फोरे ले लई के कुदार
पलटू जी आलू के मेढ़ा लगावे
हांके ले हरवा केदार
बीच खरिहनवा में धनवा पीटाला
उड़ी-उड़ी पड़े ले खेही रे मोरा।।

काका के भइँसिया डबरवा में हीरे
पड़िया चोन्हा ले मकनाय
चनर भइया चरावे ले गइया
एड़िया में फाटल बा बेवाय
दोबरल धोति फटहवा बा कुरता
घमवा में जरे ले देही रे मोरा।।

साँझ होते सिवाने में बोले ला सियरा
रहि रहि जियरा डेराय
मोरा गउँवा में लागल बाटे भाठा
भोरे-भोरे इँटवा पथाय
पतरू के पुअरा में पिलियन के डेरा
पिलवन से सनेह री मोरा।।

मोरा गउँवा में बरम बाबा बाड़े
चारों ओर बाटे परतियान
पांडे पीपर तर बइठ के पढावँसु
लरिकन के दे ले गियान
दू दूगो बड़ुवे सिवाला ए भइया
दूर से लउके सरेहि रे मोरा।।

कहे ले गोबर्धन कवि भोजपुरिया
सून तनि धइ के धियान
गड़ही के तीरे बसल हम बानी
मटिये के बड़ुवे मकान
सतुआ के लबरी मलाई से बढ़ि के
कबो-कबो मिले परेहि रे मोरा।।

गोबर्धन 'भोजपुरी :

एकवारी जिला बलिया के रहनियार गोबर्धन 'भोजपुरी' जी के मन गीत, कविता, नाटक लेखन आ मंच से काव्य पाठ अउर नाटकन में अभिनय करे में विशेष लागेला। इहाँ के रामायण आ महाभारत के भोजपुरी पद्यानुवाद कइले बानी। अपने के रचना पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित होत रहेला। भोजपुरी के सेवा खाति इहाँ के कई गो साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था सम्मानित कइले बाड़ी स। (संदर्भ : अँजुरी भर फूल , भोजपुरी संस्थान, इंद्रपुरी, पटना)

करे अगवानी

- फतेहचंद बेचैन

करे अगवानी कोइल बगिया में गाइके
भौंरा गुनगुनाये डाली फूलवन प जाइके

रहिया बोहारेली बसंती ई बयरिया
सरसों सँवारे पीयर चदरा बिछाई के

गेहूँवा के बलिया करेला अठखेलिया
तीसीया मगन नीला गोटवा लगाइके

सपना में पिया जब लउके आधी रतिया
तन-मन जरावे विरहिन के जगाइके

मस्ती में गावे सभे गाँव के छोकरवा
ढोल, मृदंग, झाँज अउरी डफरा बजाइके

मोहक सुगंधवा से भरि दिहले बगिया
अमवा के मोजरा से रस बरसाइके

फ़तेह चंद 'बेचैन'

गाँव डूहा, जिला बलिया के रहे वाला फतेहचंद 'बेचैन' जी मुक्तक, गजल, हास्य व्यंग्य कविता, कहानी, गीत आ निबंध लेखन खाति जानल पहिचानल जानी। भोजपुरी के उत्थान खाति सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था सन के साथे काम करे के अनुभव। साहित्य सेवा खातिर साहित्यिक -सांस्कृतिक संस्था सन से सम्मान प्राप्त।

संदर्भ : 'अँजुरी भर फूल', भोजपुरी संस्थान, इंद्रपुरी, पटना

भोजपुरी लोकगीत: गाँव आ लोक जीवन

भोजपुरी लोक साहित्य अपना प्राचीनता आ विस्तृत-व्यापक क्षेत्र खाति जानल-मानल जाला। एकरा गर्भविभा में एह क्षेत्र में सभ्यता-संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास-भूगोल का साथे जवन बरियार, समृद्ध लोक संस्कार आ लोक परंपरा के भण्डार मिलेला ऊ साइते कवनो दूसर भाषा साहित्य में भेंटाव।

भाषाविद् आ भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान आ गंभीर अध्ययन के कसौटी प चढ़ के ई भोजपुरिया लोक साहित्य अपना कतना रूप लोककथा, लोकगाथा आ लोगगीत आदि भिन्न-भिन्न परंपरा आ श्रेणियन में विभक्त भइल। जवन अपना भीतर विभिन्न कोटियन में वर्गीकृत बा। भोजपुरी लोकगीत के वोही परंपरा के विशिष्ट आ महत्त्वपूर्ण कड़ी मानल जाला।

कवनो भाषा के लोक साहित्य में लोकगीत के आपन विशेष परंपरा होला। जवन अपना गेय लोक साहित्य के प्रस्तुति के चलते जानल जाला। लोकगीतन में मानव जीवन के यथार्थ, सहज-सरल आ स्वाभाविक प्रवृतियन के संपूर्ण बखान होला। जवन सदियन से मानव जीवन के सभ्यता, संस्कृति रूपी दस्तावेज अपना भीतर सवरले सजवले पीढ़ी दर पीढ़ी लोक संसार के भेंटत गइल । लोक साहित्य में लोक संस्कृति के वर्णन मिलेला। जवन मानव समाज के पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ ऐतिहासिक संदर्भन के समावेश होला। जवना के व्यापक प्रभाव मन-मस्तिष्क के स्थाई रूप से प्रभावित करे में सहायक होला।

लोकगीत खाति अंग्रेजी में Folk Song शब्द के व्यवहार होला। चैंबर्स डिक्शनरी में एकर अर्थ बतावल गइल बा ' Any song or ballad originating among the people traditionally handed down by them' मतलब अइसन गीत जवना के उद्गार आ उदगम लोक में भइल आ ऊ परंपरागत रूप में मिलत गइल। लोक शब्द के जन समुदाय, संसार, दुनिया-जहान सामान्य जनता का अर्थ में जानल जाला। लोकगीत वोही समान्य आ जनता के विद्वान विचारन के गेय रूप होला। लोकगीत का विषय में पाश्चात्य विद्वान राल्फ विलियम के मत बा, लोकगीत वोह मूल वृक्ष के तरह होला जवना के जड़ भूतकाल में स्थिर होला आ जवना में नया नया शाखा फूटत रहेला। त विद्वान लेखक मैक्सिम गोर्की एकरा के 'सामुहिक प्रेरणा के प्रबलतम स्रोत मनले बाड़न।

अगर गाँवन से पलायन के रोके के बा त सरकार आ जनप्रतिनिधि लोग के खाली हवाई फायर कइला के जगह कुछ ठोस कदम उठावे के पड़ी। सडक, बिजली, सुरक्षा,लघु उद्योग आदि पर बेहतर काम करे के पड़ी। कवनो कारखाना चाहें आफिस काहें ना गाँव में लाग सकेला ?

साचहूँ भोजपुरी लोक साहित्य आपन भाव-भंगिमा खाति देश दुनिया में जानल जाला। एकर लमहर परंपरा आ विशाल भण्डार अबहियो रहस्य के पेटी में बंद परल बा। अगर कुछ पर्दा का ओट से बाहरो आइल बा, त ऊ बहुत कम बा। मतलब एकर स्थिति ओह हिमनदी जइसन बा जवना के कुछ आंशिक भाग लउकेला त अधिकांश भाग लुकाइल होला। एकर निश्चित रूप-रेखा खींच के संस्कार-परंपरा आ ज्ञान-विज्ञान, मनोरंजन

रविकांत सिंह

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा में 'भोजपुरी विभाग' में व्याख्याता रविकांत सिंह जी गाँव चैनपुर, मशरक के रहनियार हईं। इंहा के परिवार में शुरू से ही भोजपुरी में पठन-पाठन के माहौल रहल बा। इंहा के बड़ भाई शशीकांत जी भी भोजपुरी शिक्षण से जुड़ल बानी। भोजपुरी साहित्य के संरक्षण खाति इहाँ के 'भोजपुरी इनसाइक्लोपीडिया' तइयार करत बानी एकरे संक्षिप्त रूप में 'संक्षिप्त भोजपुरी ज्ञान दर्पण' के नाम से पुस्तक प्रकाशित भइल बिया। भोजपुरी पत्रकारिता पऽ इहाँ के पीएचडी कर रहल बानी। इहाँ के भोजपुरी में पत्रकारिता के विद्यार्थी लोग खाति कई गो टेक्सट बुक प्रकाशन खाति तइयार बाड़ी स। इंहा के पूर्व में प्रभात खबर से जुड़ल रहल बानी आ अबहिन एगो अनियतकालीन भोजपुरी साहित्यिक पत्रिका 'भोजपुरी संवाद' के संपादक भी बानी ।

के शिक्षा सदियन तक लिहल जा सकत बा एतना समृद्ध बा भोजपुरी लोक साहित्य। लोकगीत ओही परंपरा के निर्वाह करत अपना विविध आ बहुआयामी रूप में चिन्हित बा।

आज लोकगीत, संस्कारगीत, ऋतुगीत, श्रमगीत, व्रतगीत, देवीगीत, जातिगीत आदि में विभक्त बा। जवना में संस्कार गीत का श्रेणी में जनम, छठी, मुंडन, जनेऊ, बियाह आ मृत्यु का अवसर प अलग-अलग गीत के विधान होला।

ऋतुगीत में - कजरी, हिंडोला, होरी, चइता-चइती, जाड़ा, चौमासा, बारहमासा

व्रतगीत में - नागपंचमी, पीड़िया, गोधन, जिऊतिया, छठ, नवमी

श्रमगीत में- रोपनी, सोहनी, कटनी, पीसनी, जतसारी, कोल्हु

जातिगीत में - अहीर, दुसाध, गोड़, चमार, धोबी, कहाँर आदि गीतन के परंपरा बा। मतलब मय जीवन के एगो टहकार लाइन एह लोकगीतन में समाहित होके इतिहास बन चुकल बा। एकरा साथे विविध संदर्भन के प्रस्तुतिकरण में लोकगीतन के महत्त्वपूर्ण स्थान के एगो विशेष मर्यादा रहल बा। एह गीतन में नारीगीत, बालगीत, पहेलीगीत, शोषणगीत, मानवीय संघर्ष के साथे जागरण आ देशभक्ति जइसन गीतन में जवन सौंदर्य वर्णन के उदाहरण मिलेला ऊ साचहूँ अनुपम मनोरम दृश्य आ माहौल के प्राकृतिक वातावरण पैदा करेला।

लोकगीत मूलत: कवनो क्षेत्र विशेष के आम जनता द्वारा गावल जाय वाला गीत होला। जवना में ओह क्षेत्र के सभ्यता-संस्कृति, विचार, रीति-रिवाज आदि के वर्णन के साथे ग्रामीण पंरपरा, गवई भाव के स्वभाविक चित्रण मिलेला त दोसरे ओर भारतीय संगीत के मूल स्रोतन के झाँकी भी। भोजपुरी एगो समृद्ध भाषा के नाम ह जवना में शब्दन के अकूत भंडार बा। 22 करोड़ से भी ज्यादा लोग एकरा के देश-विदेश में बोलत बा।

भोजपुरी लोक साहित्य द लमहर भाग लोकगीत में समाहित बा। अगर भोजपुरी लोकगीतन के विविध रूप-स्वरूप आ प्रकार के देखल जाव त लोक जीवन आ मानवीय संवेदना के उछाह भावना के एगो पुरहर परंपरा देखे के मिली।

निर्गुण- भोजपुरी लोकगीतन में निर्गुण के विशेष महत्त्व होला। मूलत: निर्गुण के मानवीय जीवन के यथार्थ के बहुत करीब समझल-बुझल आ मानल गइल बा। एह गीतन में निर्गुण रूप में परम ब्रह्म के उपासना आ मृत्यु के अभाज्य अकाट्य सत्य के वर्णन पावल जाला।

हमका ओढ़ावै चदरिया चलती बेरिया
प्रान राम जब निकसन लागे, उलटि गई दोउ नैन पतरिया
भीतर से जब बाहर लाये, छुटि गई सब महल अटरिया
चार जने मिल खाट उठाइनि, रोवन ले चले डगरिया
कहत कबीर सुनो भाई साधो, संग चली वह सूखी लकरिया

-कबीर दास

पूरबी- पूरबी के मुख्यत: पूरब क्षेत्र के गायकी से संबंधित मानल जाला। बाकि आज सउँसे देश में लोकधुनन में एहु के एगो आपन मुकाम बा। एकर शुरूआत छपरा में भइल बाकि जल्दिए इ आरा, बलिया, बनारस, कलकत्ता सहित सउँसे भोजपुरिया क्षेत्र में पसर गइल। इ गीत अपना बिरह, वेदना आ श्रृंगार पक्ष खाति प्रसिद्ध बा एकर आधुनिक जनक छपरा के जलालपुर निवासी पं महेंद्र मिश्र के मानल गइल बा।

मोरे पिछुवरवा अरे निम्बुआ के खेतवा,
मोरी ननदिया रे निम्बुआ चुवेला सारी रात
मोरी ननदिया रे...

-महेंद्र मिश्र

झूमर- खुशी, हर्ष आ उल्लास के साथे झूम-झूम के गावला के झूमर के पहिचान मानल गइल बा। एकरा के लोकधुन के प्राचीन शैली के रूप में भा जानल जाला। जन्म, बियाह आदि के साथे भिन्न-भिन्न उत्सव प झूमर गावे के एगो विशेष परंपरा बा। जवना में औरतन के झुँड एह गीत के संपादित करत दिखाई पड़ेला। झूमर एगो अइसन सकारात्मक मनोरंजित माहौल पैदा करेला जवना के व्यापक आ दीर्घ प्रभाव श्रोता का मन मिजाज प पूर्णत: दृष्टिगोचर होला।

लहर लहर लहराई हो मोरी चढ़ली जवनियाँ
जब मोरे राजा दरवाजवा प अइलें,
घरवा अँगनवा सोहाई हो (पारंपरिक)

सोहर - भोजपुरी जीवन में संस्कार विधान के विशेष महत्त्व दिहल गइल बा। जन्म से मृत्यु तक भोजपुरिया जन जीवन संस्कारमय ताना-बाना से बुनल होला। सोहर ओही विधान के एगो कड़ी मानल गइल बा। भोजपुरिया लोक संस्कृति में स्त्री के गर्भाधान, पुंसवन, सीमांतोनयन संस्कार कर्म के विधान के परंपरा पूर्वकाल से प्रचलित बा। कहल जाला की एह अवसर प गावल गइल गीतन के जच्चा-बच्चा दूनो प सकारात्मक प्रभाव पड़ेला। एकरा अलावा भोजपुरी संस्कार गीतन में मंगल, खेलवना, छठी, नहवावन, अन्न प्राशन खाति गीत भी मौजूद बा।

कहवाँ हो कृष्ण जी के जनम भइलें,
कहवाँ बाजेला बधइया हो ललना
केकरी कोखिया सुलछनि,
किसुन जी जनम ले ले हो
कहवाँ बाजेला बधइया हो ललना (पारंपरिक)

संझा- साँझ के बेरा गावे के चलते एह गीत के संझा गीत के नाम से जानल जाला। एह गीतन में साँझ के प्राकृतिक वर्ण्य विषय के साथे ओह कालक्रम के मनसा के उद्घाटित कइल जाला। एकरा अलावे एह गीतन में घर के पुरखा-पुरनियन संघे देवता लोगिन के भी गोहरावल जाला।

पराती- जइसन कि नाम से साफ बा, इ गीत प्रात:कालिन बेला में गावल जाला। एह गीतन में प्रात: कालिन ऊर्जा के संचारित करे आ घर-परिवार के सदस्यन के कर्म के प्रति आंदोलित करे के भाव भरल रहेला। पराती में देवता पितर का संघे- संघे घर के पुरखा-पुरनियन के नाम ले के गोहरावल जाला।

जँतसारी- जँतसारी के भोजपुरी श्रमगीत का रूप में जानल जाला। गाँव में मेहरारू जाँता चलावत समय एह गीत के गावत रहल ह लोग एही से एकर नाम जँतसारी पड़ल। अइसन मानल जाला कि एह गीत के गावे के क्रम में जवन ध्वनिक माहौल पैदा होला ऊ दर्द आ थकान के मिटावे में सहायक होला। भोजपुरी श्रमगीतन में रोपनी, सोहनी, पिटनी, कुटनी, कोल्हु, डोली, खरखटिया, पालकी आदि से संबंधित गीतन के परंपरा मौजूद बा।

चौमासा- भोजपुरी प्रदेश अपना विविधता-प्राकृतिक सौंदर्य खाति जानल जाला। इहाँ के हर मौसम ऋतु एगो संदेश आ मनोरंजित माहौल लेके आवेले। चौमासा में मुख्यत: तीन ऋतु गरमी, बरसात आ ठंढा के चार-चार महीना का रूप में कालक्रमिक वर्णन होखेला।

कजरी- सावन-भादो मास में गावल जाए वाला गीतन में कजरी (कजली) गीत के आपन महत्त्वपूर्ण स्थान बा। कजरी में स्त्रीयन के समूह गाँव के बाग-बगीचा में झूला लगा बड़ा आन्दित भाव से एह गीत के गावेला लोग। कजरी गीत प्रेम के प्रतीक का रूप में समझल जाला। जवना में पति-पत्नी के प्रेम भाव का श्रृंगार भाव के उद्घाटित कइल जाला। बनारस आ मिर्जापुर के कजरी विश्वप्रसिद्ध बा।

होली/होरी- होली का त्योहार का अवसर प गावल जाए वाला गीतन के होली(होरी), फगुआ, फाग आदि के नाम से जानल जाला। होरी गीत के भारतीय आ भोजपुरिया संस्कृति में विशेष सांस्कृतिक आ धार्मिक महत्त्व बा। इ एगो मजबूत सामाजिक सद्भाव के दृश्य पैदा करत दिखाई देला।

चइता/चइती- चइत मास में गावल जाए के चलते एकर नाम चइता पड़ल।

घाँटो- घाँटो चइत मास में गावल जाला। इ विशेषत: दु पंक्ति के गीत हऽ। एह सब गीतन में सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती आदि देवी-देवता लोगिन के मनोहारी श्रृंगार वैभव के स्तुति कइल जाला।

पर्व गीत- व्रत, त्योहारन के धरती कहाए वाला उ रत्नगर्भा क्षेत्र सदियन से अपना भीतर धर्म, आस्था, विश्वास आ आध्यात्मिक्ता के थाति अस संजोअले आज एह आधुनिक युग में प्रवेश करत विभिन्न संदर्भन आ आयाम के द्योतक बा। भोजपुरिया लोक जीवन व्रत-त्योहार, पर्व-उत्सव से भरल-पुरल होला। पर्व गीत में मुख्यत: देवी-देवता, छठ गीत, पीड़िया गीत, नागपंचमी, बहुरा, गोधन, भइया दू, पनढरकउवा, झिझिया आदि मुख्य रूप से गावल जाला।

देवी गीत- भोजपुरी अंचल में देवी पूजन के आपन एगो विशेष महिमा-महत्त्व रहल बा। जवना में अलग-अलग ढ़ग से देवी के आराधना गीत का माध्यम से कइल जाला। देवी पचरा, देवी गीत, भजन, आरती ओकरे विंम्ब विधान हऽ।

नागपंचमी गीत- श्रावण शुक्ल पंचमी के नागपंचमी पर्व का रूप में मनावल जाला। एह पर्व में भोजपुरिया जनमानस साँप (नाग) के पूजा करत दूध आ धान के लावा के चढ़ावा चढ़ावत नाग देव आ नाग माता के गीत गावे के परंपरा युग-युग से रहल बा।

छठ गीत- छठ गीत कार्तिक षष्ठी के अंजोर मनावल जाला। छठ पर्व मुख्यत: सूर्य वर्त होला जवना में सूर्य देव के आराधना कइल जाला। एह महापर्व में नदी, तालाब, पोखर आ जल स्रोत के करीब बइठ के मेवा-मिष्ठा, फल-मूल से सूर्य देव के अरघ दिहल जाला। छठी व्रत विशेष तौर प पुत्र कामना खाति कइल जाला।

साभावा बइठल उनुकर बाबा झंखेले राम
हमरा के बिनु बेटा के कई गइले राम
मचिया बइठल उनकर आमा रोवेली हो राम
हमरा के बांझिन कई गइले राम ।।(पारंपरिक)

जागरण गीत- जन चेतना के जगावले जन जागर गीत के मुख्य उद्देश्य होला। एह गीतन में देश, सभ्यता-संस्कृति, संस्कार, रिति-रिवाज, पर्व-त्योहार के वर्णन के साथे ओकर मर्यादा बचावे के अपीलो होला तऽ जन चेतना के जगावे के उमंग-उत्साहो। भोजपुरी में 'बटोहिया', 'फिंरंगिया', 'किसनवा', 'अछूत के शिकायत', 'गोरख पांडेय के जन गीत', 'मितवा' जइसन गीतन के लमहर परंपरा रहल बा जवना जन चेतना खाति पूरजोर-पूरहर प्रयास कइल गइल बा।

भोजपुरी लोक साहित्य के कवनो दायरा में नइखे बाँधल जा सकत, इ अथाह बा। बाकि अफसोस अइसन महान लोक संस्कृति के विद्रुप करे के लगातार कोशिश हो रहल बा, अश्लीलता आ बाजारवादी ताकत एह संस्कृति पऽ हावी हो रहल बाड़ी स जवन एकर मूल आस्तित्व खाति खतरा के घंटी बा। समय रहते यदि एह भाषा-साहित्य के संरक्षण-संवर्धन पऽ ध्यान ना दिहल जाई त इ विलुप्त हो जाई।

गोकुल जइसन गाँव

वृंदावन जइसन बारी बा, गोकुल जइसन गाँव
खेलेलें लईका कान्हा जईसनऽ, झूलि कदम्ब के छाँव

माई जसोदा जइसन लागे, हर घर के महतारी
सबकर कान्हा मारेलें, नित अँगना में किलकारी
झूमि-झूमि के चिरई गावे छेड़े मन के भाव
खेलेलें लईका कान्हा...

बाबूजी नंद बाबा जइसन, कहानी रोज सुनावस
रोवस जदि लईका उनके, घोड़ा बन के खेलावस

बाबा गोपियन के माथे पर बिंदिया बड़ा सोहाव
खेलेलें लईका कान्हा...

नवकी दुलहिन अँगना में, जब मटक मटक के चलस
लचके कमरिया पियरी घुँघटा तान के जब ऊ चलस
पायल बाजे अइसे जइसे बाजेला सितार
खेलेले लईका कान्हा...

कुमारी विनिता 'रंजन'

भोजपुरी के युवा स्वर कुमारी विनिता 'रंजन' गाँव इसारी जिला बलिया के रहनिहार हईं। एतना कम उमिर में भोजपुरी खाति इंहा के समर्पण सराहे योग बा। सांस्कृतिक कार्यक्रमन में सहभागिता, लेखन, गायन अउर अभिनय में विशेष रूचि बा । आकाशवाणी गोरखपुर से नियमित काव्य पाठ ।विभिन्न पत्र-पत्रिकन में रचना प्रकाशित ।

संदर्भ: 'अँजुरी भर फूल', भोजपुरी संस्थान, इंद्रपुरी, पटना

हमार गाँव

आजूओ हमरा गँउवा
भिनुसार से संझौती गुलजार बा
बाकि बैलन के घंटिअन से
अब ना गूंजत बधार बा

गिने के तS ढेर बाडी सन
कुईयाँ आ तालाब हमरा गाँवे
बाकि लेरुअन के पिआस
अब ओह में ना बुतात बा

तीन कनौजिया तेरह चुल्हा
का भईल हमरा गाँवें
बडकी माई के हियरा
हमरा खाती ना छछनात बा

काहे दो हमरो माई लुका के
पावरोटी खियावेले हमरा के
मँझली माई के दीहल माड़-भात
डूभा में हमके ना भेटात बा

अब तS बाबा-आजी खाती
पारी बन्हा गईल बा घरवा में
बाबा-आजी के डाँट आ
अन्हरचटकी
महीना में दू चारे दिन भेटात बा

कहे के तS बेटी आ बूढ
सउसे समाज के होखेला
बाकि बेटिअन के छान्हे ढेला
आ बुढउ के पछुआ खोलात बा

हमरा गाँव में केहू अब
अपना सुख में ना हँसे

अनका के दुखे देखि के
सभे के हियरा जुडात बा

मोबाईल पS फूहर गीतन
के बहार बा ऐह घरी
अब बिआहन में गाँवें
कैसेटे से गारी गवात बा

फुनगी तS खाली चिन्हासीऐ
होखेला आपन ऐ "भूषण"
फेंड आ रुख तS हरिअर बा
जबले जर-सोर सींचात बा

बेटी

रूनुकी झुनुकी
बेटी मंगाला

पोसे के बेरिया
खाली बेटे पोसाला

अनकर बेटी पS
लार चुआके

आपन बेटन के
नाक पोंछाला

देखS ऐ "भूषण"
ईहे कहाला

कुक्कुर के पोंछ
नाहिऐ सोझिआला

आपन मउगी के
बनरी समुझ के

अनकर मेहरी के
सुनरी कहाला

चंद्रभूषण पाण्डेय

आरा , बिहार के रहेवाला चंद्रभूषण पाण्डेय जी , भोजपुरी मे ठेठ आ गहिराह रचना खाति जानल जानी । भोजपुरी कविताई के एगो बरिआर ठेहा के रुप मे इँहा के लगातार लिख रहल बानी । एह घरी ईँहा के बेगुसराय मे बानी ।

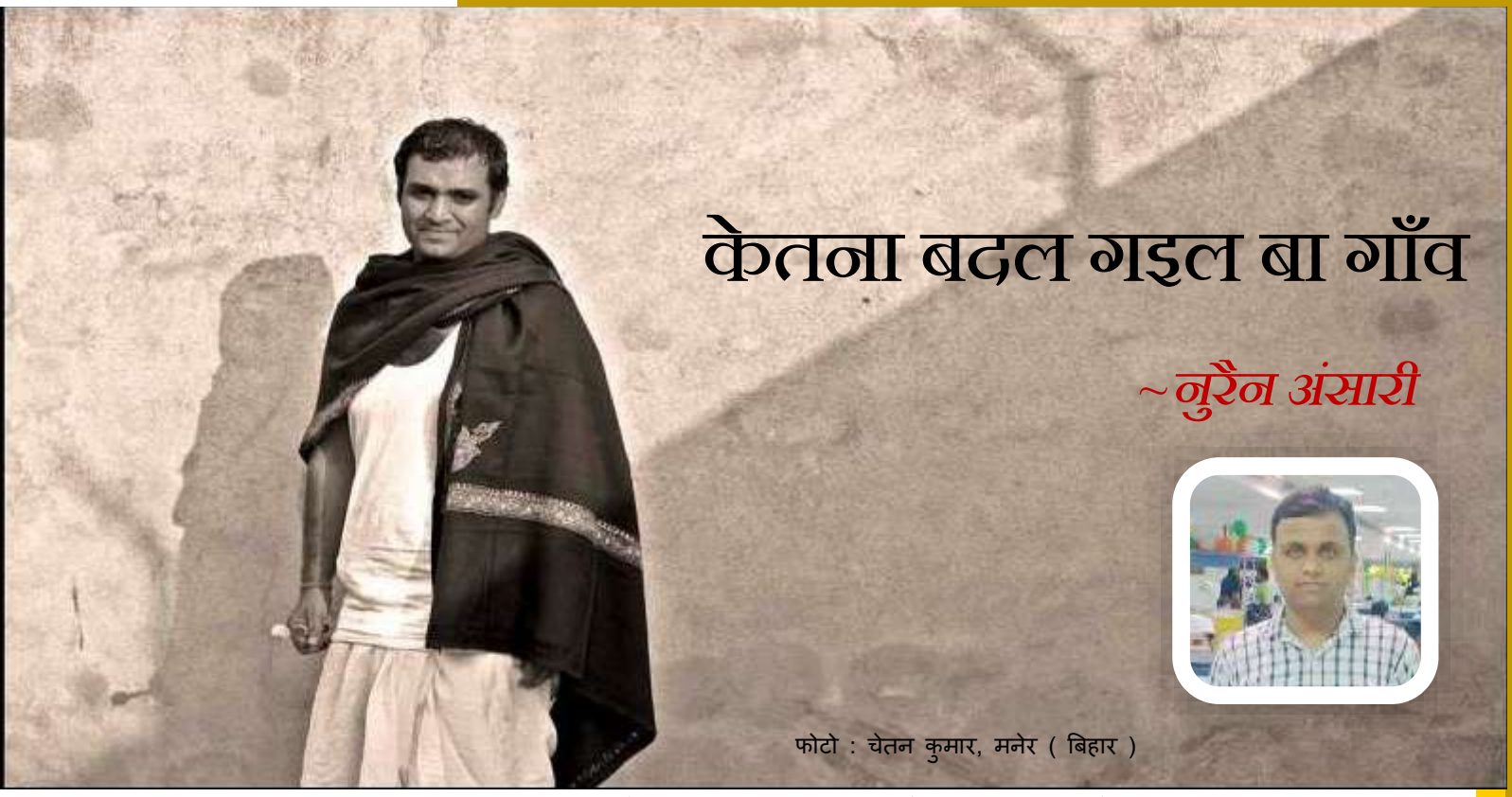

केतना बदल गइल बा गाँव

~नुरैन अंसारी

फोटो : चेतन कुमार, मनेर (बिहार)

घर घर संस्कृति शहर वाली लागल पसारे पाँव
एसी/कूलर के हवा में दब गइल बरगद के छाँव
समय के संगे केतना बदल गइल बा गाँव !

न रहल पुरनका लोग, न रहल बात पुरनका
किस्सा-कहानी बन गइल, सगरी चीज़ निमनका !

नवका फैशन में टूट गइल, सब लाज हया के डोर
भवे-भसुर, सास-ससुर के, रिश्ता भइल कमजोर !

मत पुछीं त बढ़िया होइ, आज संस्कार के दशा
अब त लड़िका मारे बाप के, देखे लोग तमाशा !

"केहु का कही" के, मन से अब निकले लागल डर
गाव में बाबू जी से पहिले ही, बेटी खोजेले वर !

बदलल चाल-चलन के साथे, भेस भूषा पहनाव
इया,फुआ ,काका,काकी, बिसरल सगरी नाव
समय के संगे केतना बदल गइल बा गाँव !

सोहर, झूमर होरी के लोग, भूल गइल बा गीतिया
छूछे- छूछे बीत जाले छठ ,पीड़िया,खर-जीउतिया !

बिरहा ,निर्गुन, चइता त सुने के खूब मन तरसे
बाकिर अपने में बेसाँस लोगवा, निकले नहीं घर से !

प्रेम अउर भाईचारा में, हाकल डाईन लागल
दोसरा के देख के जरे के, डाह मन में जागल !

पहिले जेकर बतिया मन में, मिसरी के रस घोले
अब पता ना उहे लोगवा, गजबे बोली बोले !

पर्व त्योहार में भी नइखे,अब पहिले जइसन भाव
बिना मूँछ के लोगवा, मूँछ पर फेरत बाटे ताव
समय के संगे केतना बदल गइल बा गाँव !

कट गइल सगरी बाग-बगीचा, मुस्मात भइल फुलवारी
शहर में बसे के सबके, धइले बा घनघोर बीमारी !

सुख गइल सगरी पोखरा-ईनार, नहर भईल बियाबान
अपना दशा पर फफक- फफक के रोअत बा खलिहान !

गाँव के लोगवा के ही आपन, गाँव ना निमन लागे
खीर-पूड़ी, के छोड़ के लोगवा, पिज़्ज़ा के पीछे भागे !

मट्ठा-छाछ के जगे पिये लोग पेप्सी कोला ठंडा
क्रिकेट के आगे बौना हो गईल, गाँव के गुल्ली- डंडा !

पिछला एक दसक में भइया, गज़ब भईल बदलाव
डिजिटल दुनिया के पड़ल बा, बहुत गहीर प्रभाव
समय के संगे केतना बदल गइल बा गाँव !

मोर गाँव रे !

चरर-मरर-चर करे बसवरियाँ, घंटा के गूँजे नाँद रे
हर जात धरम के जहवाँ संगम, ऊहे हमरो गाँव रे

लहर-लहर लहरेला खेतवा, हर-हर-हर हरियाली से
साम सुबह गूजेली गलियाँ, लरिकन के किलकारी से
पवन चले पुरवाई बन, बुहारे हर एक ठाँव रे
हर जात धरम...

गोकुल, वृंदावन जइसन हो, दूध-दही के रेला बा
साफ सुघर हर गली-गली बा, नाही ठेलम ठेला बा
चिड़ियन के चहकार गूँजे, मुर्गा के गुँजे बाँग रे
हर जात धरम...

धोती, कुरता, सिर प पगरी, इहे रउवे पहनावा
सरल साधारण जीवन हउवे, नइखे कवनो दिखावा
झोपड़ एक उठावे खातिर, उमड़ल सगरी गाँव रे
हर जात धरम...

शरद ऋतु के सरस हवा, बरबस कउड़ा जरवावेला
छानी पलानी टप-टप चूवे, जब-जब बरखा आवेला
ओरियानी के पानी में चलावे बबुआ नाँव रे
हर जात धरम...

झूमर के झनकार कबो, कजरियो धूम मचावेली
बछवाँ से मिले के गइयाँ, साँझ के धावल आवेली
चईत में एसी, कुलर जस, लागे अमवा के छाँव रे
हर जात धरम...

गंउवा के माटी

गउवाँ के माटी के, जब याद तोहे आई
रही-रही तरसी जियरा, आई बस रोवाई

एह धुरि भरल गलियन में बितल तोहरे लरिकइया
जबरी माई मुँह में ठूँसे, कहे रवाँ मोरे कन्हइयाँ
दादी कोरवाँ काथा सुनत, आवे तोहे ओंघाई
रही-रही...

ओल्हा पाती, गुल्ली-डंडा, चीका जमे बरिया में
स्वीमिंग पुल में, रस ना मिली, मिलल ट्यूवेल नरिया में
सुख सुतल पुअरा पहली के, शहरी में ना पाई
रही-रही...

गउवाँ के कण-कण तोहरा के, गउवाँ में पुकारेला
आशा के दियना दिल लेके, रहिया के निहारेला
बचपन संगी संग खेले के, मनवाँ जब अकुलाई
रही-रही..

संतोष कुमार 'शशि'

गाँव बछईपुर जिला बलिया के रहे वाला हईं। कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, फिल्म स्क्रिप्ट आ गीत लेखन आ निर्देशन में इहाँ के दक्ष बानी। इहाँ के 'कलयुगी अफसर', 'मजदूर की व्यथा', 'मेरे गीत', 'मेरा बचपन' जइसन कृति प्रकाशित बिया आ 'नवरंग' (एकांकी संग्रह), 'तोहरे खाति', 'नाजायज' उपन्यास आ खून का रिश्ता जइसन कृति छपे खाति तइयार बाड़ी स। उत्कृष्ट सृजन खाति इहाँ के हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सहित कईगो साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था सम्मानित कइले बाड़ी स। इहाँ के टेलिफिल्म 'हमारा अस्तित्व' काफी चर्चित रहे।

संदर्भ : 'अँजुरी भर फूल', भोजपुरी संस्थान, इंद्रपुरी, पटना

बाउजी के डायरी (पहिला पन्ना)

(अनिमेष कुमार वर्मा)

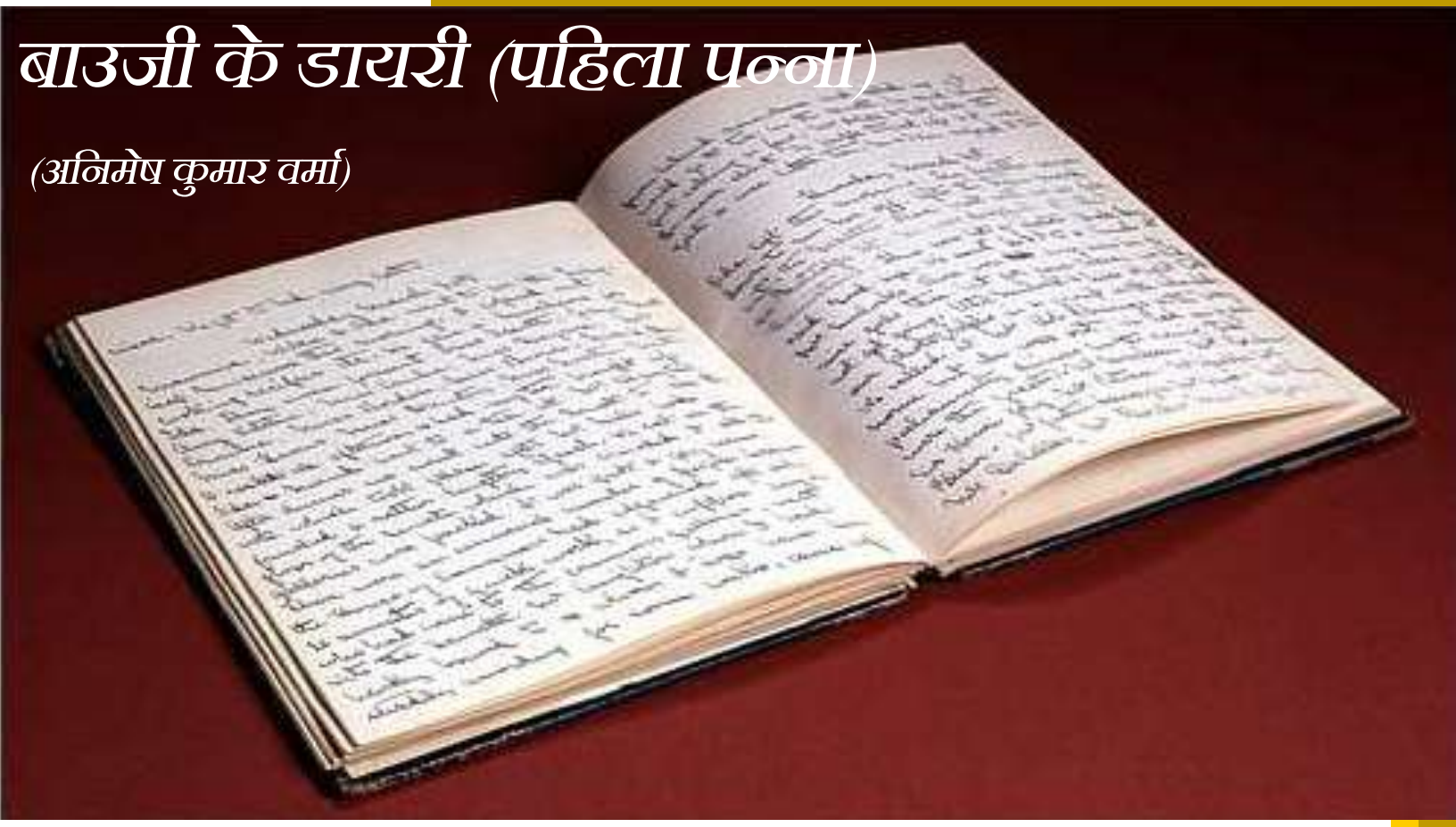

चाह धईल-धईल सेरा गईल रहे, आ ओसारा में बईठल बिनोद के करेजा में, बढ़त बेचैनी के ताप से आँख के लोर ना रुकत रहे।

अचानके उनका ढेर कुल्हि चीज मन पड़े लागल रहे। स्कूल के बाद से गाँव छोडले, त फेनु बहरिए के बनि के रह गइलें उ। शुरू मे मोका ना मिलो आ बाद में मने ना करो गाँव जाए के। ढेर बाझल रहसु अपना बम्बई के नोकरी में। लईका- फईका भईला के बाद त मेहरारू भी आनाकानिये करसु। गते-गते बिनोद अपना माईक्रो (बहुते छोट) घर- परिवार में तनि बेसिये अझुरा गइलें। कबो माई-बाउजी के मिले के मन होखो, त टिकिट भेज के इहें बुला लेसु। बाक़िर हफ्ता दु हफ्ता में उहो लोग वापस चल जाओ।

दुनो लो के एके साल के भीतर पारा-पारी गुजरला के बाद बिनोद गाँव के घर जमीन बेच देहलें। ओह समय कुल सामान के बीच बाऊजी के एगो डायरी मिलल रहे, जेकरा के उ अपना साथे ले आइल रहलें। बम्बई अईला के बाद उ डायरी केनियो राखि के उ भुला गईल रहलें। काल्हु घर में सफाई करत घरी उनुकर मेहरारु पुछली के हेतना दिन से झूठो के हई सरल डायरी धईले बानी, फेंक दी ना। बिनोद कहलें, ना-ना रुकS , पहिले देखे दS का बा एकरा में। बाऊजी के प्रिय चीज हवे ई । आजु एतवार के उ अनगुतही चाह के संगे बाऊजी के डायरी पढल शुरू कइलें।

1 जनवरी 1977, दिन शनिवार

आजु महीना के पहिला दिन बीत गईल बाकि अभी ले तनख़ाह नईखे आईल। भोरे-भोरे जात रहनी त ई कहली की सांझी के लौटानी में चौक से एक पाव जिलेबी ले आएम। बिआह के बाद पहिला हाली ३ बरीस में कुछ मुंह खोल के ई मंगले रहली आ जेब में हमरा चवन्नीओ ना रहे। भोलाराम से उधार मांगे में बहुते लाज लागत रहे। बाक़िर उ बहुत नीमन आदमी हवें जे अपने कहलें, की मास्टर साहेब रउआ आराम से दे देम कवनो बात नईखे। हम गीन के चारे गो जिलेबी लेहनी।

आज जिनगी में पहिला हाली बाऊजी के सीख से अलगा हट के काम कईनी। भर रास्ता साईकिल चलावत हमार मन अपराध बोध से भरत गईल रहे। घरे पहुँच के जब इनका के जिलेबी के ठोंगा देहनी त चेहरा पे खुसी आईल देख के हमरा करेजा के तनकि सा

www.bhojpurisahityangan.com

ठंडक मिलल। रात के खाना में रोटी आ आलू के तरकारी रहे। हमेसा लेखां, पहिले हमरा के खाना परोसली आ थरीया में दु ठो जिलेबी धऽ देहली। हम खिसिया के एगो करवनी, ई कहि के की हमरा मीठ ढेर पसन्न ना ह। ओकरा बाद बबुआ के लेके उहो खाये बईठली। 4 बरिस के भइलो पे बबुआ अपने हाथे खाए में असकतीयास, आ उनकर माईए खियावेली उनका के लाड़-प्यार में। 'अपने हाथे खाये द' के बात पे खिसिया जाएली, आ कहेली की हती-चुकी लईका पे एतना जुलुम जनि करीं। ओकर माई जियतीया आ जबले हम जीएम अपना हाथे खियाएम। जेकरा जरंतुस लागेके बा लागो। ई ब्रह्मास्त्र के बाद हम फेनु चुप हो जाएनी आ आजूओ हो गईनी।

बबुआ के खियावल शुरू कईली त उनका जिलेबी बड़ी पसन पड़ल, आ तुरन्ते खा गइलें। फेनु अउरी चाहीं के लगलें हल्ला मचावे, जवना पे ई लिया के दुसरको खीया देहली। फेनु हल्ला शुरू कइलें, त ई अंतिम जिलेबी भी खियावे लागली। बाक़िर बबुआ अपने खाये के जिद्द कइलें आ आधा खा के बकिया भुईआ लसरा देहलें आ उ खाये लायक ना रह गईल। आजु पहिला हाली हमरा बबुआ पे खीस बरल, बाक़िर उनकर माई के आँख में चमक देख के हम चुप लगा गइनी।

बबुआ के सुता के बोरसी जरा के हमारा लगे बईठ के कहली- देखनी नू, बबुआ अपने हाथे खाए लागल। हमरा से रहल ना गईल आ कह देनी- एतना मन से मंगवले रहलू ह कम से कम चीखि त लेहले रहतु एक हाली। हमार बतिया ओराइला के पहिले हीं उ कहली- घबराईं जन, जब बबुआ सेआन होके पढि लिखि के कलक्टर बन जईहे नू तब इनका से एक सेर जिलेबी डेली कीनवा के खाएम। हम अब निरुत्तर होके बईठल - बईठल ई कुल लिख रहल बानी।

समाप्त।

बिनोद बो कप लेवे अईली आ सेराईल चाह आ बिनोद के आँख में लोर देख के घबराईले पुछली- का भईल जी, अईसन का लिखल बा की रउआ नीहर आदमी के आँख से लोर चुअता... बात का बा?

बिनोद कहलें- तहरा याद बा आखिरी बार जब माई बाऊजी लोग आईल रहे इंहवा, आ वापस जाए के एक दिन पहिले, बाऊजी भोरे-भोरे हमरा ऑफिस जाए के बेरा कहले रहनी। बबुआ, लौटानी में एकाध किलो जिलेबी ले अइह, तहरा माई के बडा पसन परेला। ओह दिन सांझी खा हमरा आवे में देरी हो गईल रहे आ हम जिलेबी ले के ना आईल रहनी। असल में ओह दिने हम भुला गईल रहनी। आ बाऊजी के तनकी सा तेज बोल देहले रहनी की एह उमिर मे एह कुल्हि चीझू से परहेज करे के चाहीं, एहीसे हम नईखीं लियाईल। बाऊजी भी कहलें की, बबुआ तु ठीक कहलऽ ह आ फेनु उँहा के कुछों ना कहनी।

ओ बेरी ना बुझाईल, बाक़िर आजु एहसास भईल बा की हमरा से केतना बडहन पाप हो गईल बा।

खैर तु जा, लईकन के देखऽ, अभी त हम पहिलके पन्ना पढ़नी ह।

डायरी के पढल अभी जारी बा ...

अनिमेष कुमार वर्मा

सिवान के रहे वाला अनिमेष कुमार वर्मा जी , भोजपुरी भाषा आ साहित्य मे लगातार सिरजना कई रहल बानी , आखर पेज से जुड़ल अनिमेष जी भोजपुरी मे गीत , कविता , कहानी के संगे संगे अपना फोटोग्राफी खाति मानल जानी । फिलहाल इँहा के अबुधाबी , युएई मे रहि रहल बानी ।

एहवात

आजु सुगनी नईहर आईल बिया, अपना कोठरी में जाते वोकर आंखि से झर-झर लोर चुवे लागल आ सात साल पहिले के बात सनीमा लेखा आंखि के सोझा लउके लागल, वोह घरी सुगनी के उमिर पंद्रह साल के रहे, हाई इस्कूल के परीक्षा अउवल नमर से पास कईले रहे, गधबेरिया हो गईल रहल तले दुआरी पर तीन चार गो मोटरसाईकिल आ के रुकली सन, रवि के बन्दुक के जोरी, जबरी, बाबूजी, मामा अउरो चार पांच लोग पकड़ के लेआवल लोग आ कोठरी में बईठा के बहरी से सीटीकिंनी लगा दिहल गईल। वोकरा कुछुओं ना समझ में आवे कि ई कुल का होत बा, तर-ताबर सुगनी के नया साड़ी पहिनावल गईल, रवियो के कुरुता अउर पियरी धोती पहिना के अंगना में लावल गईल, फेनु दुनों के अगली-बगली बईठा दिहल गईल, पंडी जी के मंतर आ रवि के आँखि से लोर एके साथे चलत रहे, रवि के हाथ पकड़ के जबरी सुगनी के मांग में सेनुर डलवावल गईल, एह तरे सुगनी आनन फानन में एहवात हो गईल।

होत भिनुसारे दुवारी पर लोगन के जुटान होखे लागल, रवि के बाबूजी आ उनुकर रिश्तेदार आइल रहले, मान मनौअल के संगे-संगे धमकियों के दउर चले लागल, सुगनी के बाप रवि के बाबूजी के गोड़े गिर गलती हो गईल, गलती हो गईल, कहि के माफ़ी मांगत रहलें, दोसर ओरी सुगनी के मामा धमकियावतो रहलें। बहुते बाद बिवाद भईल, बाकिर दबाव में रवि के घर वाला सुगनी के अपनावे के तैयार हो गईल, खैर.... जईसे तईसे विदाई हो के सुगनी रवि के घरे चल आइल। सुगनी बुझ गईल कि वोकर पकडुआ बियाह हो गईल बा।

रवि वोह घरी इंजीनियरी दूसरा साल के विद्यार्थी रहलें, पहिला साल में कालेज टाप कईले रहलन, बियाह भईला के बाद से रवि एकदम चुप चाप रहे लगलन, केहू से ना बोलसु, अकसरे रोअत रहस, माई के बहुते समझउला पर एक दिन उ भोकार पार के रोवे लगलन आ एके लाईन कहलन "माई हमार इज्जत परतिस्ठा त ले लिहलन सन" पूरा परिवार एकाकी आ सुगनी बेचारी भ गईल रहे। रवि वोह साल परीक्षा छोड़ दिहले। खैर समय बितत गईल,रवि पढ़ लिख के सरकारी विभाग में इंजिनियर हो गईले, सब कोई सुगनी के माफो कर दिहलस बाकी रवि ना।

माई के आवे के आहट पाई के सुगनी अपना के सहेजे के कोशिश करे लागल, बेटी के मुरझाइल चेहरा देख माई एक साथे कई गो सवाल पूछ बईठली।

"का बात बा बिटिया ?"

"तू खुश नईखु का ?"

"तोहार देह काहे गलल जात बा ?"

"ससुरा में खाये के नईखे मिलत का ?"

"सास ससुर सतावत बा का ?"

"ना माई अईसन कवनो बात नईखे, हम खुश बानी आ सास ससुर त देवता नियन बा लोग"

"ओह ! त तोहार गोद आज ले हरिहर ना भईल वोसे तू दुखी बुझात बाडू"

सुगनी कुछ ना बोललस पर वोकर आँख से बहत पानी बहुत कुछ कहत रहे।

"तू रोअS जिन बिटिया, तोहार बाबूजी से कह के काल्हे शहर के बड़का डाक्दर से तोहके देखावे के बेवस्था करत बानी"

"डाक्टर का करी माई, तू बाबूजी से कह दे कि बन्दुक के बल पर उ हमार गोदियों हरिहर करा देस"

गणेश जी 'बागी'

गणेश जी बागी भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के उभरत साहित्यकार हई , साहित्यिक वेबसाइट ओपन बुक्स ऑनलाइन डॉट कॉम के संस्थापक आ पथ निर्माण विभाग बिहार सरकार में सहायक अभियंता के रूप में कार्यरत गणेश जी बागी पटना (बिहार) में निवास करेनी। इहा के पैतृक जिला बलिया ह। बागी जी छंद युक्त आ छंद मुक्त कविताई करेनी, इहाँ के लघुकथा बहुते पसन कईल जाला।

नसीब

कालेज के चउथी घंटी बाजल। रेशमा के अगराइल मन अइसन चहलस कि क्लास से एके बेरी उड़ के उहां पहुंच जइती जहवा उनकर मन-मीत अभिषेक उनका इन्तजार में खडा़ होइहें। अभिषेक बाइलोजी के छात्र हउअन आ रेशमा कला के छात्रा हई। एही से दुनू आदमी एके बेरी ना मिल पावस। एगो आदमी के इन्तजार करहीं के पड़ेला।

अभिषेक पुस्तकालय के कोना में बइठल किताबन ओरी निहारत रहलें बाकिर मन में रंगीन सपना के घटा उनहत रहे। गोर छरहर देह मुसकियात मन के भोराइल भाव इनका मन के मोह लेले रहे। उनका आँख में उभर आइल-नेह नहाइल मिलन के लसराइल भोर। जब बन संवर के रेशमा एक दिन गाव के घोनसारी में गइल रहली। इ ओ घरी ममहर में रेशमा के गाँवे रहस। उनका के देखते कंठ से फूट पड़ल- "हमरा ओरी तू देखऽ एक बेरिया, हम मरी-मरी जायेब तोहार किरिया। "रेशमा अचकचा के पीछे घूम के कुछ कहहीं के चाहत रहली तले बधार किओर से ठाकुर साहेब के आवत नजर टकराइल जइसे कवनो परमाणु बम के विस्फोट हो गइल होखे। ठाकुर साहेब आवते गरजले-'बबुनी, ते ताक इनका किओर आ ना मुअले त आज बे मुअवले ना छोड़ब। ' इनका त जइसे करेंट मार दिहलस। उनकर दुनिया अन्हार होखे लागल। इ का जानत रहलें कि ठाकुर साहब लगहीं खइनी बनावत केहू से बतियावत रहलें। गाँव के लोग बीच-बीचाव कके ममिला ठंढावल। तब सांस में सांस आइल। आजो उ दृश्य इयाद आवेला त मन मरमरा जला। बाकिर आज त उहे रेशमा उनका करेज के कसक हो गइल बाड़ी।

अभिषेक ! अभिषेक !! आज त हिन्दी के क्लास में माजा आ गइल हो। प्रोफेसर साहेब पढ़ावत रहनी ह त बतवनी ह कि 'साली' आ 'जीजा' शब्द कइसे बनल। उहां के बतवनी ह कि- 'जब करेजा में साली तबे उ साली ह। ओकरा के देख के जब मन अघा जाव, जी-जाव तब उ-जीजा' ना त कवना बात के जीजा। का अभिषेक, इ बात ठीक ह? अभिषेक उनका के का जबाब देसत कहलें-'अभी अनुभव नइखीं कइले। ' कहे के त कह देलें बाकिर उनका बुझाइल जइसे उंट चोरा के उ खले-खले जात होखस। उनका इयाद पड़े लागल जब उ भउजी के कहला पर भइया के साली बोलावे खातिर गइल रहलें। रास्ता पर उनका छोह-छाव के चलते रहते ना बुझाइल। उ चलते चलत बइठ जास आ कहस कि अब हमरा से नइखे चलल जात। हम जब बांह ध के उठाई त कहे लागस- ए जी, बिना तिलके-दहेज के हमार हाथ बांह ध लेनी, त ठीक बा अब त हम राउर हो गइनी। अब हम रउरे घरे रहेब। ' आजो इ बात करेजा में सालेला। सांचहूं साली-साली आ करेजा में साली। '

'ए जी का सोचे लगनीं। उ अचकचा के जगलें। उ कहली- आज हम कुछ पुछे के चाहत बानीं। हमरा मन-मंदिर के देवता, अइसे कब ले चली। इ पूजा के फूल देवता के चरण में कब ले चढ़ी? अभिषेक गम्भीरता से तुरंत कहलें-'रेशमा, तहरा के हम परान से बेसी मानीले। आपन जिनगी के हरेक खुशी दे देवे के तइयार बानीं। बाकिर तू बतावऽ-जिनगी भर के साथी इ समाज बने दी का? एक त तहार जात ना हई। दोसरे गरीब बाप के बेटा। आपन मुड़ी अभिषेक के छाती में सटाके कहली- 'प्रेम में जात-पात के देवाल ना होखे। इ दू गो मन के सउदा ह। दुनिया में कवनो अइसन देवाल नइखे जवन तहरा के हमरा से अलग कर देव। रेशमा भावावेश में आके झझोर के पुछली- कहां गइल तोहार कहनाम, उ आदमी कइसन जेकरा के समाजे बदल देवे। '

'रेशमा' तू समाज के बखान नइखु जानत। इहां के लोग जरतमुअना ह। '

अभिषेक भोजपुरिया

ग्रा- भटवलिया, पो0- बादरजमीन, जिला- छपरा के निवासी अभिषेक जी , भोजपुरी भारती पत्रिका के उप संपादक हइं। आ भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के अलख जगावे मे सदैव तत्पर, साहित्यिक परिवार से जुडल भोजपुरी भाषा मे एक से बढि के एक नीमन नीमन लेख कविता लिखेनी।

हम खूब जानत बानीं। मरद-मेहर राजी त का करी काजी। बस, अब त एके गो रास्ता बा- हमरा के ले के भाग चलऽ। बोलऽ बा मंजुर?' रेशमा पुछली।

भागला के नांव कायरता ह रेशमा। तहरा से वादा करत बानीं अपना गोड़ पर खडा़ भइला के बाद तहरा के हम दुलहिन बना के ले जाएब। अभी त सबुर करऽ।

रेशमा खिसिया के अतने कहली- 'तुहूं मरदे हउअ का? आ चल देली। उनका बुझाइल जइसे मनवा के साध के सराध हो गइल होखे।

अभिषेक मेडिकल कम्पलीट करे पटना पढ़े चल गइलें। रेशमा अभिषेक के बिना मउर गइली। रेशमा आ अभिषेक के प्यार के बात तेल खानी गाँव भर में पसर गइल। रेशमा के बाप इ सुन के जमीन में गड़ गइलें। अब दिन-रात एही फेरा में लागल रहस कि बिटिया के कइसे हाथ पियर कर दीं। छाती पर के बोझा कइसे उतरी। बचपन से पोसल बेटी सरधा के सूरत आ ममता के मूरत रहस बाकिर दहेज के एह जबाना में छाती के बोझा हो गइली। शादी के फेरा में दिन-रात छिछिआइल फिरस। गोड़ के चाम खिआ गइल। कहीं घर मिले त वर ना कहीं वर मिले त घर ना। जहां दुनू रहे उहां के मोलाई सुन के आँख में जोन्ही फुलाये लागे। जेकरा सुध पलानिओ नइखे ओकर मोलाइ सुन के करेज दलके लागे।

ठाकुर साहब के चिन्ता में डुबल देख के रेशमा के माई कहली- 'ए रवंऽ, का चिन्ता में डुबल बानीं। अपना बबुनी में कमिये का बा। अइसन सुघर,सुशील, साफ केकर बेटी बा। इनका कवन चीज के लुर नइखे-सिआई-फराईसे खायेक बनावे तक।' रेशमा के बाबु खिसिया के कहलें-'एह घरी लोग रुपिआ के जामल भइल बा। रुप-रंग पुछे ना कोई, रुपिआ दिही से समधी होई। पइसा के आगे रुप-रंग के पुछत बा हो। भगवान का जाने बबुनी के भाग में का लिखले बाड़े।'

ठाकुर साहेब अबकिर घुमत-घुमत रामपुर गाँव में शादी ठीक कइलन। लइका जनता बजार में स्टूडियो रूप श्री के निमन बिजनेस सम्हरले रहे। इहो बिआह राजबलम बाबु मास्टर साहेब के मदद से ठीक भइल। हारल-खेदाइल अबकिर एक लाख नगद आ एगो मोटर साइकिल सकार लिहलन।

एक दिन फागुन के सगुन सोहरे लागल। हाथी-घोड़ा हेनहेनात आइल। इ तर-उपर धोती पहिरले मन मरले दुआर पुजा खतिर बइठल रहस। चिन्ता-चिन्ता में इनकर चित जरत रहे- 'एके गो माई के कोखी से बेटा-बेटी दुनू पैदा होला। बाकिर बेटा भइला पर थरिया बाजेला आ बेटी भइला पर पसंगी के अगियो बुता जाला? उनका मन में सवाल उठत रहे-एकर विरोध त मेहरारुओ लोग के करे के चाहीं बाकिर अपना भाई के विआह में उहो लोग उछाह में गावेला-"बड़हन अजुरी पसरिह ए मनोज दुलहा, बड़हन नइया तोहार हे। "भा-बड़का-बड़का बटुला मँगनी छोटका काहे ले अइलऽ हो।' एही समय दुआरपूजा के गीत शुरु हो गइल-'लिहीं ना अनजानों बाबा धोतिया, हाथ पान के वीड़ा, करीं ना समधिया से मिनती सिर आजू नवाई। जवन सिर कहियो ना नवल तवन सिर बेटी हो रेशमा बेटी कारणे आज नवाई।' ठाकुर के अइसन बुझाइल उनकर माथ आज एही बेटी के कारण झुक गइल बा।

दहेज खतिर ढेर थुकम-फजिहम के संगे रेशमा बिदा हो गइली। बाकिर रेशमा के नसीब में सुख कहाँ रहे। रात-दिन के खोबसन। सास-ननद के ठोना-'लरपुता, मोटर साइकिल नाहिये देलन सन। झोंटा धके निकाल ससुरी के।' रोज के ठनहथ हो गइल रहे।

एक दिन रसोई घर से किरासन तेल के संगे कांच मांस के मंसाइने गंध सुंघ के पड़ोसी लोग दउरल। जरत रेशमा के आग बुझावे लागल लोग। देखल लोग कि स्टोव फूट के पसरल तेल अमोध कइले बा।

रेशमा के छपरा हस्पिटल में भरती करावल गइल। उ जिनगी आउर मउअत से संघर्ष करत रहली। ओही घड़ी एगो डॉक्टर इमरजेन्सी वार्ड में आइल। रेशमा पर नजर पड़ते उनकर चेहरा सुख गइल। बेचैनी बढ़ गइल। उ खून चढ़ावे खतिर पुकरलें। बाकिर खून देवे वाला रहे के। खून देवे वाला त कफन देवे के प्रतिक्षा में रहे। डॉक्टर के त जइसे ठकुआ मार दिहलस। खुद आपन खून दिहलें। रेशमा धीरे-धीरे आपन आँख खोललीं आ नर्स से पुछली-'हम कइसे बांच गइनी ए बहिन!' लगली पुका फार के रोवे। नर्स चुप करावे लागल। 'देखऽ हो दे डाक्टर साहेब आवत बानीं। उहें के आपन जिनगी देके तोहरा के बचवले बानीं।' रेशमा-'अभिषेक! कह के बेहोश हो गइली। दुनू जाना के आँख से लोर गंगा-जमुना बन के उमड़े लागल। अभिषेक अतीत में लवट के सोंचे लगलें- 'रेशमा के अइसन गंजन के दोषी हमहीं बानी नू।' रेशमा धीरे-धीरे आँख खोललीं बाकिर उनका उदास चेहरा से जिनगी भागत नजर आवत रहे। अभिषेक हालात के भांप के गम्भीर होत जात रहस तले रेशमा धीरे से लगे बोलवली आ कहे

www.bhojpurisahityangan.com

लगली-'अभिषेक, जे जिनगी ना ढोवे सकलऽ त ल अब लाश ढोवऽ । ' इहे कहके उनका गोदी में मुड़ी धके हमेशा-हमेशा खातिर एह दुनिया से चल गइली । अभिषेक पुका फार के रोवे लगलन । मिलन उनका खातिर नदी के दूगो किनारा हो गइल रहे । अभिषेक के बुझात रहे जइसे उनकर अतीत दुआर पर आके पिआसे लवट गइल होखे । शायद हमरा आ रेशमा के नसीब में इहे लिखल रलऽ ।

काऊ फादर

बनारस खातिर एगो कहावत कहल जाएला :-

"राँड़-साँढ़-सीढ़ी-सन्यासी, एसे बचे ते सेवे काशी "

एक बार शहर में एगो साँढ़ बहुत तंग कईले रहल । ओकरा के बनारस भेजे के प्लान बनल । जहाँ बनारस पर नौ मन बोझा तहाँ एक मन अउर सही । तब अंग्रेजवन के ज़माना रहे । लोग सोचे लागल रेलवे में आवेदन त अंग्रेजी में भेजे के होखी । ओबेरा शहर के जोन बनारस पड़े । अब साँढ़ के अंग्रेजी का होखेला ? बहुत सोच विचार भईल । हल निकलल "काउ फादर" के रूप में । सबके मीटिंग भईल, रेलवे में चिट्ठी लिखाईल, काउ फादर जातारें, कृपया वहाँ से कोच भेजे । अंग्रेजी के भाषा बड़-छोट सभे YOU अउर HE कहाला । तुम और आप में कौनो फर्क ना । अब बनारस में बुझाइल कि काऊ फादर मने कौनो होली फादर,या चर्च के फादर होखीहें । उहाँसे फर्स्ट क्लास सैलून भेजल गईल । एने शहर के लोग बूझल अंग्रेजवन के दिमाग के कौनो ठिकाना ना हऽ । पता ना एतना अच्छा कोच काहे आयिल बा । बान्ह छान्ह के चढ़ा दिहल लोग । अब साँढ़ के ओहिमे दू दिन में अउर माथा खराब हो गईल ।

बनारस स्टेशन पर गाडी के इन्तजारी होखत रहे । भाई फादर जी आवत रहले । सभे हाथ में फूल माला लिहले फादर जी के इन्तजार करत रहे । बैंड बाजा बाजे के पूरा तैयारी रहे फादर के अगुआई में । धीरे-धीरे ट्रेन प्लेटफार्म पर पहुँच गईल । सैलून के दरवाजा खोलाईल ।

बदहवास साँढ़ ओहि मे से निकल के अफरा- तफरी मचा दिहलें । अब इ लोग का बैंड--बाजा बजाई । सभे के बैंड बजा दिहलन उहे ।

समता सहाय

सिवान, बिहार के रहे वाला समता सहाय जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। इहाँ के लेखनी में व्यक्तिगत अनुभव के बहुत कुछ पढ़े के मिलेला। गायन के क्षेत्र में भी समता जी के नाम बा। अभी इहाँ के दिल्ली में रह रहल बानी।

बेटी के बियाह गीत

समता सहाय

बेटी के बिआह में तरह -तरह के विचार विमर्श होखत रहेला आपस में। माई- बाप के अलग,बाप- बेटा के अलग, साथी- समाजी से अलग, हित नातेदार से अलग। बाकिर बाप-बेटी के बीच जवन विचार होखेला ओहि भाव के दर्शावत एगो गीत :-

आम से मिठी महुअईया हे बाबा कि,
अरे बाबा महुआनी लागी गईले कोच
साजन लोगवा घेरि अईले हो कि अरे बाबा ...

कोठा से ऊपर कोठरिया हो बाबा,
कि अरे बाबा झिरी झिरी लागेला
किवाड़ साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

ताहि कोठा सूतीले बेटी के बाबा,
कि अरे बाबा ठंढी ठंढी चलेला बेयार
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

ताहि पईसी जगावेली बेटी हो कवन बेटी,
अरे बाबा काहे रे सूतीला निरभेद
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

कुछु रे सूतीला कुछु जागीला हे बेटी,
कि अरे बेटी कुछु रे दहेजवा के सोच
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

गईया में दिहनी भँइसिया ए बेटी
कि अरे बेटी बारहो बरन धेनू गाई
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

एतना दहेज़ हम बेटी के दिहनी कि
अरे बेटी मुखवो ना बोलेला दामाद
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

एतना दहेज़ रउआ हमरा के दिहनी,
कि अरे बाबा छुडी लागि रुसेले दामाद
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

मुहर तुड़ाई बेटी छुड़िया बनवयिनी,
कि अरे बेटी सोनवा के मुठीया लगाई
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

जब रे दुलारी के बेटा छुडी हाथ लिहले,
कि अरे बेटी नई नई करेले सलाम
साजन लोगवा घेरि अईले हो ...

www.bhojpurisahityangan.com

बंगाल सूबा में शोरा के व्यापार (भाग 2)

फोटो साभार : पी.राज सिंह

(गतांक से आगे : पिछला अंक में छपरा के स्थानीय इतिहास के एगो अल्प ज्ञात पहलू पर चर्चा भईल रहे। हमनी के देखनी सन जे बंगाल सूबा में डच साहसी व्योपारी आके साल्ट पीटर (शोरा) के व्यवसाय करत रले हन। शोरा (साल्ट पीटर) ऊ लोग आदमी आ जनावर के मल मूत्र से बनावत रहल हा आ ओकर सप्लाई यूरोप के देशन में करत रहल ह। शोरा के फेरु रिफाइन कई के पोटासियम नाइट्रेट में बदलल जात रहल हा। पोटासियम नाइट्रेट के उपयोग बारूद बनावे में होत रहल हा। ई बारूद दुनिया के देशन पर कब्जा करे में इस्तेमाल होत रहे। पूरा बंगाल सूबा में छपरा शोरा के उत्पादन के एगो प्रमुख केंद्र के रूप में रहल ह।)

(1757 के पलासी युद्ध के बाद देश में अंग्रेज़न के शासन पक्का आ मजबूत हो गईल। धीरे धीरे डच व्यापारी आपन बोरिया बिस्तरा बान्ह के देश से चल गईले। आज के छपरा जिला स्कूल के भवन कभी डच सब के निवास, अन्न के भण्डार आदि रहे।)

एह बीच डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC) के एगो अउर बड़ भवन के पता लागल बा। ऊ भवन ह आज के जिलाधिकारी के कार्यालय के ठीक पच्छिम तरफ सड़क पार के भवन। आजकल एह भवन में सब प्रकार के रिकार्ड रखाला आ एही भवन में परिवहन भवन सहित एकाध गो अउरी सरकारी कार्यालय बाड़ी सन। मध्य काल से आधुनिक काल ले एशिया आ अफ्रीका में व्यापारिक , सामरिक , राजनीतिक हित के बढ़ावे खातिर बारूद के प्रयोग के इतिहास पावल जाला। फिर भी एशिया आ यूरोप के बीच व्यापार में शोरा एगो सहायक चीज ही रहल ह।, वजन से मात्र 16% , मुख्य वस्तु कपास , मसाला आदि रहल ह। जहां तक बिहार आ बंगाल के प्रश्न बा इहाँ यूरोप के प्रमुख देशन में डच आ अंग्रेजन के उपस्थिति ही इतिहास के पन्ना में प्रमुखता से दर्ज बा। एह क्षेत्र से व्यापार के वस्तु में मुख्य रूप से शोरा ही रहल ह।

भारत में मध्यकाल में शोरा

मुगल साम्राज्य के विस्तार के कारनन में एगो कारन बारूद आ तोप के सफल प्रयोग भी रहल ह। शोरा के प्रयोग

पी राज सिंह

छपरा , बिहार के रहे वाला पी राज सिंह जी आर एस कालेज सिवान मे एसोसियेट प्रोफेसर बानी , नया तकनीकी से जुड़ल अपना मातृभाषा खाति हर तरह से लागल भीड़ल , अपना विशेष कैमरा से जवार के हर पहलू के कैद करत भोजपुरी भाषा के एगो साहित्यिक कलात्मक उंचाई दे रहल बानी। एह घरी इँहा के छपरा मे बानी।

आ . उत्पादन के तकनीकि जानकारी मुगलन के रहल हा लेकिन, उत्पादन ओह जमाना में विकेन्द्रित रहल ह । मुगल सैनिक एकरा के बाजार से कीनत रहले सन। केन्द्रीय स्तर पर एकर उत्पादन ना होत रहे। 1580 आवत आवत जहांगीर के शासन काल में मुग़ल सैनिक शोरा के उत्पादन आ बारूद निर्माण के कारोबार अपना हाथ में ले लेहले।

15 वीं शताब्दी तक भारत के राजा लोग भी शोरा के भण्डार बनावे के प्रयास शुरू कई देले रहे। बंगाल आ जौनपुर सल्तनत के दरबारी विद्वानन द्वारा बनावल फारसी शब्दकोशन में शोरा उत्पादन के विस्तार से वर्णन मिल जाला । ई सब सन्दर्भ एह से महत्वपूर्ण हो जात बा कि बंगाल आ जौनपुर के बीच के भूभाग बाद में शोरा उत्पादन के प्रमुख भाग के रूप में प्रसिद्ध भईल । कुछ इतिहासकारन के अनुसार 1460 इस्बी तक (यानी ईस्ट इंडिया व्यापार शुरू होखे के पहिलहीं से) फारसी सोत से ई साफ हो जात बा कि बंगाल आ जौनपुर राज में कुछ राजा के ओरि से संगठित रूप से शोरा के उत्पादन होत रहल ह। इतिहासकार लोग के ई समूह मानेला कि भारत एह कला में यूरोप से लगभग एक हजार बरिस आगा रहल ह।

भारत में डच आ अंग्रेज़न के आगमन 1600 इस्बी के बाद भईल। एह दुनो शक्ति के अईला से शोरा के व्यापार सम्बन्धी बहुत दस्तावेज आज उपलब्ध बा। शोरा उत्पादन जवन एगो छोट ग्राम कला रहल ह आ जेकर खरीदार छोट मोट कारोबारी रहले , अब एगो बड़ संगठित अंतरराष्ट्रीय व्यापार के हिस्सा बन गईल जेकर आर्थिक , सामरिक , राजनीतिक महत्व बहुते बढ़ गईल।

बारूद :

बारूद के तीन मुख्य अवयव होला , पोटासियम नाइट्रेट , गंधक आ चारकोल (कार्बन)। एकरा में पहिलका सबसे अधिका महत्व के बा। गंधक आ चारकोल आसानी से बाजार में मिल जाला। लेकिन शोरा जेकरा से पोटासियम नाइट्रेट बनावल जाला आसानी से ना मिले। पोटासियम नाइट्रेट बारूद में ऑक्सीडाइजर के काम करेला। गंधक के मौजूदगी में चारकोल में आग तेजी से पकड़ेला। एह क्रिया में अधिक से अधिक ऑक्सीजन के सप्लाई पोटासियम नाइट्रेट से होला। अँगरेज़ 18 वीं शताब्दी के अंत ले आपन तोपन में पोटासियम नाइट्रेट , गंधक आ चारकोल 6:1:1 के अनुपात में करत रले हन। शोरा के अउर सब भी उपयोग बाड़ी सन जइसे कि आतिशबाजी , कपड़ा रंगे में , चमड़ा सुखावे में , साबुन बनावे में , धातु कर्म में आदि। बाकिर आधुनिक युग के प्रारम्भ में शोरा के उपयोग मुख्य रूप से बारूद बनावे में होखे लागल।

यूरोप के देश अपना अनुभव से जान चुकल रहले सन कि बारूद के तेजी से ना बनावल जा सके। युद्ध के समय जतना बारूद लागी ओतना ना मिल सके। एह से शान्ति के समय भी कबो बारूद के मांग कम ना भईल । कीन कीन के एकरा के गोदाम में जमा कईल जात रहे।

शोरा , बारूद के उत्पादन :

शोरा प्राकृतिक रूप में भी पावल जाला लेकिन ई अतना ना होला कि एकरा से अतना बारूद बन सके कि युद्ध में ओकर प्रयोग हो सके। पुरान देवालन पर नोनी लागल त सभे देखले होई। नोनी में ऊजर रंग के जवन चीज लउकेला उहे शोरा ह। ई ऊजर पदार्थ पुरान गाय भईंस के गोबर , पुअरा आदि पर भी कभी कभी उग जाला।

1803 से प्रथम विश्व युद्ध तक पोटासियम नाइट्रेट के

डच ईस्ट इंडिया कंपनी (VOC)

औद्योगिक उत्पादन नाइट्रिक अम्ल , विद्युत आर्क लैंप आ वायुमंडल में नाइट्रोजन के संजोग से होखे लागल । बाकिर आधुनिक काल के प्रारम्भ में शोरा के उत्पादन आदमी आ जानवर के मल मूत्र, राख, घास-भूसा के उपयोग से कइल जात रहे।

असल में एह परिवर्तन के पाछे एगो बैक्टीरिया बा जे कार्बनिक पदार्थ के खा के आपन बिष्ठा बाई प्रोडक्ट के रूप में ऊजर पदार्थ के छोडेला । इहे शोरा ह । लेकिन ई आधुनिक खोज ह । मध्य काल में बैक्टीरिया के खोज ना भईल रहे । ऊ बैक्टीरिया के नाव ह , क्लॉस्ट्रीडियम बोटुलीनुम बैक्टीरिया । एह क्रिया के पूरा करे खातिर बैक्टीरिया के कम ऑक्सीजन वाला क्षारीय माध्यम के जरूरत होला । एही जैविक क्रिया के सुगम करे खातिर एगो 2X1.5X1 गज के गड़हा बनावल जात रहे । एही गड़हा में आदमी आ जानवरन के मल मूत्र , घास भूसा आदि भरा जात रहल ह । बाद में एह कम्पोस्ट के सुखावल जाई, फेर मूत पानी आदि से भिजावल जाई, एक दूहाली तर ऊपर कईल जाई । लगभग साल भर एह क्रिया के कईला के बाद सूखे के छोड दियाई सूखला पर नोनी नियर जामल पपड़ी के बटोर लिहल जात रहे । भिंजवला पर जवन पानी नीचे सरवत रहे , ओकरो के भी नरी बना के बटोर लेहल जात रहे । फेरु ओह पानी के ढ़ेर देरी ले उबालला के बाद नीचे बइठल ठोस के बटोर लिहल जात रहे । इहे ठोस पदारथ शोरा ह ।

जौनपुर से बंगाल तक , मुख्यतः छपरा , शोरा उत्पादन के केंद्र होखे के कई गो कारण हो सकेला ।

1. प्राकृतिक रूप से एह क्षेत्र में शोरा पहिले से भी पावल जात रहल ह । बरसात में नदी के पानी उफन के जमीन पर पसर जाई । ई पानी एक दू महीना भा भर बरसात लागल रही , जेकरा चलते माटी में उपलब्ध सब तत्वन के लवण पानी में घुल जात रहल ह । कच्चा माल के रूप में कार्बनिक अवशिष्ट आदमी आ जानवरन के मल मूत्र आदि असानी से मिल जात रहल ह । जाना मजूरा भी सस्ता आ सहजे उपलब्ध रहले हँ । पानी सुखला के बाद ई लवण सब जमीन के ऊपर पपड़ी के रूप में बांच जात रहल ह ।

2. एह क्षेत्र के तापमान शोरा के औद्योगिक उत्पादन खातिर बैक्टीरिया के क्रिया के बढ़ावे में उपयुक्त रहल ह ।

3 .एह क्षेत्र में क़च्चा माल के रूप में कार्बनिक अवशिष्ट , आदमी आ जानवरन के मलमूत्र आदि भी प्रचुर मात्रा में पावल जाला । सस्ता जाना मजूरा के बारे में कुछ कहहीं के नइखे ।

4 . ओह घरी सड़क अच्छा ना रहली हा सन । सारा कारोबार जल मार्ग से होत रहल ह । सरजू आ गंगा से हुगली तक जल मार्ग बहुत सुगम आ सस्ता रहल ह । भोजपुरिया भाग से अफीम आ नील के भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार होत रहल ह । बाकिर शोरा-व्यापार के महत्व कुछ दोसर रहल ह ।

लेखक :देवेन्द्र नाथ तिवारी

फोटो साभार : चेतन कुमार , मनेर

भोजपुरी संस्कार गीतन में नीति मूल्य

प्रस्तावना

कवनों लोक-संस्कृति अपना गीत-संस्कार आ परंपरा के माध्यम से लोक-जीवन में सामंजस्य अउर मूल्यन के जीवंत बनावेले। जदी मानवीय व्यवहार के सांस्कृतिक आयोजनन के पृष्ठभूमि में समझे के कोशिश कईल जाय तऽ भोजपुरी लोक-संस्कृति एह नजरी से विकसित संस्कृति कहल जाए के हकदार बिया। भोजपुरी संस्कार-गीतन में नैतिक मूल्यन के संप्रेषित करे के क्षमता पऽ कवनो तरीका के शक शुबहा नईखे कईल जा सकत। ई अकाट्य, अभाज्य आ निर्विवाद रूप से सिद्ध सत्य बा। भोजपुरी संस्कार-गीतन में जवन नैतिक मूल्यन के भाष्य कईल गईल बा ऊ अपना आप में काव्यालोचना के प्रतिमान बा आ भोजपुरी के साहित्यिक समृद्धि के प्रतीक भी। ओइसे तऽ भोजपुरी संस्कार-गीतन के केंद्र में मानवीय जीवन के प्रत्येक अंग के चित्रण भइल बा बाकि उत्तरोतर विकास के कई चरण में एह संस्कार-गीतन के भाषाई स्वरूप में बदलाव देखे के मिलेला। असल में भोजपुरी संस्कार गीतन के अंतर्वस्तु विश्लेषण पऽ केंद्रित हमार शोध अध्ययन से ई निष्कर्ष प्राप्त भईल कि भोजपुरी संस्कार-गीतन में नैतिक मूल्यन से संबंधित भाव में कवनों परिवर्तन नइखे आईल। ई एगो सुखद संकेत बा काहें कि आज भोजपुरी पऽ चहुंओर से सांस्कृतिक संक्रमण के खतरा आ दबाव बढ़ रहल बा। प्रस्तुत शोध अध्ययन में संस्कार-गीतन में समाहित नैतिक मूल्यन के देखे के दृष्टि प्रस्तावित करे खाति एगो छोट बाकि महत्त्वपूर्ण प्रयास कईल गईल बा। समाज-संस्कृति, मानव जीवन आ प्रकृति से संबंधित ई शोध एही से अधिक प्रासंगिक हो गईल बा काहेंकि भौतिकवादी युग में एकर विलुप्त होखे के संभावना बढ़े लागल बा।

लोक-मानस आ नैतिक मूल्य

साँच पूछि तऽ लोक-मानस के आधारशीला पऽ ही लोक-साहित्य के सृजन होखेला अतने ना सृजन आ निर्माण के ई प्रक्रिया सतत चलत रहेला। एकर आधारभूत तत्वन में नैतिकता आ धार्मिकता के संरक्षण, लोक- संस्कृति के अभिव्यक्ति, सुचिता आ स्वाभाविकता, भाषा के वाचिक प्रयोग, रूढ़ि आ परंपरा के निर्वाह आदि मौजूद रहेलन। एह संस्कार गीत में स्वाभाविक लौकिक नैतिक चिंतन अंतर्निहित बा। ई चिंतन मानवीय जीवन बोध आ दार्शनिक पक्ष दूनो से समृद्ध बा। असल में इहे भोजपुरी लोक संस्कृति के जीवन

दर्शन भी हऽ। बतौर बानगी ई भोजपुरी लोरी गीत देखीं-

ए चंदा मामा, आरे आवऽ पारे आवऽ

सोना के कटोरिया में, दूध भात लेते आवऽ

बबुआ के मुहवाँ में घुटुक...

एह लोरी गीत में मनोवैज्ञानिक रूप से रिश्तन के अहमीयत के स्थापित कईल गईल बा- बबुआ ई चंदा तोहार मामा हवें जवन हर वक्त तोहरा साथे रहियन। तोहार रक्षा करिहन। दरअसल एह गीत के मूल में जाके पड़ताल कईल जाय तऽ लइका के मामा के मौजूदगी उहाँ संभव नईखे बाकि जब लईका के अवचेतन मन में संस्कार मूल्यन के निरूपित कईल जा रहल बा तऽ उनकर करीबी नातेदार/रिश्तेदार से परिचय करावल जरूरी बा। बाकि अइसन समय मामा के अनुपस्थिति के चलते सांकेतिक (सिंबोलिक) रूप में चंदा से तुलना कईल जात बा। अब एकरा के तनि दोसर संदर्भ में देखल जाय तऽ एह पृथ्वी के अलावा ब्रह्मांड से भी परिचय करावे के प्रयास कईल जा रहल बा।

एगो अउर पलना गीत देखीं-

अरे झूल-झूल, झूल-झूल

बाबा के दुलरूआ झूल,

दादी के खेलवना झूल

झूलना झूलेला दुलरुआ रे

बबुआ झूलना...

एह गीत में भी दुलार, नेह जइसन भाव तऽ भरले बा बाकि संबंधन के बतावल गईल बा साथे साथ लईका के जीवन आदर्श जइसे श्रवण कुमार, लाल बहादुर शास्त्री आ जवाहर लाल जइसन बने के बात भी सीखावल जा रहल बा।

बुझउवल आ नैतिक मूल्य

सांख्य शास्त्र में बतावल गईल बा कि सृष्टि में आदमी के जबसे आँख खुलल तब से ऊ सबसे पहिले बुद्धि के विकास में लागल बा। दार्शनिक लोग एह बुद्धि के 'अनुभूति' आ 'स्मृति' दूगो रूप में बतवले बा। वैदिक साहित्य से लेके लोक साहित्य तक में कहल गईल बा, 'बुद्धि बल हऽ'। एही बुद्धि के बढ़न्ती आ शिक्षा जइसन मूल्यन के संवर्धन खाति मनोवैज्ञानिक प्रयासन में भोजपुरी बुझऊअल(पहेली), बोधोक्ति आदि के आपन एगो अलगे मुकाम बा। बुझऊवल एक ओर जहाँ लड़िकन खाति अचरज आ रहस्य के खजाना होखेला उहें दोसरे ओर बाल-मन के तर्कशील अउर विचारवान बनावेला। तऽ आईं, पहेलियन के पांत से एगो पहेली के बतौर बानगी निरेखल जाय-

हाथ ना गोड़ ना, पाँव ना पेटी, घरे-घरे घूमे ई केकर दू बेटी

जेकरा घर ई बास बनावे, ओकरा घर नास करावे।

(उत्तर: चिंता)

भोजपुरी में एगो कहावत कहल जाला कि 'चिंता से चतुराई घटे, दुख से घटे शरीर।' ई तथ्य आधुनिक मनोवैज्ञानिक शोध द्वारा प्रमाणित भी हो गईल बा। एह से पहेली के रूप में एगो मनोवैज्ञानिक चेतावनी के प्रति आगाह करत सकारात्मक सोच जइसन मूल्यन के बढ़ावे के बात सहज सरल तरीका में समझा दिहल गईल बा।

मनोवैज्ञानिक लोग मन के तीन गो भाग में बंटले बा- अचेतन, चेतन आ अतिचेतन। जागृत अवस्था में जेकरा बदौलत रोज़मर्रा के कार्य-व्यवहार चलत बा उहे मन के चेतन अवस्था ह। अचेतन अवस्था में संस्कार आ आदत जइसन मूल्य गतिशील रहेलें। सुतल-जागल दूनो अवस्था में ई सक्रिय रहेला। आ एह दूनो के बाद आखिरी परत 'अतिचेतन' के कहल जाला। एही अतिचेतना के विकास खाति ध्यान लगावे के बात हमनी के पुरनिया कईले बा लोग।

भोजपुरी के सबसे बड़ विशेषता

साँच कहीं तऽ भोजपुरी के सबसे बड़ खासियत ओ हर परिस्थितियन-परिघटना के गेय अभिव्यक्ति में व्यक्त करे के परिपाटी ह जवना के अंतर्गत लोक गीत, चेतना गीत, श्रम गीत, जाति गीत, कृषि गीत आ अंतत: संस्कार गीतन के

माध्यम से संपूर्ण संस्कार आ संस्कृति के स्वरूप विवेचित बा। एह संस्कार गीतन के सबसे बड़हन विशेषता बनावटीपन से अलगाव, सरल–सहज अभिव्यक्ति आ स्वयं के जगहा पऽ समूह के व्यापक भाव जाहिर कईल बा।

भोजपुरी संस्कार गीत में स्वच्छता के मूल्य

भोजपुरी संस्कार गीतन में सांस्कारिक, सांस्कृतिक आ दार्शनिक तारतम्य बहुत स्वभाविक अउर सहज बा। अइसना में लोक संस्कृति के चौपाल के धूमिल स्मृतियन के अनदेखी नइखे कईल जा सकत जवन मानवीय मूल्यन के जागृत स्रोत बाड़ें। एह मूल्यन के झलकी एह संस्कार गीत में साफ –साफ झलकत बा अतने ना एहिजा प्रेम-भक्ति के पराकाष्ठा के भी उद्घाटित कईल गईल बा-

गाई के गोबरे महादेव अंगना लिपाई

गजमति आहो महादेव चउका पुराई

चनन चीरी चीरी, पिढ़ई बनाई हे

ताहि पीढ़ही बइठे ले महादेव, जटा ओरमाई हे

एह संस्कार गीत में मूलत: आपन इष्ट के वंदना कईल गईल बा बाकि एकर भाव पक्ष मानवीय चिंतन आ चेतना के अद्भुत आधारशीला पऽ खड़ा बा। एह में गाय के माता के रूप में आ उनका गोबर के अमृत के दर्जा दिहल गईल बा। अतने ना कवनो भी शुभ परोजन के प्रारंभ में स्वच्छता आ शुद्धता के प्रधानता देवे के बात कईल गईल बा काहें कि गोबर से लीपल-पोतल घर में कवनो कीटाणु ना आवेंलन। एकरा साथे-साथ ई संस्कार गीत मनुष्य, जीवन, समाज, प्रकृति आ पर्यावरण के पारस्परिक संबंधन के भी अत्यंत सहजता से व्यंजित करत बाड़ें।

निष्कर्ष

नैतिक मूल्य से संबंधित कवनो बिंदु भोजपुरी क्षेत्र चाहें भोजपुरियन से अछुता नइखे। भोजपुरी सदियन से मानवीय संस्कार आ संस्कृति के समृद्ध करे खाति प्रयास कइले बिया। आजु जहां एक ओर आपन देश में विविधता, गंगा-जमुनी तहजीब, सौहार्द्र आ आपसी भाई-चारा जइसन सामाजिक मूल्य खतरा में बाड़ें उहें दोसरे ओर हमनी के लोकजीवन आ लोक-संस्कृति में गीत- संस्कार- परंपरा के बूता प सामंजस्य-समता आ आपसी लगाव-जुड़ाव जइसन मूल्य हजारन साल से जीवंत अउर गुलजार बाड़ें। इहो कहे के जरूरत ना पड़ी कि कवनो लोक भाषा महज गीत-संगीत आ वाचिक अभिव्यक्ति भर ना होखेले बलुक ओकरा में एगो पुरहर परंपरा, संस्कृति आ जीवनमूल्य समाहित होखेले। अइसना में जब इतिहास बतावता कि जइसे-जइसे सामाजिक-नैतिक मूल्यन के प्रति समाज के रुझान कम भईल बा, जीवनपद्धति आ सांस्कृतिक आंदोलन कमजोर भईल बा तऽ दलाल प्रवृति बढ़ल बिया आ मय समाज बिखराव के शिकार भईल बा। एह से आईं नैतिक मूल्यन के शिक्षा अपना लोक संस्कृति से लीहीं आ एकरा संरक्षण के दिशाई कुछ ठोस आ कारगर कदम उठाईं।

संदर्भ ग्रंथ : अखिलेश्वर सिन्हा. (2008). *भोजपुरी लोकगीतों में संस्कार. पटना : जानकी* प्रकाशन.

भुनेश्वर भास्कर. (2007)

भोजपुरी लोक-संस्कृति और परम्पराएं. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार .

भोजपुरी भाषा लोक साहित्य एवं संस्कृति. (2014). सिपाही सिंह 'श्रीमंत' . पटना : जागृति पब्लिकेशन .

विद्या सिन्हा. (2011). भारतीय लोक साहित्य परंपरा और परिदृश्य . नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार .

विश्वामित्र उपाध्याय. (1997). *लोकगीतों में क्रांतिकारी चेतना . नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार.*

देवेन्द्र नाथ तिवारी

देवरिया, युपी के रहे वाला देवेंद्र नाथ तिवारी जी , द संडे इंडियन भोजपुरी पत्रिका के कॉपी एडिटर रहि चुकल बानी। इँहा के स्वतंत्र पत्रकार भी बानी आ एह घरी वर्धा महाराष्ट्र मे आगे के पढाई कई रहल बानी। कई गो शोध परक लेख अलग अलग पत्रिकन मे प्रकाशित हो चुकल बा। आखर पेज से शुरु से जुड़ल बानी आ भाषा साहित्य प कई गो लेख आखर प भी लागि चुकल बा।

बेटी बियाह : तइयारी

अनूप श्रीवास्तव

का रउआ के अपना बेटा-बेटी के बियाह के तइयारी करे के बा ? जो राउर जवाब हाँ में, बा त कागज कलम उठाईं आ लाग जाईं तइयारी में, आ नाहियो बा त मनोरंजने के नाव पे चलि आईं।

सबसे ऊपर श्री गणेशाय नम: लिखीं, फेरू अपना देवी देवता, गुरु आ बड़ बुजुर्ग के धियान क के, शुरु हो जाईं। चलीं सबसे पहिले लिस्टवे बनावल जाओ । घर परिवार, पास-पड़ोसी, इयार-दोस्त, ममहर, फुफहर,समधियान, ससुराल, सढ़ुआन, बहिनवरा, आफिस-दफ्तर, स्कूल से जुरल सगरो खास लोगन के नाव जेकरा के नेवते के बा। खाली एतने करत में, रउआ के आनन्द मिलल सुरु हो जाई, ढेर लोग अइसन मन परी जेकरा के रउआ भुला गइल होखब। एकहक जने के हाव भाव, आ ओ लोग से जुरल नीमन-बाउर खीसा-कहानी सगरो आँखि के सोझा घूम जाई, आ बुझाई कि ई लोग अब्बे से जूटे लागल बा। खैर जब एतना लोग आई त ओ लोग के रुकला, ठहरला, खइला-पियला, आ खातिरदारी के बारे में, सोचल जरूरी बा। केकरा के केकरी साथे सेट कइल ठीक रही भा केकरा से केकर पटरी ना खाई।

जहाँ से बियाह करे के बा ओइजा से लोगन के आए जाए खातिर साधन के इन्तजामो करे के पड़ी । फेरू मौसम के हिसाब से, बिस्तरा-बिछौना के ब्यवस्था, जो कहीँ छत्ते पे भा खुलहा में, सुतावे के बा तबरखा-बुन्नी, आन्ही-पानी अइला पे वैकल्पिक ब्यवस्था कइल। टेन्ट-कनात, कुर्सी, बर्तन त मिल जाला बाकी, बाजा-बिजली आ गाड़ी, जनवासा खातिर पहिले से बुकिंग करावल जरूरी हो जाला। एही तरह से पंडित, नाऊ, हलवाई, धोबी, मोची केतनो खास होखे, ओकरा के पहिले से नेवतल जरूरी हो जाला ना त ऐन मोका पे पहुत झेलावे न सन । झेलावे के बाति होखे त दर्जी भाई लोग से नीमन उदाहरण कहँवा मिली। त रेडीमेड आइटम के छाँड़ि के जउनो सूट-साट सिआवे के होखे ओकरा खातिर पहिलवें चेतल जरूरी बा, ना त हम देखले बानी मोका पे लोगन के कौनेंगा रोआइन परान हो जाला । जे रउए जिम्मे सगरो ब्यवस्था होखे त ओकरा के कगजे पे लिख लेईं कि, केकरा से का करावे के बा।

सगरो करवन के जिम्मेदार लोगन में बाँट देईं आ हर गोल में, एगो मेठ बना देईं। जेकरे जिम्मे बिजुली-बत्ती के जिम्मा होखे ऊहे जेनरेटर आ तेल के निगरानी करे, जेकरे जिम्मे खइला-पियला के जिम्मा होखे ऊहे बरफ, दूध चाह के स्टाक चेक करत रहे। जेकरे जिम्मे गद्दा-बिछौना होखे ऊहे नहाए, धोए आ दतुअन-मंजन के ब्यवस्था देखे । कुछ लोग के पसन्द के हिसाब से नाच-आर्केस्ट्रा के जिम्मा दीहल जा सकेला, कुछ लोगके फालतू भीड़ बटोरइला से बचे खातिर लगावल जा सकेला। कम उमिर वाला लइका-लइकिन में,शादी-बियाह के उत्साह बहुत होला, ओकनी के छोट-मोट कार देहला पे ऊ बहुत खुसी-खुसी करे लन सन। जइसे कि, एक हाली पूरा घर में, राउण्ड मरवावल कि, केहू खइले बिना बाकी त नइखे, सबके सुत्ते के ब्यवस्था हो गइल बा कि नाही, तकिया, चदरा, पानी, बेना, कछुआ छाप अगरबत्ती जइसन चीजन के जहँवा जरूरत होखे ओइजा पहुँचावल। गुसलखाना में भा दुआरे कल पे लोटा, बाल्टी, तउलिया, साबुन थोड़े-थोड़े देर पे चेक करावल। हम त ई कहब कि, मेठवन के अपना से नथले रहीं आ जरूरत केहिसाब से तनी-मनी डाँट-फटकार के साथे, पुचकारत रहीं आ शाबासी दीहल जिन भुलाईं।

अक्सरहा अइसन देखल गइल बा कि, आदमी रुपया-पइसा त खूब खर्च करेला बाकि, थोड़-मोड़ ब्यवस्था में कमी के चलते भद्द हो जाला आ खड़गंजी लोग के मसाला मिल जाला। रउआ सोचत होखब कि, आजु मैरेज हाउस, होटल, रिसार्ट्स आ वेडिंग प्लैनर के जमाना में, ई कुल हम कइसन राग छेड़ले बानी, बाकि, हम कहब कि, जमाना केतनो आगे

अनूप श्रीवास्तव

देवरिया , उ. प्र. के रहे वाला अनूप श्रीवास्तव जी कला प्रेमी हई , संगीत गीत से इँहा बहुते गहिराह लगाव ह। भोजपुरी मे इँहा के निरंतर लिख रहली बानी। इँहा के गीत आ कविता बहुत ही सामयिक आ भाव से भरल होला। अनूप जी एह समय दिल्ली मे रहत बानी।

बढ़ि जाए लोगन के जरूरत आ देखभाल के पैमाना ऊहे पुरनके रहेला। कइ बेर बड़हन-बड़हन चीजन के आगे छोटका पे धियान ना जाला, जइसे अगर घर के मेहररुअन के 4 गो ढोलक के जरूरत बा त ओकर ब्यवस्था करे के चाही, हमार परंपरा आ संस्कृति एतना बिसाल बा कि, बियाह के पहिले से बियाह के बाद ले कुछ ना कुछ घटले रहेला, बस टाइम पे ओही के उपरा दीहलब्यवस्था कहाला। सबकुछ हँसत-गावत होला त नीमन लागेला, लरिकन-मेहररुअन से घर आ जलसा के रौनक होला, त ओ कुल्हिन के पहनावा-ओढ़ावा, सौख, मौज-मस्ती के पूरा खयाल रखे के चाही। गिफ्ट भा उपहार हमेसा आ हर केहू के नीक लागेला, त बजट में, एकरा के जरूर जोरे के चाही। एकरी अलावा हर आदमी के मान-सम्मान के खास ध्यान देवे के चाही, केहू अपना के कगरिआइल ना बूझे। टाइम- टाइम पे एक चक्कर सबकी आगे आपन हाजिरी लगावल जरूरी होला, एही बहाने ओहू लोग के हाजिरी लाग जाला। बाहरी लोग आ हीत-नात के चक्कर में, अपना करीबी लोग के उपेक्षा ना होखे के चाही, जेआइल बा ऊ त नीमन-बाउर ले-दे के चलि जाई, बाकी, सथवें वाला लोगवा हमेसा कार आई। सहरिया बियाह में त, सब ओरा गइल बा । बहु - भोजवा के नाव रिसेप्सन धरा गइल बा। बस ओही में, खान-पान, लीहल-दीहल, नाच-गान सब हो जाला। आदमी अइसे वापस होला जइसे सनीमा छूटल होखे।

बरक्षा, तिलक, आ बियाह के अलावा बहुत छोट-मोट रसम होली सन, जवना के आपन मजा, महत्व आमान्यता बा। मटकोड़वा, पितरनेवतनी, हरदी, ढोल के आवाज, गारी, बन्ना-बन्नी के गाना, सब खतमें तमाम बा। कोहबर से ब्यूटी पार्लर लेके सफर में, एगो नया चीझू जउन जनमल बा ओकर नाव धराइल लेडीज़ संगीत जवना में, गीत-गवई से ढेर डेक आ डीजे के हो हल्ला रहेला। बाँसे के माड़ो, हड़िया, पतुकी, परई, हाथी-घोड़ा, के जगहि फोल्डिंग वाला नकली आइटम आ गइल बा। रउआ सबसे हमार ईहे निहोरा बा कि, बेटा-बेटी के बियाह, हाऊ-हाऊ में, जिन निबुकाईं। ई कुल कौनो जग(यज्ञ) से कम ना होला। सगरो रसम, रीति, रिवाज के साथे खूब रस आ उल्लास के साथे करीं सभे। हर रसम के पाछे ओकर एगो धार्मिक, समाजिक आ वैज्ञानिक कारण जुरल बा।

जिनगी हमार

बालू के नेंव बाटे बालू के दीवार ,
फूस के पलानी हS जिनगी हमार।

छने में माशा छने में तोला ,
दू-चार छन के तमाशा ई होला,
जइसे फुलझरी के अंजोर, फेरु अन्हार,
बालू के नेंव बाटे बालू के दीवार
फूस के पलानी हS जिनगी हमार।

राम बनि के केहू ऊपर जब होला,
कतने पथल लउके अहिल्या के टोला,
पुलुई पर के खोंता हाजार गो बायार,
बालू के नेंव बाटे बालू के दीवार
फूस के पलानी हS जिनगी हमार।

अमृत के धार बहे मुंहवा से जिनिका,
विष के दोकान सजे हियरा में उनुका,
सोनवा के कलसा में मदिरा के धार,
बालू के नेंव बाटे बालू के दीवार
फूस के पलानी हS जिनगी हमार ।।

हृषिकेश चतुर्वेदी

बलिया युपी के रहे वाला हृषिकेश जी , आखर पेज से शुरुवात से ही जुडल बानी , ठेठ भोजपुरी आ भोजपुरी के खांटी शब्दन प बढिया पकड , गीत कविता गजल लिखेनी , एह समय इँहा के कलकत्ता मे कार्यरत बानी।

परधानिन

बनारस से जौनपुर के रस्ता में एगो लाल बत्ती गाड़ी खड़खड़ात रुक गईल । बनारस के मोंसिफ मजिस्ट्रेट शिवपुरन सिंह कोर्ट केस खातिर बनारस से जौनपुर सरकारी गाड़ी से जात रहलन । गाड़ी रुकला पर ड्राइवर से पुछलन -

"का भईल नन्हकू गाड़ी काहें रोक दिहलS ?

"साहेब, इंजन में कवनो खराबी बा " ड्राइवर बोनट खोलत कहलस । ओह ! मकेनिक बोलावे के पड़ी कवनो तार टूट गईल बा । ड्राईवर फोन कके मकेनिक बोलावे लागल ।

जज साहेब के चेहरा उतर गईल, का जाने केतना समय लागी मकेनिक के आवे में आ बने में ? आस पास खाली खेते-खेत लउकत रहल ।

गाड़ी से उतर के बेचैनी में सड़की पर टहरे लगलन । इहे रोड प पता न केतना बार आ जा चुकल रहलन । ई पहिला मौका रहे जे गाड़ी बिगड़ गईल । तले ले एगो ट्रेक्टर आवत लउकल शिवपुरन के, जेके बीस-एकईस बरीस के लड़िका चलावत रहल । उहो बत्ती वाला गाड़ी देख के ट्रेक्टर रोक दिहलस ।

"का दिक्कत बा गाड़ी में ड्राईवर साहेब, हम कुछ मदद करीं ?"

"इंजन के कवनो तार टूटल बा, मकेनिक बोलSवले बानी " ड्राइवर कहलस ।

"ओकरा आवे में त टाइम लागी, दूर बा सर्विस स्टेसन । साहेब हम ललन हईं, जौनपुर से नया ट्रेक्टर खरीद के लेआवतानी, चलीं हमरा संगे, लगले हमार गाँव बा, उहाँ आराम करी तले ले गाड़ी बन जाई । " जज साहेब का ओर देख के उ कहलस ।

कौन गाँव पड़ी ? जज साहेब पुछलन ।

"साहेब नेवादा गाँव "

ने...वा..दा.. नाम गोहरावत जज साहब चउंक गईलन "हमार गाँव आ हमही न चिन्हनी ! सायद 22 बरिस बहुत होला चिन्ह जगह के अनचीन्ह करे खातिर ।

शिवपुरन ड्राईवर के समझा के कि गाड़ी बन जाई त फोन कर दिहा हम आ जाईब" बोल के ललन के ट्रेक्टर पर चढत कहे लगलन ।

"चलS बाबू आज हम नेवादा घूम आईं"।

"अरे रउआ काहें आ जाईब? गाड़ी बन जाई त गाँव आ जाई "।

"अच्छा ! अब गाड़ी घरे-घरे चहुंप जाले ?"

अचरज से शिवपुरन पूछे लगलन "

"अरे रउओ कवना जमाना के बात कर रहल बानी साहेब, अब तो सगरो पक्की सड़क अउर खडंजा बन गईल बा ।"

शिवपुरन झेंपत ड्राईवर से कहलन "ठीक बा फेर केहू से पूछ के रामपूजन सिंह के घरे लेते अईह । "

"बाह! राउर त हितई बा नेवादा" खुस होत ललन कहलन ।

सरोज सिंह

बलिया , युपी के रहे वाली सरोज सिंह जी , हिन्दी भोजपुरी आ बंगला साहित्य मे उभरत एगो बरिआर नाव बानी । हाले मे इँहा के लिखल हिन्दी काव्यसंग्रह " तुम तो आकाश हो " आईल ह । भोजपुरी मे सैकड़न गीत गजल कविता कहानी के रचना कई चुकल बानी । पाक कला मे दक्ष सरोज जी एह घरी गाजियाबाद मे बानी ।

जज साहब मुस्किया भर देहलन, उ कइसे कहतन कि, "हीत ना हमार घर-परिवार नेवादा में बा।"

सड़क से ट्रेक्टर जब गाँव की ओरी मुड़ल तब शिवपुरन के बिसवास कईल मुसकिल होत रहल कि, सही में ई नेवादा 20 साल पहिले वाला गाँव ह ?

पूरा गाँव के कायाकल्प हो गईल रहे। चारो ओरी बिजली के खम्भा, जगह-जगह हेंड पाइप , सार्वजनिक शौचालय ,जवन पहिले टूटल फूटल प्राथमिक विद्द्यालय रहल ओकरा जगह पर सरकारी इंटर कालेज बन गईल रहल।

ललन बड़ा चाव से कुल देखावत रहल "देखीं साहेब, ई अभी नया चिकित्सालय खुलल बा अब रोगी के लेके जौनपुर भागे के ना पड़ेला ।"

"बाह ललन गाँव के त बड़ा बिकास भईल बा "शिवपुरन चऊँचहात कहे लगलन।

"साहेब, सरकार जेतना पइसा पारित करेले अउर बिकास योजना बनावेले उ कुल जदी सही मायने में लागू हो जाए त सगरो देस के काया पलट हो जाए। ई त हमनी के सौभाग बा कि हमनी के परधानिन नि:स्वारथ भाव से गाँव के बिकास में जी जान लगा देले बाड़ी। ना त बगली के गाँव सुख्तापुर में देख लीं कुछ बिकास नइखे । सड़की के हाल बेहाल बा । उहाँ वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, मिड डे मील के नाव पर खाना पूर्ति होला खाली।"

"परधानिन ? नाव का ह उनकर ?केकरा घर के हईं? " जज साहेब पुछलन।

"साहेब,परधानिन श्रीमती बिमला देवी , दू बेर से लगातार परधानी के चुनाव जितत बाड़ी। बहुत दुःख भोग के इहाँ तक पहुचल बानी उहाँ के। बियाह के बाद आपन कुल गहना-गुरिया मरद के पढ़ाई में झोंक देहली। मरद बड़का अफसर बन के शहर में दोसर बियाह कर के बस गइलन ।पर पट्टीदार भी अलग बिलग कर देहलस लोग। हिस्सा में खाली बगईचा मिलल। ओसे भला कहाँ रोजी रोटी चलित? उ त भला होखो पाठशाला के मास्साब के, जे उनका के स्कूल में सफाई कर्मचारी में राख लिहले। बहुत हल्ला भईल। बात बनल। काहे से कि ओ समय, सवर्ण औरत लोग अकेले गाँव से बाहर ना निकलत रहे। नईहर से बिदा भईली त ससुरारी में समा गईली। ससुरारी से निकलली त सीधे समसान खातिर। देवठान प लपसी, सोहारी चढ़ावे ,कुआं पूजन ,लावा भुजाये खातिर बहरा निकलल ही उनकर तीरथ भा पिकनिक रहल। अइसने में स्कूल में झाड़ू बुहारी करे में त हल्ला होखल कवनो बेजायं न रहल। स्कूल के चाकरी के एवज में मास्साब उनकर बेटा चुन्नू के लिखइले-पढइले ।मास्साब त अब रहले ना उनका जगह पर उनकर बेटा चुन्नू आजकल हेडमास्टर बाड़े।"

ट्रेक्टर के अपने घर की ओरी मोड़त ललन कहे लागल।

"जब नेवादा के महिला सीट घोषित कईल गईल तब बिमला देवी के सेवा भाव देख के ही गाँव के भलमानस लोग उनकरा के खड़ा कईलस लोग। "

शिवपुरन सुन्न के माफिक कुल सुनत गईलन, अचानक से ललन से कहलन "बाबु हमके रामपूजन सिंह के घरे छोड़ द"।

"रामपूजन? ई के ह हम नइखी जानत हमार बाबूजी जानत होइहें "

"अच्छा त परधानीन के घरे ले चलऽ "

"ठीक बा साहेब " कह के ललन ट्रेक्टर घुमा लिहलन।

शिवपुरन कुल देख-सुन के सुन्न जइसन हो गइलन मने-मने बुद्बुदईलन "हमार बिमली ही बिमला देवी हई।"

चुन्नू , बाबूजी ,मास्साब..... पिछला कुल इयाद आवेलागल।

खेत खलिहान में कब्बो जिव न लागल, बस पढ़ाई के निसा रहल। बाबूजी के जोर प मर्जी के खिलाफ बियाह हो गईल । 'बिमली' कब्बो पढ़ाई के बीच न अइली, बलुक आपन गहना-गुरिया बेच-बेच के पढाई अउर किताब खातिर पइसा जुटावे में कवनो कसर भी ना छोड़ली।

कब्बो-कब्बो बिमली पूछ भी देस कि "ए जी, जज बने खातिर अउर केतना किताब पढ़े के परी ?"

ए सवाल प शिवपुरन हंस देस ! पता न कहाँ-कहाँ के मनता मान के बईठल रहली बिमली।

शिवपुरन के लगन अउर बिमली के त्याग अउर बिस्वास रहल जे पहिलका बेर में ही मुंसिफ मजिस्ट्रेट में चयन हो गईल ।

शिवपुरन तुरंत ट्रेनिंग खातिर चल गईलन। जब वापस अईलन तबले चुन्नू के जनम हो चुकल रहल। शिवपुरन बीमार बाबूजी के सेवा खातिर बिमली के गाँव छोड़ के शहर नौकरी खातिर चल गईलन। कम उमिर में बियाह भइला से संकोच अउर लाज में उ केहू से ना कहलन कि उनकर बियाह हो गईल बा अउर एगो बेटा भी बा। एकर असर ई भईल कि उनकर सीनियर जज आपन बेटी से बियाह के जोर लगावे लगलन। शहर के पढल-लिखल लड़की के जिनगी भर के साथ के लोभ शिवपूरन छोड़ न पवले। अउर बियाह के बाद फेर गाँव के रुख ना कर पवले।

कईगो चिट्ठी पत्री आईल। शिवपुरन कवनो के जवाब न देहले।

दस बरिस बाद, एक दिन जब कचहरी से घरे लौटले त, बरामदा में केहू के देख के चउंक गईलन।

" अरे मास्साब आप कब अईनी ह ? "

उनकर गोड़ छुअत कहे लगलन " पहिले बता देहले रहती त स्टेसन प गाड़ी भेज देतीं, अउर ई के ह?"

बगली में दुबकल करीब 11 बरीस के लईका के देख के कहलन।

"गनीमत बा जज साहेब हमके पहिचान गईलS । ई तहरे खून ह "चुन्नू "। खैर इयाद कइसे होई नौ महिना के रहल तब छोड़ के आईल रहलS ! फेर कब्बो नेवादा झांके ना अईलS।"

सुनके शिवपुरन झेंप गइलन।

रंग उड़ल बुशर्ट जेकर कई गो बटाम टूटल रहुवे ,रुखर बार, दुबर-पातर झवराईल चेहरा। चुन्नू खाली सउसे घर के निहारत रहल। पक्का के इतना बड़ा कोठी पहिला बेर देखले होखे जइसे।

"बाबूजी के गोड़ छुअS चुन्नू। अब तोहके इहें रहे के बा खूब मन लगा के पढ़ीहS-लिखिहS। "

"ठीक बा ठीक बा । खुस रहS ! " चुन्नू के सर पर हाथ फेरत शिवपुरन के चेहरा प दोसी भाव अउर लाज, साफ़ झलके लागल।

"जज साहब चुन्नू के माई के तबियत अब ठीक रहत नइखे। जब ले बाबूजी रहलन ठीक रहल, बाकी अब अलगौजी भईला के बाद केहू देख भाल करेवाला भी नइखे । बहुत रिगिर कर के चुन्नू के इहाँ भेजले बाड़ी कि ओकर जिनगी बन जाव। "

मास्साब के ई बात सुनके शिवपुरन बात बदलत कहे लगलन।

"अच्छा अभी आराम करीं सभे । हम खाए पिए के ब्यवस्ता करSतानी। " कह के भीतर चल गईलन।

भीतर घुसते ही केहुके चिचियाये के आवाज आये लागल।

"का जी ? उ करझौसी केकर पाप इहाँ भेजले बिया ? उहाँ के राजपाट त कुल देइये देले बानी रउआ, अब इहाँ भी डाका डाले भेज दिहलस ? खबरदार ! जियत जिनगी इहाँ हम केहू के हेले ना देब।"

ई ममता के आवाज रहल। जज साहब के दोसरकी मेहरारू के।

"अरे धीरे बोलS तनी। कम से कम खाना-पानी त पुछ लS। घर आईल मेहमान से केहू ए तरह से व्यवहार करेला ? जा कम से कम खाए पिए के इंतजाम करS ।" कह के शिवपुरन अपना कमरा में चल गईलन। फारिंग होके सोचे लगलन कि अब कवना मुह से जाईं बहरे । कुछ बिचार करत उ बाहर निकललन मगर बरामदा में केहू भी ना देखाईल। गेट के बहरी आपन गाँव के ओरी जात देख के भी रोके के बजाय संतोस के सांस लेहलन।

"साहेब ! ए साहेब !! आ गईल परधानिन के घर। "

अचकचा के शिवपूरन होस में अईलन । एक मन सोचलन कि कवना मुहें जाईं ओ लोग के सोझा ? बाकी मिले के लोभ छोड़ न पवलन।

पक्का के घर। बाहर गेट पर "ग्राम प्रधान श्रीमती बिमला देवी" के बोर्ड लागल रहे । पढ़ के जज साहेब के आपन कद अउर बौना बुझाए लागल।

"साहेब अपना ड्राईवर से फ़ोन कर के कह देब कि "रामपूजन" के घरे ना "परधानीन" के घर के पता पूछ के आ जईहन।" ललन मुस्कियात कहलस।

www.bhojpurisahityangan.com

"ठीक बा बाबु " कहत ट्रेक्टर से उतर के बरामदा में पहुंच के शिवपूरन अभी बिचार करत रहलन कि का करीं ? का परिचय दी आपन? तबले एगो मेहरारू आके गोड़ छू लेहलस।

"आईं बाबूजी बईठीं। आज त भाग जाग गईल हमनी के। " कह के उ बाहर खेलत लईका से कहे लगली, "अरे बबलू भाग के बाबूजी के बोला ले आव तS | कहियS बाबा आइल बाड़े | फेर अन्दर भागत गोहरावे लगली "अम्मा जी देखीं त के आईल बा ? अरे बाबूजी आईल बाड़े।"

शिवपुरन बुझ गइले कि ई चुन्नू के मेहरारू हीयS और बबलू हमार नाती ह। ओतने देर में पतोह कठवत में पानी लेके गोड़ पखार देहली। शरबत ले अईली । "लीं बाबूजी, इहो बस आवते होइहें। "

खुश रहS दुल्हिन ! बाकी ई बतावS तू हमके चिन्हू कईसे?

अम्मा जी के लगे राउर फोटो बा ओही से चिन्ह लेनी हं। रुकीं अम्मा जी के लेके आवत बानी।

शिवपुरन के पश्चाताप के मारे आंखी से लोर बहे लागल । एतना सुन्दर परिवार छोड़के, शहर में करकराह मेहरारू के संगे जिनगी बितावे के पड़Sता। दुनिया भर के लोगन के न्याय दियावSतानी, मगर अपना परिवार के संगे न्याय न कर पवनी।

"अम्मा जी ! चली ना, बाबूजी इंतज़ार करSतारे। "

बिमली सुन्न होके जंगला के बाहर आसमान के निहारत रहली जइसे पतोह के कवनो बात सुनात ना होए। बिमली के देह पर सुहागिन वाला कवनो सिंगारना रहे। सेनुर टिकुली कब के लगावल छोड़ देहले रहली।

पतोह झट से पूजाघर में से सिन्होरा पोंछत-पाछत ले अइली। "लीं अम्माजी आज त राउर सोहाग के दिन ह, बाबूजी से लगवाईब। चली ना !"

"रहे द दुल्हिन ! अब कवनो सिंगार के जरुरत नइखे। अब त ई गाँव के सिंगार ही हमार सिंगार हS ।"बिमली निर्विकार भाव से कहली। पतोह सास के बात सुनके सन्न रह गईली। जेकरा के रात-रात भर जाग के बाबूजी के फोटो के आगा रोवत देखले रहली , ओकरा मुँह से अइसन बात ? बिस्वास ना होत रहल।

"बाबूजी बहरा इंतज़ार करSतारे अम्मा जी। "

बिमली सर प आँचर राख के बिना कवनो उत्साह के दुअरा निकलली। मगर बाहर कुर्सी खाली रहल। गेट के बहरी शहर के आपन गाँव से जात देख बिमली उनका के रोके के बजाय संतोस के सांस लिहली।

ग्लोबलाइजेशन, ग्लोबल वार्मिंग, ग्लोबल विलेज आ महाभारत

ग्लोबलाइजेशन पिछिलका तीन दशक से एगो अईसन शब्द बा, जेकरा के गाँव गिरांव से लेके बड़का शहर तक में बच्चा -बच्चा अब जानेला । ग्लोबल विलेज आउरी ग्लोबल वार्मिंग भी ओईसनके शब्द से बनल बा । ग्लोबल वार्मिंग के वजह से दुनिया में मचल तबाही से दुनिया परेशान बा त ग्लोबल विलेज आउरी ग्लोबलाइजेशन के कारण सांस्कृतिक-आर्थिक बदलाव से कुछ लोग खुश बा त कुछ लोग चिंतित । एके कुल से निकलल, ई कुल्हि अईसन शब्द हवन स, जेकर सबसे जादा असर पिछिलका तीन दशक में दुनिया में पड़ल बा । चाहे-अनचाहे दुनिया के हर समुदाय पर, हर व्यक्ति पर आउरी हर तरह के बदलाव में एकर भूमिका बा । उ चाहे सकारात्मक होखे भा नकारात्मक । भारत जईसन देश त जादे ही चिंतित बा । सांस्कृतिक मूल्य में आवत गिरावट से, मौसम के बदलत मन-मिजाज से आउर एह बदलाव के कारण भयावह भविष्य के परिकल्पना से । ई बात दोसर बा कि चिंतित समाज उपरे-उपरे चिंतित बा बाकि ग्लोबलाइजेशन, ग्लोबल वार्मिंग आउरी ग्लोबल विलेज के प्रक्रिया के आगे बढ़ावे में, ओकरा के परवान चढ़ावे में आपन भूमिका भी जम के निभा रहल बा ।

एह प्रक्रिया के कुछ सकारात्मक बात रहल बा बाकि तापमान में बढ़ाव, जल के संकट, खाद्यान्न के संकट, ग्लेशियर के क्षरण, ऋतु चक्र आउरी पर्यावरण के स्वभाव में परिवर्तन, पशु -पौधा आउरी इंसानी समुदाय पर घातक असर साफ-साफ दिख रहल बा । गाँव के शहर बने के होड़, कांच उमर में उभरत कामुकता, हिंसक होखत लईकाई, हिंसक होखत समाज, बढ़त भोगवादी प्रवृत्ति, उपभोक्तावादी दर्शन के मूल बने के प्रक्रिया आउरी सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक आउरी धार्मिक कारण से नक्सलवाद से लेके आतंकवाद तक के बढ़ावे में ईहे नवका प्रक्रिया के बड़ भूमिका मानल जाला । एह पर बात करेवाला विशेषज्ञ लोग आज दुनिया भर में फैलल बा । सिद्धान्त गढ़ेवाला, सलाह देबेवाला, आगाह करेवाला आउरी रास्ता बतावेवाला; आउरी दुनिया भर में होड़ मचल बा विशेषज्ञ बने के । नोबेल से लेके कई गो सम्मान मिल रहल बा एह पर बात करेवाला लोगन के ।केहू कहेला कि फलानाजी सबसे पहिले एह बात के आगाह कईले, एह प्रवृत्ति के बारे में बतवले तो केहू कहेला कि फलनवा देश सबसे पहिले एकरा पर बात कई के दुनिया के बतवलस । बाकि एह बात के हमनी के जाने के चाहीं कि एह विषय पर विस्तार से बात करेवाला

निराला

पेशा से पत्रकार , तहलका आ प्रभात खबर खाति लगातार लिखे वाला निराला जी , औरंगाबाद बिहार के रहे वाला हईं । इँहा के पुरबिया तान बैनर के नीचे भोजपुरी के पारम्परिक गीतन के सहेजे, सरिहारे आ ओह के नया कलेवर मे प्रस्तुत करे में लागल बानी । एह घरी पटना में निवास बा ।

भारत के एगो महान चिंतक, विचारक आउर लेखक भी रहे जे हजारन साल पहिले बता देले रहे कि का होखेवाला बा दुनिया में । ओह लेखक के नाम रहे वेदव्यास । उहे वेदव्यास, महाभारत के रचयिता वेदव्यास।

महाभारत के वनपर्व- महाभारत, गीताप्रेस गोरखपुर, द्वितीय खंड, वनपर्व, मारकण्डेय युद्धिष्ठिर संवाद, पृष्ठ 1421-1494- अध्याय में. एह अध्याय में एगो जबरदस्त प्रसंग बा। संवाद युद्धिष्ठिर आउर मार्कण्डेय ऋषि के बीच। युद्धिष्ठिर मारकण्डेय ऋषि से कलियुग के अंत के बारे में जानल चाहत बाड़े। पूछले ऋषि से कि रउआ त हर जुग के आरंभ आउर अंत देखले बानी। बताईं कि कलियुग के आदि आउर अंत कईसे होखी, कवना रूप में होई । तब मारकण्डेय ऋषि जी, युद्धिष्ठिर के जिज्ञासा के शांत कईले बानी , विस्तार से जवाब देई के। उहां के कहनी कि कलजुग के अंतिम भाग में करीब-करीब हर आदमी मिथ्यावादी हो जाई। मनुष्य के विचार आउर व्यवहार में बहुत अंतर आ जाई। सकल जगत एक वर्ण-एक जाति में बदल जाई। प्रलय के दौर शुरू होखी, जेकरा खातिर प्रकृति कम आउर मानवीय समुदाय जादा जिम्मेवार होखी । एही काल में सुगंधित पदार्थ नासिका में जाई तो गंधयुक्त ना लागी , गंधहीन होखी। रसीला चीज में स्वाद ना रही। पेंड़ पर फल कम हो जाई, फूल कम हो जाई। पेंड़न पर बईठेवाला पक्षी के विविधता खत्म हो जाई। वन्यजीव, पशु पक्षी लोग के आपन स्वाभाविक बसेरा खतम होखी आउर इंसान के बनावल बगीचा, विहार आउर कैदखाना में उ लोग दिखायी पड़ी । जंगल आउर पेंड़ के लोग तेजी से काटी, जंगल आउर प्रकृति के प्रति लोग निर्दयी हो जाई । भूमि के अंदर जवन बीज डलाई, ओकरा से ठीक से कोपल ना निकली । खेतन के उपजाउ शक्ति इंसान खतम कर दी। तालाब-चारागाह आउर नदी के तटभूमि पर भी इंसान अतिक्रमण करी, ओकरा पर कब्जा करके ओकर अस्तित्व के खतम करी। स्थिति अईसन भी आई जब जनपद के प्रणाली शुन्य हो जाई । चारो ओर प्रचंड तापमान रही, मय तालाब-नदी के जल सुखे लागी । बारिस के मौसम में बरखा -बुनी बंद हो जाई। लाख उद्यम आउरी मेहनत कइके भी समाज खाद्यान्न खातिर दोसरा पर निर्भर होखे लागी। थोड़ा धन संग्रह कई के धनाढ़ वर्ग उन्मत्त होखे लागी।

सब जनपद के आपन विशिष्टता खतम होखी, जनपदीय प्रणाली खतम होखी त ओकर असर कई रूप में दिखी। सब लोग एक स्वभाव के होखे लागी । एक वेशभूषा धारण करे लागी। एके तरीका के खानपान भी होखे लागी। गृहस्थ लोग शासकीय कर आउर महंगाई के मार से परेशान आउर भयभीत होके लूटेरा बने लागी। समाज के ज्ञानी लोग कपटी होके चाहे वेश्यावृत्ति जईसन राह अपनाई के जीविका चलावे खातिर मजबूर हो जाई। सब केहू आपन-आपन चिंता करे लागी आउर आपन समृद्धि कईसे बढ़ो, एही में लागल रही। नौजवान लोग युवावस्था में ही बुढ़ाये लागी। सोलह बरिस में ही बाल पाके लागी । बचपन आउरी किशोरावस्था में ही स्वभाव व्यस्क जईसन होत जाई। सात-आठ बरिस में ही बच्ची लोग मां बने लागी। 10-12 साल के बच्चा लोग बाप बने लागी। जादातर लोग एक दुसरा के धोखा देबेवाला आउर गलत शील स्वभाव वाला हो जाई । कन्यादान के परंपरा खतम होखी । ओकरा जगह पर युवक-युवती लोग अपना निर्णय से साथे रहे लागी बाकि विवाह ना करी आउर एक दोसरा के विचार-व्यवहार के जादा ना सही। दोसरा पुरुष से संबंध रखे में स्त्री के आउर दोसरा स्त्री से संबंध रखे में पुरुष के मजा आवे लागी आउर ओही जुगत में लागल भी रही।

अईसनका कई गो बात महाभारत के ओह अध्याय में दर्ज बा । इ त संक्षिप्त में बात भईल । मारकण्डेय ऋषि आउर युद्धिष्ठिर के संवाद आउरी लंबा बा। सीधे बात समझल जा सकत बा कि वेदव्यास के चिंतन के स्तर का रहल। उहांके महाभारत के जरिये खाली एगो मिथकीय भा पौराणिक कथा-कहानी नईखी देले। महाभारत के कहानी सच्चो रहल कि झूठ के पुलिंदा बा, एकरा पर दुनिया भर में बहस के दौर चलत बा। वामपंथी लोग एक सिरे से नकारे ला। चाहे आलोचना करेला कि महाभारत भा रामायण जईसन ग्रंथन के रचना नायकत्व के उभारे खातिर कुछ खुराफाती मगज के उपज भर ह। मान लेबल जाव कि ओतने भर बा बाकि ओह खुराफाती मगज के उपज में अईसनका भी ढेर बात बा। ई त एगो अध्याय उलटला पर दिखल बात बा। एगो संदर्भ आईल बा । जे अईसनका ग्रंथन के गहन अध्येता होखी, उ विस्तार से बता सकत बा कि ओह में का-का बा। लेकिन दुर्भाग्य दोसर बा। जे अईसनका ग्रंथन के अध्ययन कईले बा, घोर के पी गईल बा, उ कथा-कहानी आउर ओकरा में आपन बात के मिला के कथा-कहानी आउर प्रवचन के दुनिया से बाहर निकल नइखे पावत। आउर जे ई कुल ग्रंथन के विरोधी लोग बा, ओकरा भारतीय बिंबन से कउनो वास्ता नईखे। चीन भा रुस के बिंबन के भरोसे उ भारत में क्रांति के सपना सौ साल से देख रहल बा आउर संभावना होते हुए भी रसातल के आखिरी तल में पहुंच रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

चित्र - स्वयंबरा बक्सी

बृज किशोर तिवारी

दिल, जब बच्चा था जी (भाग –5)

(अब ले- पिछला अंक में कथाकार के लईकाईन के बदमासी के एगो आउर मजगर किस्सा पढ़नी। कईसे एगो मुर्गा के पार्टी दू महिना ले चलल। अब एह अंक में पढ़ीं आपन नया बदमासी से रउरा सभे के हंसावत लेखक के कारनामा उनके जुबानी)

बचपने के बात हS -

कवना क्लास में पढ़त रही याद तS नईखे। शायद 4 भा 5 में होखब... पैदले पढ़े जाई आ आई।

मोहल्लवे में एगो दरजी के दूकान रहे , जान पहचान के ही रहे। ओकरे इहा हमनी के कुल कपड़ा लत्ता सियाए। एक दिन हम पढ़ के स्कूल से लौटत रही त ,उ दुकान के दर्जिया हमरा के बोलवलस आ हमार नाप लेवे लागल । कहलस कि तोहार बाबु जी नाप लेवे के कहले बाडन, ओही हिसाब से कपड़ा कीने के बा। हमहू बड़ा खुश भईनी कि हमार कपड़ा सियात बा। आ लगनी ओकरा के अपना ओरी ले कुल डिजाईन समझावे की येह तरे सिहा ,ओह तरे सिहा।

ओही मे नाप लेवत घरी में उ हमरा से पुछलस -

“कवना क्लास में पढ़ेला बाबू ?कवन कवन कविता आ पोयम इयाद बा ? याद बा तS सुनावS !”

हम कपड़ा सियावे के ख़ुशी में ओकरा के एगो कविता आ पोयम भी सुना दिहनी।

घरे आ के माई से पूछनी - माई हमार कपड़ा सियात बा का ? माई कहनी कि - ना तS ! हमार तS मुहे उतर गईल।

लेकिन उ दर्जिया तS हमार नाप लिहलस हS ,कहत रहल की बाबु जी कहले बानी ! त, हमरा के नईखे मालुम ,बाबू जी से पुछिहा।

लेकिन बाबू जी से पूछे के हिम्मत कहाँ ? हमहू महटिया दिहनी।

पर दोसरका दिन उ दर्जिया फेरु बोलवलस, कहलस उ नाप लिखे में भुला गईल ,फेरु से नापे के बा , हमहू ख़ुशी ख़ुशी फेरु से नाप देवे लगनी ,आ उ फेरु हमरा से पोयम सुनलस। धीरे धीरे इ ओकर आदत बनी गईल । इंची टेप लगा के हमरा से पोयम आ कविता सुने उ जब भी खाली रहे। बाद मे हमरा बुझा गयिल कि इ हमरा के ककहारा सिखावता। हमहु कहनी कि रुका,मौका मिले दा , हम तोहे पिपिहरी बजावे सिखायिब।

एक दिन हम ओकरा के एगो ड्रेस के कपड़ा दे देनी, कहनी ला, सी दा। उ फेरु से नाप लिहल। आ बाकायदा। पर्ची ओर्ची बना के दे दिहलस। एक दिन पढ़े जाये घरी पूछनी कि कपड़वा सिया गईल का ? दर्जिया कहलस कि हां | हमहू सियलका कपड़्वा ले लिहनी, कहनी पैसा बाबू जी ड्यूटी ले अयिहे तS दे दिहे। उ हमरा के कपड़ा दे दिहलस।

क्लास के एगो लईका हमरा से बतियावे हमार ड्रेस ख़राब हो गईल बा ,हमरा लगे कपड़ा तS बा, पर पूरा सियावे के पईसा नईखे होखत ,कैसे सियाई ?

हम पूछनी केतना पैसा बा तोहरा लगे ? कहलस-30

रूपया बा । लेकिन 40 रूपया लागी सियावे में । कहनी ले आवऽ कपड़ा हम 30 रूपया में ही सिवा देब । उ लयिकवा हमरे कद काठी के रहे । आपन नाप से ओकर ड्रेस उहे दर्जिया से सिवा दिहनी । उहे कपड़वा ओकरा के लिया के दे दिहनी आ 30 गो रूपया ले लेहनी ओकरा से ।

अब का ,अब त लागे कि टाटा बिरला फ़ेल बा लोग , हमरा आगे रोज़ आठ आना एक रूपया खर्चा करी । महिना, डेढ़ महिना खूब चकल्लस रहल । हमहू कहनी दर्जी राम अब तोहार पैसा दिया चूकल, जवन होई तवन देखल जाई बहुत पोयम सुनले बाड़ऽ ।

भोजपुरिया इलाका में शादी बियाह

डा० रीता सिन्हा

ए ह घरी बियाह-शादी के दिन चल रहल बा । अइसना में हल्ला-गुल्ली, गायन-बाजन, हंसी-मजाक, बेटी के बिदाई के गम आ कनिया आवे के ख़ुशी लागल रही । जेकरा घरे बियाह बा ओकरा त चैन नाहिये बा, बाकिर बाकियों लोग कवनों कम बेचैन नईखे । नेवता-हकारी करे के बा । नेवता के तैयारी बा । जाये-आवे खाति घोड़ा-गाड़ी के इंतजाम, नया कपड़ा के अलगे झंझट, अपना छुट्टी के इंतजाम, टिकट खाति भागमभाग ।अउरी जाने केतना काम । एने मेहरारु लोग के आपन लागल बा । पायल झरवावे के बा, साड़ी के सेट लगावे के बा, कान के झुमका जोड़वावे के बा । लइकन के सजाव अलगे । पहिले से केतनो तइयारी भइल होखे, जइसे-जइसे बियाह के दिन निकचाई ना जाने कहवा से कमवो बढत चल जाई । ए गो नेग -बिधि होखे तब नू । तिलक, मटकोर, बियाह, बिदाई, कनिया उतराई एतना त मेन बा । ईमली घोंटाई, कोहबर के भात, कहा ले गीनावल जाव ?

भोजपुरिया संस्कृति पर बिचार कइला पर गरब होला । अब तनी 'तिलके' के देखीं । केतना सोचल-बिचारल परम्परा बा । एगो लइका-लइकी नया जीवन शुरू करे जा रहल बा त ओकरा गृहस्थी खाति बर्तन, कपड़ा ,कुछ मोट रुपया चहबे करी । लइकी के माई-बाप (औकात मुताबिक) बेटी के गृहस्थी के इंतजाम क के तिलक रूप में चढ़ावेला । (पहिले बाप के सम्पत्ति में बियाह के बाद बेटी के हिस्सा ना होखे ए से बाप अपना सम्पत्तिनुसार बेटी के तिलक रूप में एकतरह से हिस्सा दे देस । भले बाद में एकर रूप बिगड़ गइल होखे ।)

जेने से बारात आवे के बा भा जेने जाए के बा ओने ईना (पानी के सोता) के लगे माटीकोर होला । एकर मतलब बा ओ रास्ता के स्वागत बा । एगो सबसे बड़हन बात ई देखी कि देवी-देवता के पूजा के साथे अपना पितर लोग, समग्र जीव-जन्तु-चिउँटा, चिउँटी तक, प्रकृति-आंधी, पानी तक के नेवत के गोड़ लागल जाला कि रउवा सभे आपन किरिपा ए जोड़ी खाति बनाई जेमे जग नीमन से निबह जाव । बिना सबकर किरिपा के ई शुभ काम ना सपरी । ओह! ई लिखत आँख में लोर आ गइल । दुनिया के कवनों संस्कृति में ई बडकपन, ई भाव ना मिली ।

बियाह के तनी दिन बाद 'कलेवा' जाला । एमे अनाज, पकवान, कपड़ा आ बियाह के छूटल-फटकल सामान बाप, भाई, रिश्तेदार आ गाँव के कुछ लोग जाला । एकर मतलब आपन बेटी ससुरा में कईसे बाड़ी-देखे जाला ।

जमाना बदल गइल । अबके लोग ए परम्परा के मजाक बनावता । ओकरा बिचार करे के चाहीं । आपन प्रथा बेवजह नइखे । सबके बड़ कारण बा । बेटा -बेटी के सुख खाति, वंश बृद्धि खाति माई-बाप केतना इंतजाम करेला । ई कुल बात भोजपुरिया गीत में गावल जाला । गीत के हर शब्दन में गूढ़ भाव भरल बा ।

आज जरूरत बा बियाह से सम्बन्धित आपन संस्कृति बचावे के । आपन पारम्परिक गीत बचावे के । ई हमनी के धरोहर बा ।अपना पुरखा के धरोहर बचावल हमनी के धरम बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

पारंपरिक गीतन में श्लीलता आ अश्लीलता

भोजपुरी के वैश्विक पहचान मिले के पाछे अईसन कवन तत्व बा, जे एकरा के अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिअवलख, ई जानल मजगर होई। बहरसी कमाए जाय वाला लोग अपना संगे अऊसन का-का ले गईल, जवन एह लोग के सभका से अलगा एगो पहचान देत एह लोग के टाँठ रखलस । ई हमनीं के जानल जरुरी बा। आज भोजपुरी के नासाए के नाम पर जवन हाहा-दैया मचल बा, ई ओह भोजपुरी खातिर ना, जवन पुरातन आ परम्परागत बिया, ई त आजो निरऊठ, रसगर, मजगर एगो छुईमुई कनिया लेखा बिया।राम चरित मानस के गुटखा के संगे भोजपुरिया धरती के हर ऊ अंश, जवन भोजपुरिया के पहचान ह, ऊ त गईबे कईल, हमनीं इहाँ के तत्कालीन गीत-गवनई के खाँटी बिआ भी गईल, जवना में अल्हरपन, फक्करपन के हिलकोरा आठो पहर उफनत रहेला।ई ऊ$ तत्व ह,जवन-आग लागे हमरे मडईया में, हम गाएब मल्हार-जईसन विचार भोजपुरिया मानुस में भरत रहेला । ऊ गीत त आजो अऊसहीं राज रजावता, जईसे पहिले रजावत रहे। नसले बाडें स ऊ गीत, जवन हाँ खानीं लिखईले हँ स$! आ जवन हमनीं के विरासत के, सड़ल अलूई बन के सभ अलूई के सड़ा देब के भरम पैदा कर देले बाड़े स!

ई समझे खातिर हमनीं के दू-तीन गो पारंपरिक गीतन के सोझा राख के एगो विवेचना करेब सS,जवन ई बताई कि अश्लीलता कब ना रहल बाकिर केतना श्लील रुप में। आजो ओह गीतन के रस ले-ले के सुननिहार मताईल फिरेला। त आईं, पहिलका गीत में एगो झुमर रऊआ लोगिन के सोझा राखतानीं- "फर गईले नेमुआ,ओलर गईले डढिया कि ना अईलें, परदेसी बलमुआ से ना अईलें"- एह गीत के दु गो शब्द आ ओकर माने प अगर ध्यान दिहल जाउ त एह शब्द मे बिब छुपल बा । औरत आ मरद के आकर्षण सभे जानत बा आ ई प्राचीन समय से चलल आ रहल बा । एह गीत मे नायिका नेमुआ आ डढिया से अपना यौवन के वर्णन कई रहल बाड़ी आ एह समय मे अपना मरद के बहरा रहे के उलाहना अपना सखियन से देत बाड़ी । एकरा अर्थ के समझे के जिम्मेदारी राऊर बनत बा।फर गईले नेंबुआ, ओलर गईले डढिया से ना अईलें, परदेसी बलमुआ के साधारण भाव में देखाव त परदेसी बालम के भूमिका कुछुओ नईखे।

आखिर ऊ का करिहेंS, बाकिर विंब पर जा के सोचाव त एह शब्दन के अर्थ ऊ प्रभाव छोडत नजर आ रहल बा कि थोडा भी संवेदना आ साहित्यिक पकड राखे वाला श्रोता भा पाठक के मन भीतरी ले बेध दी । अब एह गीत के रउआ भा हम चाहे जवन अर्थ में लिहीं स बाकिर औरत लोग के एह अर्थ के भाव बढिया से पता बा।ऊ लोग ओहि मजा से एह गीत के झूम-झूम के गावेला आ ई झुमर के रूप ले लेवेला।एह गीत में आगे के एगो पंक्ति बा-जे हम जनतीं पिया मोरे अईहें टिसनिए पर सेजिया ले के जईती । अपने जे सोईतीं, पिया के सुतईतीं, देवर जी के, जियरा तरसईतीं । देवर के तरसावे वाला पंक्ति के बहाने उपर के मुख्य पंक्ति आपन पुरा अर्थ खोल के राख देता। बऊद आदमिओ बूझ जाई कि नेंबुआ आ डाढी ओलरल का ह। बाकिर महानता छुपल बा एह गीत के अनाम रचनाकार के लेखनी में। सब बुझते रऊआ उनकुस ना लागी। रऊरा एकरा के अकेले में गाईं भा हजारो लोगिन के बीच, केहू लाठी ले के चहेटे ना आई,केहू रऊरा के सुने भा गावे से मना ना करी। का बहिन-का भाई,का ननद-का माई, बस रऊरा गाईं आ अपने मस्त होईं आ मस्ती लिआईं। ई ह श्लील ढंग से अश्लीलता के राखे के भोजपुरिया गवनई के पुरातन जोगार।

उदय नारायण सिंह

संगीत के शिक्षक , लोकगायक आ भोजपुरी संगीत में नवीन प्रयोग करे खातिर उदय नारायण सिंह जी जानल जानी । छपरा , बिहार के रहे वाला हईं। इँहा के भोजपुरी भाषा साहित्य आ संगीत में हरदम कुछ नया, कुछ अलग करे खातिर प्रयासरत रहेनी । अभी छपरा में बानी ।

अईसही एगो आऊर गीत मन पडता-"सोरहो सिंगार क के नईहर से अईनीं, हाय रे नेमुआ लाल, पियवा सुतेला खरिहान।" आगे के पंक्ति भी देखल जाव- "सासु ननदिया से मिलिहें वचनिया,आहो नेमुआ लाल, जेवना ले के जईबो खरिहान।" खईब त खा ल$, ना त मुँहवो जुठिआल$, हाय रे नेमुआ लाल, रहरी में बोली अब सियार।"-एह गीत के विवेचना कईला पर नायिका के कई गो अवस्था के दरसन होता। एगो लंबा समय गुजरला के बाद नायिका नईहर से ससुरा इईल बाड़ी । सिंगार कर के आवे के भाव ई बा कि ओकरा मन में पति से मिले के सुतल इच्छा जाग उठल बा। ओकर दुर्भाग्य कि पति खरिहान में सुतल बाडें । संजोग से सास कहतारी कि खलिहान में खाना ले के जा । मरद से ई कहल कि-खईब त खालs ना त मुँहवो जुठिआलs, हाय रे नेमुआ लाल, रहरी में बोली अब सियार-के भाव हमरा नजर में इहे बा-

1-मुँह जुठिआवल माने तनीं छेडखानिओ करलीं भा हँसी-ठिठोली भी कर लीं।
2-रहरी में बोली अब सियार माने समाज के तिखाह नजर
3-नेमुआ लाल माने बऊद, बेवकुफ भा अऊसन मरद,जे इशारा के ना समझ पावे।

एह गीत के अब रऊरो समीक्षा कर सकतानीं । एह गीतन में ऊ हर तत्व छुपल बा, जवना बुते ई अश्लील बन सकत रहे बाकिर रचनाकार एगो सहयोगी विंब ले के एकरा के अश्लील से श्लील बना देले बा।माने सब अछईत, कुछुवो नईखे । केहु अंगूरी नईखे उठा सकत । उपर के दुनों गीत के हमनीं थोडे-बहुत ही सही, कुछ बिंदुअन पर चर्चा कईनीं स$ । अब एह में ई साफ लऊकता कि अश्लीलता आज के विषय नईखे। फिलिम-मदर इंडिया-में एगो गाना रहे-घूँघट नहीं खोलूँगी सईंया तोरा आगे । एह गीत में नायिका के अपना पति के सोझा होखे में लाज लागता । ओहि के उलट आर.डी.वर्मन जी के संगीत निर्देशन में एगो गीत सत्तर के दशक में आईल रहे-बाहों में चले आवो, हम से सनम क्या परदा । दुनों गीत श्लीलता आ अश्लीलता के पहाडा पढा देता । केहू ओढनीं के मूड़ी पर से ओढले रहे आ केहू ओढनीं के नीचे से ओढे।इहवें ऊ मोकाम बा, जवन दुनों शब्दन के अलग-अलग ढंग से प्रभावित आ परिभाषित करता$ । ज्यादा अश्लील होई त का होई, साफा लंगटे होई बाकिर फेरु सवाल उठता कि एकरा बाद का होई?ओह ऊँचाई के बाद फेर त रऊआ जातरा रोके नईखी जात, कुछ ना कुछ त करही के पड़ी । घुमा-फिरा के कहानी उहँवे आई कि सभ्य भईल ही ठीक बा।ई बात हमनीं के पुरखा-पुरनिया बढियां से बूझत रहे लोग आ एही से एगो डरेर खींचले रहे लोग । ओह घडी के गीतन में एही से सब कुछ अछईत कुछो ना लउकत रहे,जबकि आज के गीतन में साहित्यिक भाव भी नईखे आ ऊ त कूट-कूट के भर दीहल जाता, जवना से हमनीं के बुढ-पुरनिया हमेसा बचे के सीख देहत रहल लोग । सांस्कृतिक प्रदूषण के एह दौड में काहे ना ओह पारंपरिक गीतन के शरण में जाईल जाव, जवना लगे सब कुछ बा आ साँच कहीं त कुछुवो नईखे।

एगो गीत, एगो कविता

- गोरख प्रसाद

पइसा

एक मुठ्ठी भोर के कहानी हऽ पइसा
दू अँजुरी लोर के निसानी हऽ पइसा
सबका के अपने में रखलस अझुरा के
बडा मुँहजोर आ तूफानी हऽ पइसा
ना जानी केतना, बेमार करी पइसा

का तोपी, काथी उघार करी पइसा
नाता खोता उँहवे बा जँहवा बा चानी
केहू निहारे नाहीं टूटही पलानी
अँखिया के अंगना से नेहिया पराइल
देहिया में केतना दरार करी पइसा।ना जानी

कहियो ना चान आइल हमरी अँगनवा
विहँसल नाहीं तनिको हमरी सपनवा
दुनो पख अमावस भइल हमरे ला काहे
केतना अंजोरिया अन्हार करी पइसा।ना जानी

कतही बटइले बाबू बाड़ी कहीं माई
काहे दू सोहते नइखे भाई के भाई
अजबे स्वारथ के सवर चलल बा
कते टूकी अंगना दुआर करी पइसा।
ना जानी ...

जिनिगी

टे महीं डीबरी भईल जिनिगिया, तिल तिल जरि के काटी लें
घूप छाँह के धन रोजे सँझिया, भिनुसारे बाँटीलें

समय के दरपन में झाँकी त, झलके आपन बीतल
नेह गगरिया सबकर बा, हमरे ला इहँवा रीतल
चुने चुन बिन बिन बीतल दिन के पेवन मत से साटी लें

भरी कुलाँच समुझ के रोटी पूनम वाला चंदा के
सपना टूटल, तूर ना पवनी, पापी पेट के फंदा के
अँखिया कहीं लोराला त, अपना ही मन के डाँटी लें

मउराइल हुलास के पतई, सपना सगर सेराइल
अकुलाइल, चिरई के खोता, अँगने में छितराइल
सरकल सुख मुठठी से, दुख अपना हिस्सा में छाँटी लें

घन के चाहे दरार अपनापन में अइसन आइल
सज्जी धरम करम रिस्ता नाता लोग भुलाइल
आपन देहिया पूल बनाके एह खाई के पाटी लें

गोरख प्रसाद मस्ताना

भोजपुरी साहित्य मे स्थापित एगो बड़हन नाव डा. गोरख प्रसाद 'मस्ताना' बेतिया चम्पारण से। इँहा के भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति काव्य संग्रह , खंड काव्य , लघु कथा संग्रह के कई गो किताब लिखले बानी जवना मे से कई गो लेख आ रचना के इग्नू आ कई गो विश्वविद्यालय के भोजपुरी के पाठ्यक्रम मे शामिल कईल गईल बा। भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर इँहा के सतत प्रयत्नशील बानी। एह घरी ईँहा के दिल्ली मे बानी।

बियाहकटवा की कलाकार ?

जतना बड़ कलाकार बियाह तय करावे वाला अगुआ होला, ओह से तनिको कम बड़ कलाकार बियाहकटवा ना होला। कुछ माने में बियाहकटवा अगुआ से बड़हन कलाकार होला। एकर कीमत का देहात का शहर चारो ओरिया होला। गाँव-देहात में त बियाहकटवन के बड़ा इज्जत बा। आ इज्जत काहे ना होई? बेटा-बेटी त सबका घरे बा। जब बेटा-बेटी बा त बियाह-शादी होखबे करी। अब रउरे बताईं कि डरे ओकर इज्जत के ना करी। कहल बा जे कवनो पूजा करे के पहिले खल के बन्दना जरूरी ह। ओइसे भी शादी-बियाह त केहु खड़ा होके करा सकता, बाकिर बियाह काटल सबका बूता के बात नइखे। एह काम खातिर कुछ खास खूबी भइल जरूरी होला। अब विशेषज्ञता के कीमत त लागहीं के चाहीं। रउरा आउर कुछ ना देब त डरहीं सही, कम से कम इज्जत त दीं।

अब रउरा सोचत होखेम जे एमे कवन विशेषज्ञता बा? त जान लीं जे एह काम खातिर कुछ खास खूबी भइल जरूरी होला। उ ई कि घर से धन-दउलत आ सवांगी से मजबूत भइला के संगे-संगे मुंहजोर आ बेशरम भइल एकर पहिलका शर्त ह। अगर खिसीआइल भुक्तभोगी, बियाहकटवन के गरियावता त संगे-संगे हँ में हँ मिलावत खुदे गरियावे के हिम्मत भइल एकर दोसर शर्त ह, ताकि केहु के शक ना होखे। कवनो काम करे के पहिले आदमी ओकर नाफा-नोकसान सोचेला आ बिना जरूरत एको डेग ना बढ़ावेला। बाक़िर बियाहकटवा के काम में नाफा-नोकसान ना सोचल बिना जरूरत के रातो-दिन बेचैन रहल एकर तीसरका शर्त ह। अपना घर-परिवार के कवनो ज़िम्मेदारी बियाहकटवा के मुड़ी पे ना होखे के चाहीं, काहे कि बियाह काटे के बड़हन ज़िम्मेदारी अब ओकरा मुड़ी पर बड़ले बा त दोसर कवनो घर के ज़िम्मेदारी कइसे सम्हारी? एह सब से लमहर शर्त ई ह कि बियाहकटवा अपना-गैर में जियादे फरक ना करे। जबे जहां मौका मिलल कि काम तमाम। ओइसे बियाहकटवा पटिदारी आ पड़ोस के बियाह काटल आपन परम कर्त्वय बुझेले सन। एह सब के एकेगो उपाय बा कि बियाहकटवन के कानो कान खबर ना होखे कि केकर कंहवा बियाह तय हो रहल बा, जवन हमनी के समाज में छिपावल मुश्किल बा। तब दोसरका उपाय ई बा कि जइसे कवनो अगुआ आवे त मुहल्ला के बियाह कटवन के बात-चीत करे खातिर आगे बढ़ा दीं। ठीक ओसहीं जइसे गाँव के लफुआ के गाँव के मुखिया बना देहल जाओ तS गाँव के पंचायत के कवनो फायदा होई चाहे ना बाक़िर गाँव के लोग के त लफुवन से जान बाँचिए जाई।

हमरो गाँव के एगो बाबू साहेब मशहूर बियाकटवा हउएँ। बियाह काटे के दिसाई पर पटिदार से लेके अवार-जवार तक सबका एके आँख से देखेलें। आ देखस काहे ना ? जब भगवान जी जनमजात एकेगो अंखिए देले बाड़ें त दू आँख से कइसे देखीहें? जब उ कुर्ता-धोती आ जूता पेन्ह के गरदन पे चदरा चढ़ा के घर से निकले ले त लोग लागेला कहे- लागता केनियो मामला उपटल बा। ई आपन कलाकारी जरूरु देखाइहें। लोग ठीके कहेला। हमहूँ उनका के कलाकारे मानीले। वजह इ बा कि आपन बात पहुंचावे के जवन हुनर उनका हासिल बा ई जानला के बाद उनका के कलाकार मानहीं के पड़ी। उनका पटिदारीमें एक दिन एगो लड़िका के शादी खातिर अगुआ अइलेसन। इत्तेफाक से पहिले इहे भेटा गइलें त पूछे लगलेसन - बाबू साहेब ! ई परिवार शादी खातिर कइसन रही ? चटाक से बोल पड़लें- बहुत बढ़ियाँ, पढ़ाई-लिखाई, सर-समाज, रहन

तंग इनायतपुरी

तंग इनायतपुरी (सुनील कुमार तंग) जी आजू के समय में देश बिदेश में एगो जानल मानल कवि के रूप में स्थापित बानी। इंहा के सीवान के रहे वाला हईं आ पैतृक भूमि पिलुई (दाउदपुर) ह। पेशा से हस्तरेखा आ अंगुलांक विशेषज्ञ हईं तंग जी। हास्य-व्यंग के रूप में, मजाहिया शायर के रूप में आ मंच संचालक के रूप में इंहा के भोजपुरी, हिन्दी आ उर्दू के सैकड़ों कवि सम्मलेनन में देश-बिदेश में आपन एगो अलग पहचान बना चुकल बानी। देश के शीर्षस्थ पत्र-पत्रिका में तंग जी के रचना प्रकाशित होते रहेला। दु बरिस पहिले, भोजपुरी में उंहा के काव्य-संग्रह "केहु मन पड़ल" प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी खातिर आखर के संघर्ष में इहाँ के बहुत योगदान रहल बा शुरुए से।

-सहन, बात-चीत, हित-नात, सब एक नम्बर। परिवार के मत पूछीं? आपस में सनमत एतना बा कि कवनो जोड़ नइखे। घर के कवनो नीमन- बेजाँय बहरी के लोग के कानो-कान खबर ना लागे। पांचों दिन उपास काट लेलेसन त अड़ोस-पड़ोस तक के पता ना लागे। अब रउरे बताईं कि उपास के नाम सुनके कवन बेटी वाला शादी करी? गइलेसन त आजले देखाई ना देहलेसन । बाह रे कलाकारी !

असहीं एक दिन एगो लड़िका के विषय में जानकारी खातिर एगो बियाह पार्टी उनका से पूछे लागल- बाबू साहेब! राऊर पटिदार के लइकवा शादी खातिर कइसन कहाई? बाबू साहेब कुछ देर सोचले आ फेर बोल पड़लें- एजी ! हमरा निगाह में बहुत अच्छा बा। अब कहाँ ले पढले बा आ का करेला ई त हम नईखीं जानत, बाक़िर चाल सुभाव में कवनो कमी हम नइखीं देखले। ना ओकरा के आजले दारू पियत देखनी ना कवनों गलत काम करत। अब लोग के कह देला से ना नू होई? लोग त तरह-तरह से बदनाम करेला। बाक़िर जबले हम अपना आँख से नइखीं देखले, कइसे कवनो गलत बात कह दीं? बहुत अच्छा कहाई। अतना सुनला के बाद कवन बेटीवाला ठहरी?

एह तरह के, तरह-तरह के किस्सा बाबू साहेब के मशहूर बा। एगो लड़िकावाला लड़की के विषय में पता लगावे खातिर पुछे लागल- ए बाबू साहेब ! शादी खातिर लड़किया कइसन कहाई? बाबू साहेब पहिले गंभीर होखे के नाटक कइलें आ फेर मुंह चुनियावत कहे लगले- देखीं जी, लड़की के सूरत शकल कवनो चीज ना नू ह। खर-खानदान बढ़ियाँ होखे के चाहीं। बड़ा नामी परिवार ह। लड़किया शायद कुछ पढ़लो लिखल बिया। सब कुछ खाली सुरते ना नू ह? सब देखे के चाहीं। ओइसे शादी -बियाह में केहु के लड़की के शिकायत ना करे के। बेटी त पंच के होले। शादी करीं बहुत अच्छा कहल जाई। अतना के बाद कवन लड़िका वाला तैयार होई?

ओह दिन बाबू साहेब के गेट जाम हो गइल जब उनका पड़ोस में शादी खातिर अगुआ अइलेसन। बियाह तय हो गइल। बाबू साहेब लाख कोशिश कइलें बाक़िर ओकनी से बात ना हो सकल। हार-पाछ के दू-चार दिन के बाद पूछिये बइठलें- हीत लोग कहाँ से आइल रहल ह ? सुनते पड़ोसिया लोग के कान खड़ा हो गइल। बाकिर बतावहीं के पड़ल- ओह पार दियरा से। सुनते बाबू साहेब फेर में पड़ गइलें। अतने में दियरा पार हीत लोग से बेटहा के फोन पर बात करे के जरूरत पड़ल। बाबू साहेब के बिना मांगले मूराद मिल गइल। लगले कहे- ल हई मोबाईल बात कर लS। बात करेके त उ लोग क लेहल बाकिर नम्बर त मोबाईले में रह गइल। फेर शुभ काम में देर का? घरे गइले आ नम्बर मिला देहलें- देखीं, हम राउर एगो शुभचिंतक बोलतानी। शादी-बियाह सभ देख-भाल के करे के चाहीं। लड़कियो वाला त कम ना रहे। कहलस- सब पता त लगा लेहलें रहनीं ह, खाली अड़ोस-पड़ोस के पता ना लाग पावत रहल ह, तवन राउर बात-चीत से पता लागिये गइल। चलीं अब कवनो बात नइखे, मन के दग-दग ओरा गइल। बाबू साहेब त बुझीं कि एकदम से पसेना-पसेना हो गइलें आ हकलात बोललें- उहे तS, हमहूँ इहे बात खातिर फोन कइले बानी। अतना कह के बाबू साहेब फोन काटे के चाहलें, तलेक उ फेन बोल पड़ल- जब एतना कष्ट कइनी त एगो किरपा आउर कइल जाव। रउरा पड़ोसिया बानी, तनी उनका से एक बेर बात करा देहल जाव। एगो जरूरी बात बतियावे के छूट गउए। रउरा पड़ोसिया बानी तनी उनका से बात करा देहल जाव। बाबू साहेब त सुनके एकदम घबड़ा गउवन, कि अब का करीं? बाकिर फेर बात सुझुए त केहु तरे इज्जत बचउवन- असल में आज हम गाँवे नइखीं। अगर जल्दीबाजी ना होखे त दू-चार दिन बाद गाँवे जाएब त बात करा देब। एतना कहके केहु तरे गला छोड़उवन आ फोन काट देहुवन। फेर मने-मन सोचे लगुअन कि लागता जे समय बदल गइल, अब पुरनका फार्मूला ना चली।

अइसे बाबू साहेब के कलाकारी के चमक पहिले से त मद्धिम पड़िए गइल बा। जब से लोग दिल्ली आ पंजाब आना-जाना शुरू कइले बा तबसे केहु कान खातिर कउवा के नइखे खोजत। आपन-आपन कान सबका पाले बा। बाबू साहेब भी त पहिले लेखां नइखन। बुढ़ापा सबका पस्त कइए देला। सबसे लमहर बात इ बा कि एह ईलेक्ट्रोनिक आ साइबर के जमाना में बाबू साहेब के पुरनका फार्मूला केतना काम करी? लभ मैरेज आ इंटरकास्ट मैरेज के जमाना में एह बियाहकटवा लोग के के पूछी?

सब मिला-जुला के बाबू साहेब अब साधुआत जा तारे। दोसर उनका लगे अब उपायो का बा? जवन मन्तर जानतारे ऊ साँप नइखे आ जवन साँप बाड़े सन ओकर मन्तर ऊ नइखन जानत। सब मिला-जुला के अब ऊ चुपे रहे में आपन भलाई बूझतारें। खैर, हमरा एह बात के अफसोस बा कि, बाबू साहेब जइसन लोग धीरे-धीरे खतम होत जा रहल बा। एगो अइसन कला जवन कम से कम दू शताब्दी तक हमनी के समाज पर हुकूमत कइले बा उ खतम होखे के कगार पर बा आ कलाकार लोग मैदान छोड़ के भागे के तैयार बा।

भोजपुरी दोहा

चित्र- राजीव रंजन

कहि दीहल आसान बा, सब देला उपदेश।
उहे करे के जब परे, बड़हन बहुत कलेश॥

दिन कइसे बहुरी भला, कइसे छूटी रोग।
जबले संग में ना जुटी, समय अउर सनजोग॥

धमा-चउकड़ी रोज बा, भाग-दौड़ बा रोज।
बाकिर सब बेकार बा, भौतिकता के खोज॥

भूख रहे जब पेट में, चाहीं रोटी-भात।
भरल पेट रही तबहीं, रुची कवनो बात॥
मँहगाई के मार से, लोग भइल बेहाल।
अबहीं अइसन हाल बा, आगे कवन हवाल॥

दुइ किलो चाउर बदे, तरसे केतने लोग।
दुइ किलो हीरा कहीं, ई कइसन दुरजोग॥

राखे फन छितराइके, हटे उहे फनकार।
फनफनात जे ना रहे, उ फन बा बेकार॥

लूट मचल होखे कहीं, जनि निकलो आवाज।
आखिर केहू का करी, बा चोरन के राज॥
खूबे परियाबरन पर, कइलS अत्याचार।
हाथ पहिलही कटि चुकल, गुनल-मथल बेकार॥

अत्याचार करत गइलS , खेलत गइलS खेल।
जब प्रकृति खिसिया गइल, काहें बुद्धी फेल॥

चक्रवात आन्ही-पानी, होई रोज भूडोल।
धरती अब उबिया गइल, खोजS नाया खोल॥

धरती कब्जा हो गइल, पकड़S अब आकाश।
बाटे एकरा बाद अब, खाली महाविनाश॥

अशोक कुमार तिवारी 'एडवोकेट'

बलिया उ. प्र. के द्वाबा क्षेत्र के निवासी अशोक कुमार तिवारी पेशा से वकील हईं , इँहा के लिखल भोजपुरी काव्य संग्रह ' पहिलका डेग " प्रकाशित हो चुकल बा। इँहा के लिखल कई गो कविता लेख पत्रिका पाती आ अउरी भोजपुरी पत्र पत्रिका मे प्रकाशित भईल बा। एह समय इँहा के बलिया मे बानी।

दू गो लघु कथा

उघटा पुराण

होत फजीरे रमेसर बो फूलमतिया के दुआर पर जा के ओकरा माई के बोलवली । उनका कान के लगे मुँह क के कहे लगली, - 'बहीन जी, फूलमती के उमीर अब उठान पर बाऽ, अब तनी डेग धरे के शउर सिखावल करीं ।'

'का भइल?'

'अबके रघुवीर बाबा के छोटकू के साथे बतिआवत देखनी हँऽ ।'

'त का हो गइल । दूनो संघहीं पढ़ेले सऽ । आज इम्तहान बाऽ, कुछ बात होई । एहीमें तू भर मुँह माटी काहें लेत बाड़ू ?'

रमेसर ब के त मुँहे माहुर हो गइल । भनभनइली, - 'सचहूँ कहल बा कि साँच के धाह बड़ा तेज होला । परपरा गइल होई ।' - कहि के चले के भइली तले बहीन जी के बरमंडे जरि गइल । लपक के उनकर झूला फारे के चहली बाकिर अँचरवे हाथ में आइल । - 'का कहलू ह? हमरा के साँच सुनावे से पहिले आपन इगुआर-पिछुआर देख लऽ । चलनी हँसे सूपा के, जवना में अपनहीं छिहत्तर गो छेंद बा ।'

बात बढ़े लागल । आवाजो तेज हो गइल । अड़ोसियो-पड़ोसी लहार लेबे लगले । हमहूँ जुम गइली । रमेसरो ब जम गइली, - 'ए बहीन जी, सहऽ तानी तऽ मुड़ी पर मत चढ़ऽ । ..... तहार नइहर-ससुरा दूनो जानऽ तानी । तहार बाप कई बेर पछीम टोला में पकड़ाइल बाड़े ।'

'रे फूलमतिया, हई ना देख रेऽऽ! .... तनी लेअइबे जरत लुआठी कि एकर मुँहवा झऊँस दींऽ । रे हई हँसतिआ! एकर माई पता ना कवना-कवना घाट के पानी पिअलस, तब जाके एकर नटूरा भाई भइलस, आ ई हमरा के हँसतिआ ?

हमार आँख सबके देखत रहे बाकिर कान खाली ओही दूनो जने के सुनत रहे । ओह लोग के उघटा-पुरान सुनत रहे । दुनिया आगे बढ़ल तऽ कई चीज छूट गइल । आजुओ हमार गाँव अपना प्रीत-अमरख, सेवा-सहयोग आ लड़ाई-भलाई में जीअत ओही तरे अपना मस्ती में जी रहल बा ।

मुँहनोचवा

बात 2002-2003 के हऽ । देश के अलगे-अलगे कोना में एगो जीव के चर्चा रहे । लखनऊ-गोरखपुर, सीवान-छपरा से ले के गाँवो-देहात में साँझ के अन्हरिया झोहते ओह जीव के भय सबके मन में पइसे लागे । लोग के मन में एतना डर रहे कि केहू दिशो-फराकी करे बिना टार्च, ढिबरी आ लालटेन के ना जाव । अचरज त ई रहे कि सबके करेजा में आपन डर भरे वाला उ मुँहनोचवा कहीं लउकबे ना करे । पता ना कहाँ से आवे आ झपट्टा मार के मुँहवे नोच ले जाव ।

कातिक के साँझ तनी उमस से भरल रहेला । मकई के खेत में मचान के नीचे गोईंठा के आगि पर गनपत बाल होरहत रहले । खेत के पुरुबवार कोना में कुछ खुरखुराइल सुनले तऽ उनकर कान खड़ा हो गइल । लागल कि जरुर कुछ बा । जागरुक हो गइले । जागरुकता के चेतना वाला मन के डरो डेरावे लागल । 'कहीं मुँह नोचवा तऽ ना हऽ?'

केशव मोहन पाण्डेय :

तमकुही रोड, सेवरही, कुशीनगर, उ. प्र. के रहे वाला केशव मोहन पाण्डेय, एम.ए.(हिंदी), बी. एड. बानी। अलग अलग मंच ला दर्जनो नाटक लिखले आ निर्देशित कइले बानी। अनेक समाचार-पत्र आ पत्र-पत्रिकन में अढ़ाई सौ से अधिका लेख, आधा दर्जन कहानी, आ अनेक कविता प्रकाशित। भोजपुरी कहानी संग्रह 'कठकरेज' प्रकाशित। आकाशवाणी गोरखपुर से कईगो कहानियन के प्रसारण, टेली फिल्म औलाद समेत भोजपुरी फिलिम 'कब आई डोलिया कहार' के लेखन-निर्देशनकइले बानी। केशव जी ए घरी दिल्ली में रहेनी।

खुरखुरइला के आवाज आहत गनपत एक-एक डेग बढ़ावत गइले तऽ देखले कि कवनो लइकी बाल तुरतिआ । ओकर पीठ उनका ओर रहे आ पीठीया पर ओकर करीका बाल रहरात रहे । सोचले कि आज तऽ खेत के पहरेदारी के फल मिल गइल । आज चोर पकड़ा गइल । पीछे से ओकरा के भर अँकवार पकड़ले कि ऊ लइकनीया एक्के झटका में अपना के छोड़ा लेहलस आ गनपत के मुँह पर एक झपट्टा मार के भाग गइल । ओकरा नोह से गनपत के मुँहवा नोचा गइल रहे बाकिर ऊ चिन्ह लेहले कि ऊ उनकर चचेरी बहीन चंचलीया रहे ।

लोग जानीत तऽ का कहीत । गनपत के साँच बोल के एगो लइकी के बेभरम कइला से अच्छा झूठ बोल के औकर मान बचावल लागल, से लोग के पूछला पर परपरात मुँह पर गमछा से भाप देत कहले, - 'अरे मुँहनोचवा हमार मुँह नोच लिहलस रेऽऽ।'

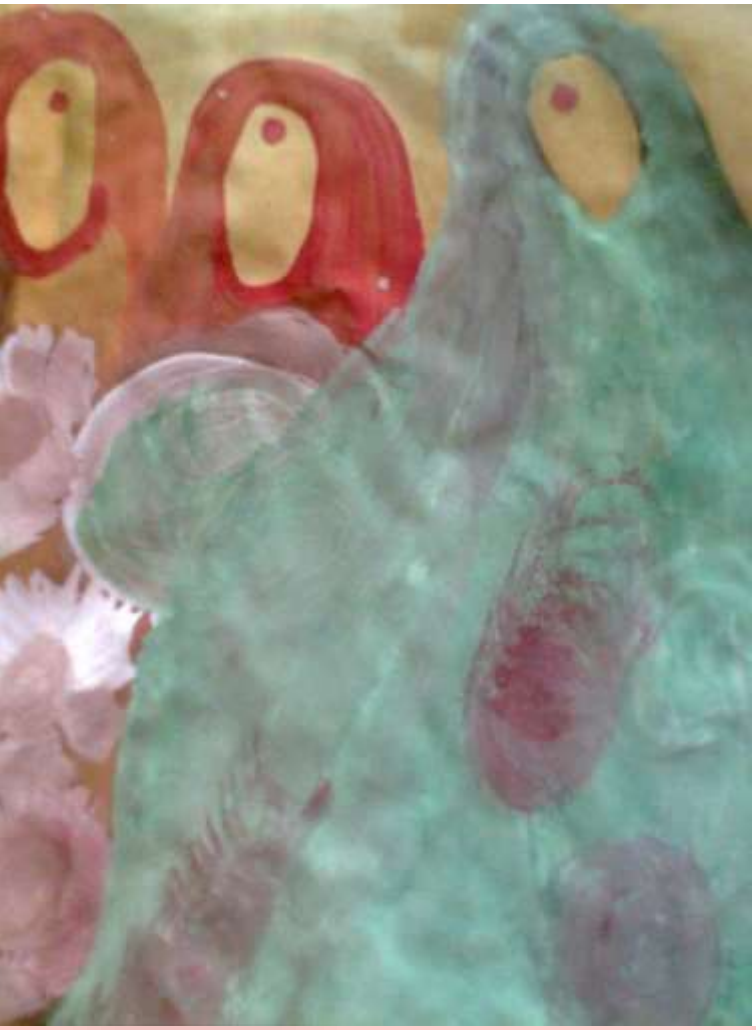

गुईयाँ

गुईयाँ , आवा
चला बचालीं आपन
बचल तनीसी गाँव
निबिया क ठाँव

चला बचालीं
बाग - बगईचा
पुरवईया क झोंका
आँगना में रोपीजाँ तुलसी
दुवरे पूरीं चौका
जहाँ पहली बेर
धईली अम्मा पाँव

गुईयाँ चला बचालीं
आपन बचल
तनीसी गाँव

चला बचालीं
दियना -बाती
वन तुलसी क चौरा
पोखरा में से पियरी माटी
ले आईं भर अँचरा
छा छोय के चिक्कन क देईं
दुवरा पर ताखा
जहाँ लिखाईल
बाबा के नावँ

गुईयाँ चला बचालीं
आपन बचल
तनीसी गाँव

डा० सोनी पाण्डेय

आजमगढ़ युपी के रहे वाली डा. सोनी पांडे जी , अध्यापक हईं । गाथांतर के संपादक, हिन्दी भोजपुरी साहित्य मे एगो जानल मानल नाव , मातृभाषा भोजपुरी मे कई गो गीत लिख चुकल बानी । सम्प्रति इँहा के आजमगढ़ मे बानी ।

गरीबी के फसरी

ए गंगीआ केने है रे तू ? कब तक सोएगा ? " - के आवाज जब बंसती के कान में पड़ल त उनकर नीन खुल गईल । ऊ आंख खोल के देखुवी त अभी तनी - तनी किरिन फुटे के शुरु भईल रहे । ऊ फेनु आंख बन कई के नीन लेबे लगली । बाकिर फेनु दू-तीन बेरा आवाज आईल - " अरे काहे नहीं खोलता है रे ? कबसे हमलोग तोरा दुआरे ठड़ा हैं । गंगीआ खोल हाली से । देख हमरा संगे हमारा समधी आया है ।"

ई सब आवाज सुन के शनीचरी , जिन बसंती के लगही सुतल रहली , ऊठ के अपना मड़ई के दुआरी पर लागल टाटी काऊरी देखुवी । जब ऊ देखुवी की टाटी ठीक से लागल बा त फेनु ऊ बसंती के आ के जगSवी - रे बसंतीआ । ऊठ ना भोर हो गईल , जो खेत घुम आव ।

बसंती उठ के अपना माई शनीचरी से कहली - " गंगीआ के पलानी में हेतना फजीरहीं पीए खातिर आ गईल बाड़े सन , तनी आऊरु साफ होखे दे तब हम जाएम । अभी त मड़ई में से गईलो नीमन नईखे । सब पीअक्कड़ बईठल बाड़े सन ।"

शनीचरी - "आछे ठीक बा । त जो झाड़ू- बहारु लगा दे । तलेक ले भोर हो जाई ।

बसंती के घर के बगल में गंगीआ के घर रहे । गंगीआ के काम ताड़ी छेवल आ बेचल रहे । गंगीआ के पलानी में दिन-दिनभर पिअक्कड़ सन के जुटान भईल रहत रहे । बाकिर आज त एक भोरे से ही पिअक्कड़न के जुटान हो गईल रहे । बसंती के गाँव में हरेराम के लईकी के बारात आईल रहल ह । ओह बारात में नाचो आईल रहल ह । काल्हु रात में मय बरतिआ खूबे पी - पी ढिमुलात आ अनाब - शनाब बकत गंगीआ के पलानी में खूबे राति ले आवत - जात रहले सन । अभी फजीरही - फजीरही हरेराम अपना समधी के ले के पीअे खातिर पहुंचल बाड़ें ।

बसंती अपना अंगना आ चूल्हा तर झाड़ू- बहारु लगा लेहुवी । तले शनीचरी खेत में से आ गईली आ ऊ बसंती के कहुवी -" जो बसंतीआ । खेत से घुमले आव । देख अब साफ हो गईल ।" बसंती आपन दुपट्टा माथा पर ध के मड़ई के दुआरी पर राखल टाटी के धीरे से फईला के टपका गोड़ राखत खेत काऊरी निकल गईली ।

एने शनीचरी चाह बना के रामलाला के जगवली - "लीहीं ना । हई चाह पी लीहीं । " रामलाला उठ के, कुला- गलाली क के शनीचरी के संगे खटिया पर अंगना में बईठ के चाह पीअे लगलें । एही बीच में बसंती खेत से आ गईली । शनीचरी कहली - चूल्हा पर तहरो चाह बा , ले लS । बसंती चाह लेके पीढ़ा पर बईठ गईली ।

रामलाला - "गंगीआ किंहा त अब लुकराध मचा देले बाड़े सन । फजीरे से राति ले हरमेशा पलानी में लड़ी लागले रहता । का कहीं कुछ बुझात नईखे । आज सोचतानी कि पुलिस में रपट लिखवा दीं । ई हरामजादा एक भोरे से राति ले ताड़ी बेचत रहता आ घर से मेहरारुन - लईकिन के निकलल मुश्किल भईल बा ।"

शनीचरी - "अरे । रऊरा काहे के पुलिस- थाना के चक्कर में पड़ल बानी । ऊ हमनी गरीब के कवनो बात सुनी नु भला । पुलिस में नालिस लिखवाईओं देम त गंगीआ कुछ पईसा दे के आ पुलिस आला लोग के ताड़ी पीआ के मना ली । ओपर से दिन - रात हमनी से लड़त रहीहे सन । रऊरा त काम करे खेत में भा कहीं मजूरी करे चल जाएम , बाकिर हमरा आ बसंती के जीअल मुश्किल क दिहें सन । गंगीआ दिनभर एहींगS हमनी के घरे ताकत - झांकत रहेला । रउरा एक बार मुखिया जी से ही ई बात बताईं आ उनके से गुहार लगाईं कि ऊ ओकरा के डांटस , समझावस ।"

प्रभाष मिश्र

छपरा, बिहार के रहे वाला प्रभाष मिश्रा जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बनी आ आखर के साथे जुड़ल बानी। इहाँ के कहानी आ कविता दुनु में हाथ सधल बा। फिलहाल इहाँ के नासिक में कार्यरत बानी।

रामलाला - अरे , मुखिआ ठीक रहिते त ईहे हाल होईत । ऊ त खुदे पीअे आवेला एजी , ऊ हमनी के का बात सुनी । ओकरा से कहला से बात ना बनी । पहिलिका मुखिआ जी रहिते त एगो बातों रहित । ऊनकर धौंस चलत रहल ह आ ऊ सही - गलत के फैसला ठाढ़े ले लेत रहुवन । अभी त ई जब से आरक्षण लागू भईल बा सभ डोढ़ - मंगरु मुखिआ बनल फिर तरे सन । देख ना , अपने गाँव मुखिआ बाड़ी नन्हक बो , आ ऊ एको बार गाँव - जवार घुमले होईहे ? सब काम करे ला नन्हईए । आ नन्हईआ पईसा में चूर बा , दु - चार गो अमला - फमला लोग हरमेशा ओकरा आगे पिछे झूलत रहे ला लोग । ऊ दिनभर तास आ दारु के पिछे भागत रहेला , ऊ का हमनी के बात बुझी । का कहले बारु , सरकारों अईसन- अईसन मलेछन के मुखिया आ सरपंच बनईले बीआ जवन ना त पढ़ल - लिखल बारे सन ना बड़ जात के फैसला कर सके ले सन ; आ ऊपर से जवन ऊल्टा- सीधा कमा तरे सन त ऊहों पी-पा के दारु - लबनी के दोकान गुलजार कईले रह तरे सन । छोड़ ई सब कवनो फायदा नईखे मुखिआ के कहला से , कवनो आऊरु उपाय होखे त देखे के पड़ी ।

शनीचरी - बाकिर एहंग कबले चली । जब अपने घर-आंगन में रहल मुसिकिल हो जाई त कब ले हमनी के चुड़ी पहिनले रहेम सन । रऊरा बाबू साहेब लो के जा के ई बात बताई , ओह लोग के कहला सुनला से कही बात बनो ।

रामलाला - अरे , अब तुहु अईसन कहलु । आधा बाबू साहेब के लईका लोग त लबनी खींचे एहीजी आवेला । छोड़ ई सब , अब हम त सोचतानी कि बसंती खातिर लईका देख के हाली से बिआह क दिआव । ना त केकरा - केकरा से लड़ेम - झगड़ेम आ केकरा - केकरा के पलानी आवे से रोकेम ।

शनीचरी - अरे , बिआह शादी करे खातिर दाम - पानी नु चांही । कहां बा हमनी के लगे । कईसे करेम एतना हाली बिआह । एह घरी त दहेजों नीमने देबे के पड़ी , तब जाके कवनो नीमन लईका भेटाई ।

रामलाला - आछा , छोड़ ई सब त हम देख लेम । पहिले कपारी पर के बोझा त उतारल जाव । हम आजु जाएम लईका खोजे तु तनी हाल्दी खाना बना द ।

शनीचरी आ बसंती मिल के हाली - हाली खाना बना देहुवे लोग । रामलाला खाना खा के कवलेसर भाई के ले के लईका खोजे चल गऊवन ।

एने गंगीआ ताड़ी छेवे तरकुल पर चढ़ल । ऊ ऊपर पहुंच के एकटकिए बंसती के घर में घुरे लागल । बसंती के माई जब ई लीला देखली त ऊ बसंती से घरे में रहे के कहुवी । बेचारी बसंती हारल मन से मने मने गरिआवत अपना माटी के घर में नीचे चटाई पर बईठ के आपन फाटल कपड़ा हाथहीं सूई से सीए लगली । बीच - बीच में जब शनीचरी तरकुल काऊरी ताकस त गंगीआ तरकुल के फाफर पतई के पिछे आपन मूंह छिपावे लागे । आ जब शनीचरी अंगना में ना रहस त फेरु ओकर लीला शुरु । एही बीच में एकबार शनीचरी अंगना से बाहर गईली त बसंती अंगना में आ के आपन चप्पल गंगीआ काऊरी देखावत मुअली के मार मारे के ईशारा कईली । फेनु गंगीआ त ऊपरे से आपना हाथ के अंगुरी के अपना ओठ तर सटा के बसंती काऊरी बढ़वलस । बेचारी बसंती , घर में से झाड़ू ले आ के ओकरा काऊरी मारे के ईशारा कईली आ फेरु आ के चुपचाप घर में बईठ गईली । इहें खेला धीरे- धीरे

रोजो - रोजो के हो गईल रहुवे । गंगीआ जब अपना पलानी में ताड़ी बेचे तबो ऊ बसंती के घर के दुआरी पर लागल झांख के टाटी के छेदा में से आंख फाड़ - फाड़ के देखे । कबो- कबो त ऊ आऊरो पिअक्कड़ लईकन सन के संगे - संगे अनर्गल बातो कहे ।

सांझ भईल त रामलाला घरे चहुपुवन । शनीचरी पानी पीअे के गिलास बढ़ावत पुछली - कहीं बात तय भईल ह ?

रामलाला - ना , आज कहीं बात फाईनल ना भईल ह । कवनो जगहा रिस्ता पसन ना परल ह । ह देख काल्ह एक जगहा जाएम , ओजी ठीक हो जाए के उम्मेद बा , काहे कि लईका के फूफा खुदे हमरा के ऊ लईका बतईले ह आ काल्ह हमरा संगे जा के बिआह ठीक करावे के कहले ह ।

शनीचरी - चली ठीक बा , काल्ह चल जाएम । दीहीं आपन कुर्ता आ धोती , ऐकरा के एकबार सोड़ा में साफ कर देत बानी । काल्ह जाए बेरि ले सुख जाई । शनीचरी रामलाला के कुर्ता-धोती धो के रेंगनी पर टांग देहली ।

अगिला दिने भोरे चाह - ओह पिअला के बाद रामलाला , शनीचरी से कहले - का हो , कह त एकबार गंगीआ के माई फूलन से एकबार ई बात कहल जाव , कहीं ऊ गंगीआ के समझावस - बुझावस ।

शनीचरी - अरे ना जी , का रऊरा एकनी के चक्कर में पड़ल बानी , ऊ भलमानुष रहित त एहींग होईत । ऊ त टोला भर में

कहत फिरे ले कि हमरा बबुआ से नीमन केहु हईए नईखे। ऊ गंगीआ के ओरहन सुनी नु भला।

रामलाला - आछा , रोकS तु तनी , एकबार देखतानी। ना त आज त बिआह तय कईए देम।

रामलाला , गंगीआ के दुआर पर पहुंच के ओकरा माई के आवाज देहुवन - " कहां बारु भऊजी। " ओने से फुलन आवाज देहली - ह आवतनी।

फुलन - का हS ? कईसे - कईसे भोरे - भोरे।

रामलाला - देख भऊजी , तहार गंगीआ हमरा घर के लईकी - जनाना के जिअल मुश्किल क देले बा। ताड़ी छेवे चढ़े से ले के पलानी में ताड़ी बेचे ले दिन भर हमरे घर पर ताका - ताकी करता। ऊ त आऊरु पिअक्कड़न सन के संगे अनाप - शनाप बकत रहता। तु त एगो लईकी - औरत के दिक्कत बुझतारु। एह से तु तनी ओकरा के समझईतु। ताड़ी के दोकान के दोसरा जगहा लगावे के कहS ।घर के सामने इ सब ठीक नईखे।

ई सुनत भईल कि फुलन एकदम पिन- पिना गईली। एकदम गरम होके कर्कस आवाज में ऊ कहली - देख फेनु ऐंग कहत मत होईहे ना त मूंह में से जीभ खींच लेम। तहार का औकात बा हमरा से बतिआवे के। हमार तरक्की देख के ते एतना जरतारीस। हमरा दुअरा आ पलानी में गाँव - जंवार के लोग आवता त ते काहे धनकSतारीस। आ गंगीआ के ऐको शबद उल्टा - सीधा कहलीस त हमरा से बेजाए केहु ना होई। ते अपना लईकी आ मेहरारु के सम्हार , ते हमरा दुलरुआ के ऊपर लांछन लगावSतारीस। हमरा लगे त बैल बा ऊ छुटा घुमबे करी , तोरा डर बा त अपना गाय - बछडु सन के बांध के राख। आ भाग हमरा दुअरा से ना त तोर हड्डी - पसली अभीए तुड़वा देम।

ई सब बातचीत ऐतना गरमा- गरमी आ तेज आवाज में भईल कि अगल - बगल के लोग पंहुच गईल। शनीचरी झट से आ के अपना मरद काऊरी से लड़े लागल बाकिर जब लागल कि लंगा से गंगा हरान रहे ली , त एकनी से के जीती , त ऊ रामलाला के हाथ पकड़ के घरे ले अईली। रामलाला घरहु आके एकदम परेशान रहले। इहें सब होत रहे तलेक ले लईका के फूफा आ गईले। रामलाला ऊनका संगे साईकिल ऊठा के चल देहुवन।

आजु सांझ के जब रामलाला घरे अऊवन त ऊ सबसे पहिले शनीचरी के लड्डु के पोलिथीन देत कहुवन जा तनी जरती माई तर चढ़ा आव। देख बसंती के बिआह तय क के आ गईल बानी। शनीचरी बहुते खुशी से हाथ - गोड़ धो के लड्डु चढ़ावे जरती माई तर चल गईली। ओजी से आ के लईका आला किंहा का - का बतकही भईल ह सब हिसाब पूछ लेहली।

बसंती के बिआह पांचे दिन बाद मंदिर में होखे के तय भईल रहे। रामलाला आ शनीचरी अगिले दिन से बिआह के तइआरी में लाग गऊवे लो। पईसा के जुगाड़ करे से ले के कपड़ा- साड़ी , नेग , खिआवल - पिआवल के समान सब खरीदाए लागल। पांच दिन बाद पंदरह साल के बसंती के बिआह पचीस साल के अनूप से हो गईल। बिआह के बाद बसंती , मंदिरे में से अनूप के घरे चल गईली।

एह बिआह के बाद रामलाला आ शनीचरी के एगो बड़हन बोझा हल्का हो गईल। रामलाला अपना बसंती के पढ़ावे के चाहत रहुवन बाकिर गरीबी आ अपना आस - पास के गंदा माहौल के देख के ऊ हथिआर डाल देहुवन आ बसंती के घरहीं रहे के कह देले रहुवन। शनीचरी आज बहुते खुश बिआ कि आज से ओकरा दिन - दिनभर आपन घर आ अंगना ना ओगोरे के पड़ी। अब ओकरा ना त गंगीआ के ताड़ी के गाछ से टकटकी लगईला से मन में आग जरी आ ना हीं मड़ई के टांटी से झंकला पर। ऊ अब घर - अंगना छोड़ के कुछ देर खातिर आराम से कहीं जा सकेली।

बाकिर ईहो एगो विधि के विंडबना बा कि बंसती जवन अपना नईहर के सुख , माई- बाप-भाई के संगे ढ़ेर दिन बिता के , पढ़ाई- लिखाई कके , आजादी से घूमे - फिरे के मजा ले के , बाग- बगईचा , मेला- पूजा , सब देखत एगो बिआह लायक ठीक-ठाक उमिर भईला पर अपना ससुरा पहुंचती बाकिर आज ऊ बाल - बिआह के घंटा अपना गला में लटका के जीवन में फसरी लगावे आला सरकवासी पर हाथ राख देले बारी।

जज के ऊपर केहु बा का ?

जब हम छोट रही त अक्सर इ सवाल हमरा दिमाग में घुलटिया मारत रहे कि जब सभके न्याय जज करेले त उ जज के हवे ? कवनो भगवान त नइखन नु भेजले ? तमाम तरह के बचकाना प्रश्न उठत रहे।स्कूली पाठ्यक्रम में भी एह बात के अहसास दिलावल जाला विद्यार्थी लोग के, कि न्यायालय के आगे सभ लोग बराबर बा। गाँव के खेतिहर मजदूर से लेके मंत्रीगण अउरी आला अधिकारी लोग भी।अउरी इ सत्य भी बा, खासकर भारत जइसन लोकतांत्रिक देश में जवना के चलते हमनी के गर्व करेनी जा।कई गो उदाहरन बा एह कड़ी में हमनी के देश में जवना में, गलती कईला प मंत्री से लेके मुख्यमंत्री तक के घुटना टेके के पड़ गईल बा, अउरी जेल जाए के मजबूर भईल बा लोग, एहिजा तक कि सत्ता में रहत।हम एह बात के भी स्वीकार् करतानी कि अभी भी लूप होल बा जवना में जवाबदेही अउरी जिम्मेदारी के भारी कमी देखल गईल बा।एकरा बावजूद सबसे ज्यादा देश में लोग पुलिस आ सरकार के अपेक्षा न्यायपालिका में विश्वास करेला अउरी काफी हद तक एगो इज्जत के नजर से देखेला।

लेकिन कई गो अइसन भी केस आइल बा जवना में न्यायपालिका के सर्वोच्च कुर्सी प बईठल जज भी कार्यपालिका के प्रभाव में लउकल बा, जवन कि न्यायपालिका के प्रतिष्ठा के गन्दा करत एगो बरिआर चुनौती सामने आइल बा।अइसना स्थिति में एगो प्रश्न उठल स्वाभाविक बा कि निगरानी, जाँच अउरी आरोपी के ऊपर कार्रवाई के कवनो कारगर व्यवस्था नइखे का ? जज के उपरो भी कोई बा का ? जब अइसन प्रश्न उठेला तब राजनीतिक लोग के एके स्वर में उत्तर आवेला कि कॉलेजियम सिस्टम ठीक नइखे ओकरे में दिक्कत बा।इ बात भी ठीक ओकरे लेखा हो रहल बा जईसे प्लानिंग कमीशन के बुरा भला कह के, ओकरा में कमी निकाल के नीति आयोग ला देवल गईल। फलतः न्यायिक चुनाव के सन्दर्भ में दावा करत राजनीतिक सलाह आइल अउरी सफल हो गईल जवना में कॉलेजियम सिस्टम के जगह प NJAC (National Judiciary Appointment Commission) ले लावल गईल। लेकिन एक सिस्टम में जव के साथे साथे घुन के भी पिसे के कोशिश कईल गईल बा एकरा के डिटेल में चर्चा करब। सबसे पहिले अइसन आमूल चूल परिवर्तन के बारे में विचार रख ली।

पिछिला 15 अगस्त के प्रधानमंत्री जी अपना भाषण में एगो प्वाइंट रखले रहन पूरा सिस्टम बदले के पक्ष में (उ मूल रूप से प्लानिंग कमीशन के लेके रहे)। अगर कवनो सामान बिगड़ गईल बा त पूरा बदल दी बजाए रिपेयरिंग के।सबसे पहिले हम आपन इ राय देहल चाहब कि अइसन एक्शन ठीक नइखे। अगर सिस्टम में दिक्कत बा, ओकर एफिशिएंसी कम बा त पूरा सिस्टमवे बदल दी, इ ठीक चीज नइखे स्वस्थ लोकतंत्र के नजरिया से।ओकरा में गलती ढूंढके ओकर मूल्यांकन करे के चाहीं कि कहाँ गलती बा ? ओकरा के सुधार करे के चाही, ओकरे में सुधार करके काफी कुछ बदलाव ले आइल जा सकेला ना कि पूरा बदल के। पूरा एकदम से बदले वाला प्रक्रिया के "आमूल परिवर्तन" प्रक्रिया कहाला जवन लोकतान्त्रिक शब्दावली से परे बा।मानी रउआ गणित हल करतानी, उत्तर ना आइल फिर दोसरा पन्ना प कोशिश कईली बिना अवलोकन कईले त कहाँ से उत्तर आ जाई ? भले ही रउआ पूरा कॉपी भर दी कोशिश करते करते उत्तर ना

गौरव सिंह

रोहतास, बिहार के रहे वाला गौरव जी इंजीन्यरिंग के छात्र हईं। भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी। ए घरी गौरव जी VIT यूनिवर्सिटी वेल्लूर , तमिलनाडू से पढ़ाई कर रहल बानी।

आई जब ले ओकर हर स्टेप के मूल्यांकन ना करब।अईसे त पार्लियामेंट्री सिस्टम काम नईखे करत आज, त का माने चुनावी प्रक्रिया बदल देवल जाव ? हर बार लेबोरेट्री के मेढक बनावल ठीक नइखे।

सबसे पहिले कॉलेजियम सिस्टम ह का ? कॉलेजियम सिस्टम जज लोग के स्थानान्तरण अउरी चुने के एगो सिस्टम हउवे जवना में मुख्य न्यायाधीश चार गो वरिष्ठ जज लोग के साथे मिल के विचार करेला।विचार करके राष्ट्रपति महोदय के आपन रिपोर्ट सौपेला, जवना में राष्ट्रपति के पूरा अधिकार बा ओह लोग के विचार प सहमती अउरी असहमति जतावे के। फिर सलाह मशविरा करके राष्ट्रपति महोदय सुप्रीम कोर्ट के जज के नियुक्त करेला।हाई कोर्ट के जज चुने खातिर इहे प्रक्रिया बा। अंतर इ बा कि हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश अउरी राज्य के राज्यपाल के भी सलाह लेवल जाला।दिक्कत एकरा में इ बा कि एह सिस्टम के संविधान में जगह नइखे जवना के सुधारल जा सकत रहे।जबकी सुप्रीम कोर्ट के जज के नियुक्ति खातिर आर्टिकल 124 अउरी हाई कोर्ट खातिर आर्टिकल 217 में ऊपर लिखल कंडीशन के ब्याख्या कईल बा।

अब बात कईल जाव (NJAC) तंत्र के, एकरा के संविधान में संसोधन करके 124A के रूप में जगह देहल गईल। इ काम कॉलेजियम के साथे भी हो सकत रहे।एह समिति में मुख्य रूप से (1) मुख्य न्यायाधीश, (2) दू गो सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ जज, (3) कानून अउरी न्याय मंत्री, (4) दू गो इम्मिनेंटइ दुनु इम्मिनेंट के चुनाव प्रधानमंत्री, मुख्य न्यायाधीश आ विपक्षी नेता के तरफ से होई।सबसे पहिला लूप होल बा जव के साथे घुन के मिलावल। कानून अउरी न्याय मंत्री आ दू गो इम्मिनेंट के घुसावल निष्पक्ष न्याय के चुनौती दे सकेला भविष्य में।खाली हम नईखी कहत बलुक ढेर बुद्धिजीवी लोग के विचार पढला के बाद समेट के एगो विश्लेषण रखत बानी।दूसरा लूप होल बा वीटो पावर देहल। एकर मतलब इ बा कि एकर प्रक्रिया में एह बात के व्यवस्था कईल गईल बा कि अगर कोई भी दू आदमी समिति के विचार से सहमत ना होई त ओकरा के पास नइखे कईल जा सकत।अब सोची तीन गो नेता लोग (कानून मंत्री अउरी दू गो इम्मिनेंट) के प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप बा । साथे साथे प्रधानमंत्री अउरी विपक्षी नेता के अप्रत्यक्ष रूप से। अब एह बात से अंदाजा लगावल जा सकेला कि निर्णय के झुकाव केने हो सकेला |

सबसे बड समस्या इ बा कि जस्टिस डिलीवरी दिनोदिन महंगा होत जा रहल बा जवना में अच्छा वकील, आम आदमी खातिर मिलल बड़ा मुश्किल हो गईल बा।एह हालात में अगर रउआ NJAC के थ्रू कमिटेड न्यायपालिका देने झाँके के कोशिश करब त एफिशिएंसी निश्चित तौर प घटी।हम एह से कहतानी काहे कि न्यायपालिका कवनो रिप्रेजेन्टेटिव सिस्टम थोड़ी न हवे कि ओकरा में अल्पसंख्यक सदस्य के सदस्यता जरूरी बा।रउवा बढ़िया से सूक्ष्मता से नजर गड़ाईम तब एगो अउरी बेजोड़ मजाकिया चीज मिली, उ इ कि दू गो इम्मिनेंट लोग में से एगो SC/ST/OBC/अल्पसंख्यक कम्युनिटी के होखे के चाही।काहे खातिर ? न्यायपालिका से निष्पक्ष न्याय के अलावा अउरी कवनो चीज के कामना कईल बेईमानी होई।उलटे न्यायिक प्रक्रिया में असंतुलन बढ़ी।ई तीनो बाहरी लोग जज के नियुक्ति करे के काबिल बा कि ना, एह बात के के तय करी ? न्यायपालिका मूलतः कार्यपालिका अउरी विधायिका के मनमानी करे से रोके के काम करेले, अपना दायरा में बांध के रखेले।

अतना ताम झाम के बावजूद न्यायपालिका अपना मुख्य धारा से दूर रह गईल बिया। अपना मूल बुनियादी चुनौती से आजुओ परे बिया।न्यायपालिका के जिम्मेदारी अउरी जवाबदेही के क्रम में तीन गो मूल समस्या बा (1) अझुराइल महाभियोग प्रक्रिया- एह प्रक्रिया में अतना जटिलता बा कि दुराचार करे वाला जज प महाभियोग लगावल बड़ा मुश्किल काम बा।पहिले 50 MPs के हस्ताक्षर होई तब 3 जज के समिति बईठी। फेर पार्लियामेंट में जाई बहस खातिर जवन पहुचते पहुचते राजनितिक स्टैंड लेला।(2) सबसे बड़ भविष्य के चुनौती बा जवन चर्चा ना भईल एह बिल में। न्यायिक भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठावे वाला वकील के खिलाफ कंटेम्प्ट ऑफ़ कोर्ट के मुकदमा। उदाहरण के रूप में प्रशांत भूषण जी एकर शिकार बनल बानी।उहाँ के ऊपर अइसन केस चलता।(3) तीसरा भावी चुनौती बा जवन एह बिल में अछूता रह गईल बा। उ हवे कि RTI(सूचना के अधिकार) से अपना के दूर रखले बिया सुप्रीम कोर्ट। कवनो जज के खिलाफ FIR करे खातिर चीफ जस्टिस से सैंक्सन जरूरी बा, जवन वरिष्ठ वकील लोग के पहुच से भी बाहर बा। तीनो चारो चीज के मिला के एगो निर्णय इ निकालतानी कि सुप्रीम कोर्ट अपना के बंद किताब लेखा अब तक रखले बिया जवना के खोलल बहूत जरूरी बा तबे जिम्मेदारी लउकी |

हम कवनो चीज के तबे कटाक्ष करीला जब हमरा ओह से बेहतर हल लउकेला।हम तीन चार लोग के सलूशन प्लान पढली, अउरी जस्टिस वर्मा समिति के रिपोर्टो। ओह सभ में सबसे बढ़िया सुझाव लागल प्रशांत भूषण जी के द्वारा प्रोपोज कईल 1997 वाला बिल, जवना में ढेर चुनौती समेटा जाता।जवना में न्यायपालिका खातिर उहाँ के फुल टाइम अउरी स्वतंत्र बॉडी के मांग कईले बानी।फुल टाइम एह से काहे कि मुख्य न्यायाधीश के लगे अतना समय कहाँ बा कि बढ़िया से जाँच परख के जज के चुनाव करस।जज के चुनाव खाली कानून जानला के आधार प ना होला, उ त वकील के पते बा ,बलुक एह चीज के मूल्यांकन कईल जाला कि भारत के विविधता के केतना बारीकी ले समझSतारें । संवैधानिक विश्वसनीयता केतना बा, भारत के हर वर्ग के समझ बा कि ना ? इ सब तबे हो सकेला जब फुल टाइम बॉडी होखी।एगो अउरी निक बात लागल कि अगर बाहरी आदमी के एह प्रक्रिया में घुसावे के बा तब वरिष्ठ CVC, वरिष्ठ मानवाधिकार कार्यकर्ता के ले सकिला, कैबिनेट के जगह पा।तीसरा निक बात इ लागल हमरा कि एह में समिति दू भाग में तुडल गईल बा एगो चुनाव समिति से जुडल अउरी दूसरा शिकायत समिति जवन वाचडॉग लेखा काम के निगरानी भी करत रही अउरी शिकायत भी देखत रही।

छनुकी

अरविन्द कुमार पाठक

करमवा

दुनिया हमरा के भुलादे
चाहे हम दुनिया के भुला दीं
करमवा ना छोड़ेला
मरलो के बाद।

***

आनन्द

देवेवाला
लुटावत रहेला
आनन्द
हम रहनी फँसल मयवा में
आ अँखिया कर लेनी
बन्द।

***

सरजक

सरजक अवरु
सरजन एके ह
तोहर दिखेला
त देखल।

***

परेम

अहम हटल
परेम बढ़ल।

***

दुनियादारी

मउवत
आवेला त क्रूर
ना आवे त
निष्ठुर
दुनियादारी के चक्कर
समझल
बहुते कठीन।

***

www.bhojpurisahityangan.com

अगुवा

गावS सभ सखिया अगुआ के स्वागत में गारी ।" माइक पर जइसही ई गाना गुंजल मामा के चेहरा पर लाली आ गईल । एकरा बाद त स्वागत गीतन के बौछार चालू हो गईल ।

“अगुआ के पाकल पाकल मोछ, जैसे कुकुरे के पोंछ ।"

"अगुआ जवार के सबसे बड़का गुंडा, हमरा बाबू के ना दिहववले हीरो होण्डा । "

ओ बेरा हमार उमिर लगभग नौ साल के होई । भले उमिर कम होखे पर नीमन बाउर के फर्क ठीक से बुझाव । हम बुझ गईनी कि अगुआ के स्वागत ठीक से नईखे होत ।

“रामायण के दीदी के दुनिया भर के इयार , दिन भर घूमेली उ हाट बजार”

इ गारी त सुन के हमार खून गरम हो गईल । इ गारी त हमरा मामा के दिहल जात रहे । ए लोग के एतना हिम्मत कि हमनी के गारी देता लोग । ओ लोग के जबाब देवे खातिर हम मामा के तरफ देखनी | पर इ का ! गाँव के सबसे बड़का खिसियाह रामायण मामा मुस्किया के गारी के आनंद लेत रहले । गारी त दूर के बात गाँव के केहू उनसे आँख उठा के भी बात न करे । ओइसन आदमी के उनका बहिन के साथे अइसन गन्दा गारी दिहल जात रहे और उ मुस्करात रहले ।

“का मामा जी अइसन गन्दा गारी सुनके रउवा मुस्कुरातानी?” हम बीख से कहनी “हमार त मन करता कि हम जाके ओ लोग के मुँह नोच लीं ।”

“अइसन ना कहल जाला । इ कुल परम्परा ह । सदियन से चलत आवता । हमनी किहाँ शादी बियाह के गीत गारी शादी के शोभा बढ़ावे खातिर दिहल जाला । एह पर खिसियायिल ना जाला ।" मामा समझावत कहनी ।

वाकई में ई परम्परा के ही कमाल रहे कि ओइसन खिसियाह आदमी, अभद्र गाना सुनके भी गिल रहे । हमार रोष तनी कम भईल ।

इ आज से करीब पच्चीस साल पहिले के बात होई । गर्मी के छुट्टी में हम मामा जी किहाँ गईल रहनी । मामा जी हमके साथे तिलक में ले गईल रहनी । मामाजी ओ बियाह के अगुआ रहनी ।

तिलक के बाद बारात में भी हमके जाए के मौका मिलल और मामाजी के स्वागत में एक से बढ़ के एक गारी सुने के मिलल । दुनु पक्ष के मेहरारू लोग खइँची भर भर के गारी देहले रहे । बुझात रहे कि मामाजी ओ लोग के खेत काट लेले होई ।

असल में इ गारी अगुआ के काम के ईनाम रहे । अगुआ के जेतना ढेर गारी मिले, ओकरा अगुअई ओतने सफल मानल जाव । देखे में एकदम आसान लागे वाला गारी, गावल कवनो अनाड़ी के काम ना रहे । हर गाँव में एगो चाची, दीदी या फुआ अइसन होखे लोग जे गारी गावे में एकदम निपुण होखे लोग । दोसर मेहमान आवे लोग चाहे ना पर ओ लोग के उपस्थिति के खास इंतजाम होखे ।तनी अगवाहे बोला लिहल जाव । कई दिन तक उ लोग प्रैक्टिस करे । नया फ़िल्मी गाना के तर्ज पर नया -नया गारी के निर्माण होखे । जेतना गारी इ लोग गाना के तर्ज पर एक सीजन में बना देव, ओतना आनंद बख्सी या साहिर लुधियानवी जैसन गीतकार लोग कई साल में लिख

धनंजय तिवारी

सिवान , बिहार के रहे वाला धनंजय जी आखर पेज से शुरुवात से जुडल बानी । इँहा के आखर प कई गो कहानी लागि चुकल बा । भोजपुरी भाषा के ले के इँहा के प्रयास सराहनीय बा । लगातार भोजपुरी में लिख रहल बानी । एह समय ईँहा के मुम्बई मे बानी ।

पावत होई । गारी समाप्त भईला पर बाकायदा बाकी महिला लोग बड़ाई में कहे -"चाची खूब न भड़नी ह अगुआ के ।" इहे ओ लोग के इनाम रहे । अइसन ना रहे कि पायरेसी आजुए के दौर में बा । ओ घरी भी ए गारी कुल के चोरी होखे और फिर मेहरारू लोग दूसरा शादी बियाह में जाके आपन धाक जमावे लोग । कई बार गाना के मालिकाना हक़ खातिर लडाई भी हो जाव, और बाकायदा औरत लोग के पंचायत बईठे एके सुलझावे खातिर ।

खैर बात होत रहल ह अगुआ के । आज से बीस पच्चीस साल पहिले, अगुआ के बिना शादी के कल्पना कईल ही असंभव रहे, हमनी के भोजपुरिया समाज में । आज भी अगुआ लोग बा पर अब अगुअई के स्वरुप काफी बदल गईल बा । अब बिना अगुआ के भी ढेर सारा शादी होता ।

रामायण मामा अपना जवार के सबसे बड़का अगुआ रहनी । अपना पूरा जिंदगी में कम से कम दू सौ से ज्यादा शादी करवले होखेब । गोधना कूटईला से पहिले ही लोग आहुण कूट देव मामा के दुवार पर । गोधना के बाद एको दिन उहाँके साइकिल पलानी में ना रहे । अपना काम के चिंता छोड़ मामाजी लोग के शादी करवावे में भीड़ जाईं । एके लेके मामी से कई बार झगड़ा भी होखे, पर मामा जी कभी भी इ काम ना छोड़नी । अइसन लागे कि उहाँ के जनम ही अगुवाई खातिर भईल होखे । तबे त जवना उमिर में लोग चिका बाड़ी खेले ओ उमर में उहाँ के अगुअई करे लगनी । मात्र चौदह साल के उमर रहे जब अपना अगुवई में पहिलका शादी करवले रहनी ।ओबेरा मामा जी के भी बियाह ना भईल रहे ।

मामाजी के अगुअई के एतना शोर रहे कि गलती से भी शादी लायक लईका के दुवार पर खड़ा हो जाईं त लईका मने मन गिल हो जाव । कहीं ओकरा बाबूजी के बारे में पूछ दिहनी, तब त उ लजा के घर में भाग जाव । आज हर जगह टीम भावना के बात होला पर असली टीम भावना त पुरनका जमाना के अगुआ लोग में रहे । अइसन ना रहे कि मामाजी एकलौता अगुआ रहनी । उहाँ जईसन दू चारगो अगुआ लोग हर गाँव में होखे और सब एक दूसरा से मिल जुल के शादी बियाह करावे । मामाजी के भी बाकायदा टीम रहे जेमे चनेसर मामा, गंगासागर नाना, बच्चा बाबा आदि लोग रहे । आज हमनी के आँकड़ा के कंप्यूटर में जमा करेनी जा पर इ लोग चलत फिरत कंप्यूटर रहे । जेतना जानकारी ए लोग के डाटाबेस में रहे ओकर 10% भी हमनी के लगे ना होई । केकर लईका लईकी कब पैदा भईल रहे, केतना रहे, राशी नाम का रहे सब अपडेट रहे । इहाँ तक कि कवन पंडित छठियार अउर सतईसा करवले रहले इहो याद रहे । इ कुल जानकारी शादी लगावे में काम आवे । हमनी खानी ए लोग के गूगल कईला के जरुरत ना रहे । मिनटे में ए लोग के दिमाग सर्च क लेव कि कवना लड़िका के साथे कवना लईकी के कुंडली मिल जाई । नाड़ी दोष से लेके नक्षत्र मिसमैच तक इ लोग तुरंत ही जान लेव ।

देखे में भले आसान लागे पर अगुअई एगो विशेषज्ञ वाला काम ह । एमे तमाम तरह के चुनौती और बाधा आवेला । मामा के देखा देखि उहाँ के गाँव के बेचू भी एक साल अगुअई शुरू कईले । उनका लागे कि इ बहुत आसान काम बा । पहिलके बारात में बेटा और बेटिहा पक्ष में लाठी लठउअल हो गईल । बीच बचाव में कपार फूटला के बाद उनकर अगुअई हमेशा खातिर खतम हो गईल । अगुअई के काम पुन्य के साथे साथे बड़ा अपयशी भी होला । बियाह में कवनो भी बाधा खातिर सीधे अगुआ के ही जिम्मेदार मानल जाला । लईकी अगर ससुरा में जाके सुख करी त कवनो बात ना पर कवनो तकलीफ भईल त अगुआ के लोग खईची भर भर के गारी देला । लईकी वाला लोग कहेला "हमरा लड़की के भास अईले" । ठीक एहिंगा बेटहा भी लईकी से नाराजगी भईला पर कहेला कि "अगुआ हमके डूबा देहलस" ।

पर मामा और उहाँ के साथी लोग के बात कुछ और रहे । ओ लोग के रसूख रहे । शादी के बाद शायदे कभी कवनो शिकायत केहू कईल । अगर शिकायत आईल भी त उहाँके आगे बढ़के, हस्तक्षेप क के, सब कुछ ठीक करा दीं ।

पुरनका समय में अगुआ लोग के सबसे बड़का दुश्मन रहे बियाह कटवा । जैसे हर गाँव में एगो दुगो नामी गिरामी अगुआ रहे लोग, ठीक ओईसे ही एकाध गो बियाह कटवा भी रहलें । ए लोग के मूल काम ही बियाह काटल रहे ।एहिमे ए लोग के स्वर्ग लोक के प्राप्ति जईसन आनंद आवे । गमछी में सतुआ बाँध के और लोटा में पानी लेके जवार जवार घूमे लोग बियाह काटे खातिर । गाँव में जेकरा भी बियाह कटवा से दुश्मनी रहे उ अपना लईका लईकी के शादी छिपा के ही करे ।

मामा जवन बियाह करायीं ,उ डंका के चोट पर कराईं। कवनो बियाह कटवा लोग के हिम्मत ना रहे कि उहाँ के अगुअई वाला बियाह काट देस। एक बार सूबेदार नाना के लईकी के बियाह उनकर पटीदार जगदीश, जवन की बहुत नामी बियाह कटवा रहले, ई कहिके कि लड़की गूँग बिया,काट देहले। मामा ओ बियाह के अगुआ रहनी। फिर का मामा अपने दुआर पर ही पंचायत रख देहनी। अपना खर्चा से लईका पक्ष के बोलववनी और लईकी पक्ष भी जुटल। ओ घरी लईकी देखे के परम्परा ना रहे ,ओकरा बावजूद भी लईकी देखववनी और कटल बियाह फिर से तय हो गईल। जगदीश मामा के डर से चौरा में भाग गईले। मामा उनके चौरा में ही लसार लसार के पिटनी। ओ मार के बाद जगदीश और जवार भर के बियाह कटवा लोग बियाह काटल छोड़ दिहल।

एतना चुनौतीपूर्ण और तनाव वाला काम भईला के बाद भी अगुआ के ईनाम में मिले एगो धोती और गमछी। जवना के लेबे से अकसर इ लोग मना क देव। शादी बियाह करवावल ए लोग खातिर पुन्य के काम रहे, धरम करम रहे, कवनो पेशा ना।

ए लोग के बस एकही ध्येय रहे कि लईकी शादी क के जाए त ससुरा खूब सुख करे और ओ लोग के नाम लेव। शराबी कबाबी कुल के इ लोग कभी शादी ना करवावल। कई गो लोग जेकर शादी न होखे, उ पईसा लेके मामा किहाँ आवे कि, हमार बियाह करा दीं। मामा इ कहिके मना क दीं कि- हम अगुआ हईं दलाल ना। ओ घरी के अगुआ लोग बड़का उसूल वाला होखे।

मामा और उहाँ के टीम आखिरी शादी, जीवन मामा के लईकी के करवले रहे। लईका के ममहर गाँव में ही रहे। सब जान सुनके ही मामा शादी करववनी। लईका के परिवार दिल्ली रहे। देखे से सुन्दर और सुशील लईका, एतना बड़हन शराबी होई ,इ मामा के तनिको पता न रहे।

शादी के बाद लईकी के बड़ा दुःख देहलS सन। अंत में उ आत्महत्या क लेहलस। ओकरा मौत खातिर मामा और उहाँ के साथी लोग अपना के जिम्मेदार मानके अगुअई हमेशा खातिर छोड़ दिहल। इ पुरनका जमाना के अगुअई के बात रहे। अब त अगुअई के स्वरुप काफी बदल गईल बा। शादी करवावे से पहिले ही अगुआ अपना खातिर सूट बूट के फरमाईश क देतारें। ढेर लोग अब कमीसन भी लेता। शादी के बाद लईका लईकी के का होता एसे केहू के मतलब नईखे।

इन्टरनेट के आ गइला से भी अगुआ के महत्व कम हो गईल बा। लोग ओकरा माध्यम से शादी क लेता। शादी तय भईला के तरीका में बदलाव के साथे शादी बियाह में होखेवाला रस्म में भी बदलाव आईल बा। दू दिन के बजाय अब एक दिन के शादी होता। बहुत जगह अब शादी दिने - दिने हो जाता। अगर रात में होता त गीत गारी के जगह डी0 जे0 लगा के नागिन डांस करता लोग। गीत त अब कवनो बीतल जमाना के बात हो गईल बा। अब जब गीते नईखे होत त अगुआ खातिर गारी के बात सोचल, “ए महामार में दीवान जी के तजिया” वाल बात बा।

आज के दौर में हमनी के बियाह में अगुआ के भूमिका कम हो गईल बा। उ दिन दूर नईखे जब अगुआ एगो इतिहास बन जाई। आवेवाला पीढ़ी शायद यकीन भी ना करी कि एगो अगुआ भी होखे, जेकर बियाह में एतना बड़हन योगदान होखे।

भोर

अखबार के पहिला पन्ना पे बड़-बड़ अक्षर में छपल रहे- 'बेमौसम बरसात और ओले ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के करीब-करीब सौ से भी अधिक किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया।' एह समाचार के पढ़ के निम्न–मध्यमवर्गीय परिवार के मेधावी आ चिंतनशील युवा विजय शांत ना रह सकले। काहे कि ऊ ओह वर्ग के प्रतिनिधित्व त ना करेले लेकिन मेधावी आ चिंतनशील होला के बावजूद हाल -साल के बरिस में आर्थिक रूप से उनकर परिवार आ ऊ अब वोह रेखा के बहुत करीब ले पहुँच जरूर गइल बाड़े। एहसे प्रतिकूल परिस्थिति में उ कवनो क्षण ओह वर्ग में शामिल भी हो सकतारन एकर आशंका भी बा। जवना के कल्पना मात्र से ऊ भयभीत हो गइले आ ऊ वोह दर्द के ठीक-ठीक महसूस कर पवले जे उनका के एह घटना के पढ़ला के बाद चैन से बइठे ना देहलस ।ई समाचार पढ़ला के बाद ऊ एकदम से बेचैन हो गइले आ एही बेचैनी में उनका मन में तरह-तरह के ऊँच-नीच विचार गोता लगावे लागल । उनकर आक्रोश कबो पूंजीपति-वर्ग पर निकले त कबो स्वार्थ के पुतला बनल नेता वर्ग पर।

विजय के आक्रोश से त मौसम भी बच ना सकल। ऊ सोचे लगले कि गरीबन के एह मुसीबत के घड़ी में अपना स्वार्थ खातिर लूटत-खसोटत लोग भला कवनों मजबूर के मदद का करी ? बाकिर मौसम के त गरीबन के साथ देबे के चाहीं। ई मौसम भी त पहिले नाहिन नइखे रह गइल। एकदम से मगरूर हो गइल बा ।एह मगरूर मौसम के मगरूरी त देखीं कि ओकरा अपना मस्तीखोरी में दोसरा के दुःख–दर्द के भी तनिको चिंता नइखे। ओकरा एह बात के त तनिको एहसास तक नइखे कि ऊ खेल-खेल में धरती पर जवन उलट-पुलट कर रहल बा, ताण्डव मचा रहल बा ओकर असर एह धरती पर केहू-केहू तरह आपन जीवन-यापन करेवाला लोगन पर का पड़ी ? कहे खातिर त कहल जाला कि आँधी–तूफान आवेला त बड़-बड़ पेड़ ही धराशायी होला। अपना जीवन आ विकास खातिर संघर्ष करत छोट-छोट पौधन आ घास-फूस पर ओकर कोई असर ना होला। बाकिर आँख कुछ दूसरे दृश्य दिखावे ला। आजतक केहू के कोई अइसन घटना सूने चाहे देखे के ना मिलल होई जवना में कुछे दिन के बेमौसम बरसात चाहे आँधी-तूफान में कोई धन्ना सेठ आपन भा अपना घर-परिवार के पेट पाले के चिंता में एह कदर विचलित हो गइल होखे कि अपना मृत्यु के ही अंगीकार कर लेले होखे। बाकिर अपना देश के मध्यम आ निम्न श्रेणी के किसान-मजदूर के बात का कहेके बा ? कौनों तरह के गाँव में विपदा आई लेकिन जान त ओकरे जाई।

विजय अपना एही मन: स्थिति के साथे बेचैनी में उठले आ उद्देश्यहीन गाँव की ओर निकल गइले। थोड़ा दूर चलला पर सड़क के बाँयी ओर महेश काका के घर उनका लउकल आ अपने आप उनकर पैर महेश काका के घर के ओर बढ़ गइल । शायद अपना बीमार काका के देखे के बहाने अपना मन के भी ऊ स्थिर करे के चाहत रहले। महेश काका अपना घर के पुरनिया हउअन आ केतना दिन से बीमार चलताड़न। उनकर घर बा छोट आ रहे वाला बेकत बा जियादा। एह से महेश काका खातिर घर के ओसारा के एक ओर घेर-घार के छोट कोठरी नाहिंन बना देहल गइल बा । ओही कोठरी में महेश काका खातिर एगो खटोली भी डाल देहल गइल बा। खाँसी के सतावल महेश काका अप्रिल शुरू भइला ले धूप-छाँव नाहिन गर्मी-सर्दी के अइला-गइला से हैरान हो गइल बाड़े आ दिन अच्छा भइला के इन्तजार में अपना खटोलिए पर से बाहर के ओर आँख गड़वले टुकुर-टुकुर देखत रहस कि कब बरखा-ओला से पिण्ड छुटित आ ऊ पहिले नाहिन गाँव के

ज्योत्सना प्रसाद

सिवान , बिहार के रहे वाली ज्योत्सना जी , हिंदी भाषा आउर साहित्य में बी. ए. (प्रतिष्ठा), एम्. ए. कइले बानी , अउर पटना विश्वविद्यालय से प्रोफेसर डॉ नंदकिशोर नवल के निर्देशन में महाप्राण निराला के गद्य के शैलीगत अध्ययन पर डॉक्टरेट कईले बानी । हिंदी में उपन्यास "अर्गला" प्रकाशित बा दू गो उपन्यास "अंतत:" आउर "मुक्तकुंतला" , कविता संग्रह आउर कहानी संग्रह प्रकाशन के प्रतीक्षा में बा। अरबी भाषा के मशहूर उपन्यास "अल-रहीना" के हिंदी में "बंधक " शीर्षक से अनुवाद आउर प्रकाशन । जॉर्डन, चीन आउर अमेरिका में आयोजित सम्मेलनन में कविता पाठ। एह घरी मुंबई में रह रहल बानी।

एक फेरा लगा अइतन । ई मौसम बा जे बावला बनल बा आ महेश काका जइसन बीमार आ पुरनिया लोग अपना बिछवना के ही आपना दुनिया बनावे खातिर मजबूर बा आ दिन-रात खांय-खांय करत अपना खटिये पर पड़ल रहता।

विजय महेश काका के लगे थोड़े देर ले बइठले फेर उनका घर से बाहर निकल गइले बाकिर उनका मन के शांति ना मिलल। उनका आँख के सामने अखबार के उहे घटना फेर से कऊंधल आ त्रिभुवन के बाबूजी इयाद पड़ गइले जे पिछला साले अइसने मौसम आ कर्जा के मार से अइसन बेधइले कि अँधेरिया रात में कुआँ में कूद के आपन जान दे देहले । आखिर ऊ करबो का करते ? कर्जा केहू से लिहल होखे बाकिर ऊ वसूलेला एगो सहूकारे नाहिन । एह से त्रिभुवन के बाबूजी के कई दिन से आँख से नींदे गायब हो गइल रहे। बैंक के लेहल कर्जा कइसे भराई ? बैंक मननी कि साहूकार ना ह बाकिर अपना कर्जा वसूली में कवनों साहूकार से कमों ना ह।

विजय के यादन के पिटारा में दबल एक से बढ़ के एक दर्दनाक घटना ऊपर आवे लागल आ विजय के बेसुध करे लागल । मौसम के ई मार खाली रबीए खातिर घातक त नइखे नू बल्कि साग-सब्जी खातिर भी बा। आलू समय के पहिलही कोड़ा गइल आ हरियर तरकारी के पौधा बतिया समेत सूख गइल। जे थोड़ा–बहुत बाचSलो बा त ओमे बटई भर के फर लागल बा। कवनों-कवनों पौधा में त बतिये तूर लेबे के पड़ता ।आम के साथे भी उहे हाल भइल । आम में मोजर लगला के साथे जे आफत शुरू भइल रहे ऊ टिकोढ़ा लगला तक लागल रहे। बरखा आ ओला ओकरो के भी कहाँ छोड़लस ? आखिर किसान जिओ त केकरा भरोसे ? गेहूँ-चना से भी कवनो उम्मीद नइखे। गेहूँ –चना के अइसन मुअल –मुअल दाना बा कि बीया आ खाद के पइसा निकलला के भी कोई सूरत नजर नइखे आवत।

किसानन के ई हाल कवनों एक गाँव के नइखे गाँव के गाँव कुलवासिए बा। केकर दुःख केकरा आगे रोवल जाव ? एही पैदावार के भरोसा पर त कई लोग अपना –अपना बेटा-बेटी के बियाह ठनले रहल ह। बाकिर मौसम घर में बियाह ना बल्कि श्राद्ध करे के स्थिति पैदा कर देहले बा। कईगो किसान अपना बेटा के घोड़ी पर बइठावे के सपना अपना आँखन में सजवले ही एह दुनिया से विदा हो गइले त कइगो किसान अपना दमाद उतारे के लेकिन एह बेमौसम बरसात आ ओला सबके सपना चकनाचूर क देहलस।

विजय थक-हार के अपना घरे वापस लौट अइले । आवते आपन हाथ-पैर धोवले । बाल्टी से निकाल के कई लोटिया पानी अपना आँख-मुँह पर डललन जइसे कि अपना आँख में समाईल किसानन के वोह हृदय-विदारक दृश्यन के पीड़ा के धो के कम करे के चाहत होखस। चाहे कम से कम कुछ समय खातिर हटाइए देबे के चाहत होखस जे उनका के चैन से साँस भी लेबे ना देत रहे। ओकरा बाद ऊ अपना माई से कहलन कि आज उनका भूख नइखे एह से अब ऊ सुते जा ताड़न। उनकर माई दू-चार बेर उनका के खाए के कहली फेर अपना बेटा के मन: स्थिति के आभास कर चुप रह गइली।

विजय अपना बिछावन पर आ गइले बाकिर एतना जल्दी उनका आँखन में नींद कहाँ आवेवाला रहे ? ऊ त अपना बिछावन पर आ के भी अपना विचारन में डूबल रहले ।ऊ समझ ना पावत रहले कि रात-दिन एक करके जे किसान सबके खातिर अन्न उपजावेला वोही अन्न के लाला ओकरे परिवार खातिर कइसे पड़ जाला ? एह संसार में बिना हाथ –पैर चलवले लाखों लोग के पेट भर जाता त अपना खून-पसीना एक करके जाड़ा-गर्मी-बरसात में कोल्हू के बैल नाहिन खटे वाला लोगन के अइसन दुर्दशा काहे ? आखिर किसान–मजदूरन के जिन्दगी में ही अइसन परिस्थिति काहे आवेला ? आखिरकाल एह लोगन के जिन्दगी में ई दुःख कबले लिखाइल रही ? कहे के त हम इक्कीसवीं शती में जीयतानी । रोज-रोज नया-नया अविष्कारे होत रहता त फेर किसानन खातिर कुछ काहे नइखे होत ?

व्यथा के बान से विजय के बेधाइल मन के बोझ उनकर थाक के चूर-चूर भइल शरीर बहुत देर ले उठा ना सकल आ एने विजय अपना विचारन के गलियन में चक्कर काटते रह गइले आ ओने उनकर कब आँख लाग गइल ई उनका पतो ना चलल। सबेरे ऊ जब नींद से जगले त उनकर मन थोड़ा शांत रहे। देह के टूटल भी अब कम हो गइल रहे। ऊ अपना के सामान्य देखावे के चाहत में रैक पर धइल रेडियो उठवलन आ दुअरा के ओसारा में आ गइले। रेडियो पर मुख्य समाचार देत रहे जवना में मौसम के मार से घवाहिल किसान भाई के प्रति सहानुभूति जतावत सरकारी घोषणा कहल जात रहे " किसान भाई अपने को अकेला मत समझे । वे इस देश के अन्नदाता हैं । उनका देश, उनकी सरकार उनके साथ हैं इसलिए उनकी यह परेशानी सारे देश की परेशानी है। उनके हर कदम पर सरकार उनके साथ है। उनके नुकसान की हर

सम्भव भरपाई सरकार द्वारा की जायेगी। किसान भाइयों का 70% बरबाद फसल पर मुआवजा देने के क़ानून में सुधार कर उसे 33% कर दिया गया है। मुआवजा की राशि भी बढ़ा कर डेढ़ गुनी कर दी गई है। अब किसी किसान को आत्महत्या करने की जरूरत नहीं है।"

विजय अपना रेडियो पर ई समाचार सुन के पहिले ठठा के हँसले। अपना मन ही मन कहलन कि सरकार के सुध आइल ह अब जब करीब-करीब सौ किसान आपन जान दे चुकले आ एह घोषणा के कार्यरूप में परिणत होत-होत आउर ना जाने केतना किसान के जान जाओ ? फिर कुछ देर ले शांत रहले आ अपना आदत के अनुरूप पुन: सोच में डूब गइले लेकिन एह बेर उनका सोच के ट्रैक बदल गइल रहे। ऊ सोचे लागल रहले कि केतना आसान होला केहू दोसरा पर, चाहे सरकार पर दोष मढ़ देहल ? एक जागरूक आ सक्षम नागरिक के का कवनों कर्तव्य ना होला ? आखिर उहे अब तक एह क्षेत्र में का मदद कइले बारन ? ई बात सत्य बा कि ऊ ओतना सामर्थ्यवान नइखन।ऊ त स्वयं ओही लोगन के करीब के बाड़न। फिर भी जे कुछ भी अपना परिस्थिति के अनुरूप उनका करे के चाहीं ऊ करत कहाँ बाड़न ? बूँद-बूँद से ही त सागर भरेला। समुद्र पर सेतु बनावे में रामजी के मदद करे खातिर गिलहरी भी त अपना औकातभर मदद कइले रहे त फेर ऊ कुछ काहे ना कर सकेलें ? ऊ त एह सृष्टि के श्रेष्ठतम प्राणी हउअन। अगर उनका कुछ करे के इच्छा-शक्ति होई त उनका के के रोक सकी ? अगर धन के बल उनका पास नइखे त ना सही तन आ बुद्धि-विवेक के बल त उनका लगे बड़ले बा। विजय कुछ देर ले गम्भीर मुद्रा में एने-ओने टहलत रहले। फिर कुछ दृढ़ निश्चय के मुद्रा में अइले। उनका गम्भीर चिन्तन के चिह्न उनका लिलार पर स्पष्ट झलके लागल रहे।ऊ उठले आ अपना गाँव की ओर निकल गइले।

रात बीतल। भोर भइल। विजय जइसन ना जाने केतना नवजवान अपना इलाका में अपना ज्ञान से, बुद्धि-विवेक से, अपना परिश्रम से, अपना स्वेद से नया सूरज के उदय खातिर प्रयत्न करे लागल। जवना से एक नया उम्मीद जागल आ लोग विकास के, तरक्की के, शिक्षा के नया सूरज के स्वागत खातिर प्रतीक्षा करे लागल।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार पहिला पहाड़ के ट्रैकिंग : सरकुंडी दर्रा (पहिला भाग)

फोटो साभार :रौशन कुमार

ना जाने काहे पहाड़ से हमरा बचपने से अपनापन रहे। लयिकायीं गया शहर में बितल। गया शहर चारों ओर से पहाड़ से घिरल बा। जहाँ हम रहत रहीं ओहिजा से रामशिला पहाड़ी नगीचे रहे। ओह पहाड़ी उपरे शंकर जी आउर हनुमान जी के मंदिर बा। तनी सा खुला जगहो बा। हमनी के भोरे भोरे ओहिजा जात रहीं जा आउर कुछ दंड बैठक लगावत रहीं जा। उ पहाड़ प चढ़े के दू गो रास्ता रहे। ए गो सीढ़ी से आउर दूसरा पगडण्डी वाला पहाड़ी रास्ता। हमनी के पहाड़ी वाला रास्ता से ऊपर जात रहीं जा। वोही घरी से हमरा मन में पहाड़ से प्रेम के बिया रोपाइल। जे कि कहानी, आउरी सिनेमा के खाद पानी प भीतरे भीतरे बढ़त रहल।

हमार पहिला नोकरी दिल्ली मेट्रो में लागल त ओहिजा एगो साथी भेंटईले जिनका से पहिला हाली ट्रैकिंग के बारे में सुने के मिलल। ओह घरी लागल कि हमार पहाड़ प्रेम फेर से उमड़ के बाहर आइल। बाकि काम के व्यस्तता आउर पैसा के कमी के कारन ओह घरी ट्रेकिंग संभव न हो पाइल। फेर जब हम दिल्ली के नोकरी छोड़ के पटना में अइनी ता ओहिजो अईसन मौका ना बन पाइल कि ट्रैकिंग हो सके। बाकी पहाड़ प्रेम भीतर भीतर पनपत रहल। उ मुअल ना। जब हम तीसरा नोकरी में कलकत्ता अइनी तब लागल कि हमार पहाड़ प्रेम एहिजे सफल होई। एहिजा हमनी के एगो सिनिअर एवरेस्ट प चढले बाड़न। आउर एहिजा बहुत लोग ट्रैकिंग में रूचि रखत रहे। फेर अचानक एक दिन नेट प हमारा "सरपास ट्रैकिंग" के लिंक भेटाइल। उ लिंक रहे "यूथ हॉस्टल असोसिएसन ऑफ़ इंडिया" जे कि बहुत सस्ता में हिमालय में ट्रैकिंग करवावेला।

जवन समय हमरा उ लिंक भेटाइल रहे ओह समय सब सीट बुक हो गइल रहे। दुबारा बुकिंग दिसम्बर में शुरू होखे वाला रहे। कसहू-कसहू क के समय बीतल आउर बुकिंग के समय आ गईल। दू तिन गो आउर संघाती लोग भी हमरा साथ

रौशन कुमार

भलुनी जिला रोहतास के रहेवाला हईं। पढ़ाई लिखाई गया से भईल बा। पठन पाठन के अलावे इंहा के नया नया जगह घूमे के शौख राखिले। इंहा के फिलहाल कलकत्ता में राजस्व विभाग में कार्यरत बानी।

जाये खाती तैयार भईलन जा। बाकी एह सब करे करे में “सर पास” के सब सीट बुक हो गईल। ओही घरी “सरकुंडी पास” के कुछ सीट खली रहे त ओह में हमनी के तीन साथी बुक कइनी जा।

“सरकुंडी पास ट्रेकिंग” के हिमाचल प्रदेश में मनाली के नजदीक “यूथ हॉस्टल असोसिएसन ऑफ़ इंडिया” आयोजित करेला। सौरकुंड चाहे सरकुंड हिमाचल के कुल्लू जिला के ब्यास घाटी में करीब 13000 फीट के उचाई प ए गो छोट तालाब ह। हालांकि ट्रैकिंग ओह तालाब तक न होखेला। ओह तालाब से कुछ पहिले ही एगो दर्रा (पास) बा जेकर नाम भी ओह तालाब प सौरकुन्डी दर्रा पड़ल बा ओहिजा तक होखेला।

दिसम्बर-जनवरी में बुकिंग कइला के बाद हमनी के तीनो साथी लोग २७ मई, २०१३ के बेसब्री से इंतजार करे लगनी जा जवन दिन के हमनी के बेस कैम्प प पहुचे के रहे। साथही ट्रैकिंग के बारे में जतना हो सकत रहे जानकारी जुटावल शुरु हो गईल। जुटावल जानकरी के हिसाब से ट्रैकिंग के तयारी शुरु भइल।

ऐसे त “यूथ हॉस्टल असोसिएसन ऑफ़ इंडिया” के साइट प जरूरी समान के लिस्ट दिहल ब तबो हमरा हिसाब से ट्रैकिंग खातिर दु गो चीज़ सबसे जरूरी बा- पहिला बढ़िया ट्रेकिंग जूता आ दुसर बढ़िया गरम जैकेट। चुकी इ ट्रेकिंग में जादे ऊँचाई प जाए के न रहे एह से हमारा भीरी जवन जाकेट रहे वोहे से काम चल गइल। बाकी रहल जूता त उ हम ऑनलाइन मंगइनी। ट्रेकिंग के जूता लेवे घरी दु बात के ध्यान रखे के चाही एक त सोल ओकर रबर के होखे चाही दुसर उ टखना के उचाई तक होखे के चाही ताकि उबर खाबर रास्ता प गोड़ मुरके के संभावना न रहे। ट्रेकिंग प जाए के खाती आपन शरीर के फिटनेस प भी ध्यान देवे के चाही। ओह खातिर हम तैरत रही। बाकी ओहिजा जा के पता लगल की खाली तैरला से काम न चली साथे साथे दौड़हु के चाही आउर हो सके त सपाट आउर बीम भी। खैर जतना भइल से भइल।

हमार यात्रा के शुरुवात 24 मई 2013 के भइल जब हम कलकत्ता से दिल्ली खाती ट्रेन लीहनी। बाकी कलकत्ता से हमरा अकेलही निकले के पडल काहे की हमार दोस्त आपन प्रोग्राम कैन्सल कर देलन जा। दूनों जाना के ऑफिस से छुट्टी ना मिल पाइल। खैर हम 25 मई के दिल्ली पहुचनी। ओहिजा आपन पुरान दोस्त यार से मेल मिलाप भइल आउर ओहि दिन शाम के मनाली खाती बस धइनी। बाकी ओह दिन शायद हमार जात्रा ठीक ना रहे। उ बस दिल्ली से निकलतही कुछ कुछ खराब होखे लागल। पहिले ओकर एसी खराब भइल फेर उ बीच बीच मे रुके लागल। कईसहु कईसहु क के उ बस चंडीगढ़ पहुचल। ओहिजा कुछ देर रुक के आगे बढ़ल बाकी पहाड़ सुरू होतही उ बस जवाब दे दिहलस। ओहिजा से हमरा के दोसर बस मिलल। पहिलका बस वॉल्वो रहे, दुसरका टाटा एसी जे की हमारा के कुल्लू तक पहुचइलस। ओहिजा से फेर एगो लोकल बस से आगे के रास्ता तय भइल। जवन हमरा पहुंचे के चाहत रहे 8-9 बजे उ हम पहुचनी 1 बजे दुपहरिया के।

कुल्लू पहुंचला के कुछ देर पहिले से ही तनी तनी बूनि पड़े लागल रहे। एक त अंजान पहाड़ी रास्ता आ ओह प बूनि। मन मे तनी डरो लागत रहे। अगल बगल के लोग से 15 माइल पुछनी जहाँ हमारा उतरे के रहे। बाकी उ लोग के कुछ जानकारी न रहे। तब तनी आउर मन परेशान होखे लागल।

www.bhojpurisahityangan.com

मन मे तरह तरह के खयाल आवत रहे । बात इ रहे की हम आपन सब सामान ट्रॉली सूटकेस मे ले गइल रही । हमारा लागत रहे की अगर बेस कैंप सड़क से दूर होखी त पहाड़ी रास्ता प ट्रॉली ले जाए मे दिक्कत होखी आउर बूनि पडला के चलते रास्ता आउर खराब होई। फेर एहो डर लागे लागल की बेस कैंप के जानकारी आसपास के लोग के भी नईखे त हम कैसे ओहिजा पहुंचब । खैर बूनि आ के गइल आउर बेस कैंप के भी पता चल गइल । बेस कैंप बिलकुल सड़क के किनारे रहे ।

ओहिजा पहुँच के हम स्वागत टेंट मे पहुचनी । आ एहिजे से हमार तैयारी के कमी लउके लागल । ओहिजा बूकिंग रसीद के साथे दू गो फोटो भी ले जाए के रहे बाकी हमरा फोटो ले जाए के धेयान ना रहल । ओहिजा बतावल गइल की कुछ दूर ए गो बाज़ार बा- पतली कुहल- जहां फोटो खिचवावल जा सकेला। खैर हम कहनी की साँझ तक फोटो खिचा के ले आइब । ओकरा बाद हमरा के ए गो आइडेंटिटी कार्ड मिलल जे प फोटो साटे के रहे आउर एगो टेंट बतावल गइल जवना मे तीन दिन रहे के रहे । उ टेंट मे हमरा संघे कई लोग आउर रहन जा ओहिजा हम आपन समान रख के नहाये धोयाए गइनी । नहइला क बाद हमरा आपन एगो आउर गलती लउकल। उ रहे छीपा- गिलास ना ले गइल। ओहिजा सब केहु के आपन आपन छीपा गिलास ले जाए के रहे जे हम न ले गइल रही । जेकरा कारण हम खाना न खा पइनि । आ तब तक 2 बज गइल रहे । भूख ज़ोर से लाग गइल रहे बाकी हमरा भीरी छीपा गिलास रहे न जे मे हम खा पईति । तब हम बाज़ार जाए के सोचनी आखिर फोटो भी खिचवावे के रहे अब त आउर भी कई गो काम आ गइल – खाना, छीपा गिलास, टिपिनकारी । खैर बाज़ार जाए खाती गेट प निकलनी। त ओहिजा एगो आउर लइका खड़ा रहे बातचीत से पता चलल की उहो बाजार जाता । हमनी के साथे जाए के सोचनी जा आ बस के राह देखे लगनी। बाकी कुछ देरी तक बस न आइल। तब हमनी के सोचनी जा की पैदल चलल जाओ । कुछ लोग कहले रहे की बाज़ार नगीचे बा, बेसी से बेसी 1 किमी । बाकी चलला ब बुझाइल की बाज़ार दूर रहे। ओहिजा पहुँच के खाना खइनी, फोटो खिचईनी आउर छीपा गिलास के साथे साथे कुछ आउर जरूरी सामानो किनाइल (जैसे- टिसु पेपर, संसक्रीम)। लौटे के बेरी ताजा स्ट्रॉबेरी आउर चेरी खइनी ।

ओहिजा से आईला प सबसे पहिले आपन टेंट बदलनी आउर उ लइका जेकर नाम पवन रहे ओकर टेंट मे आ गइनि। ओह

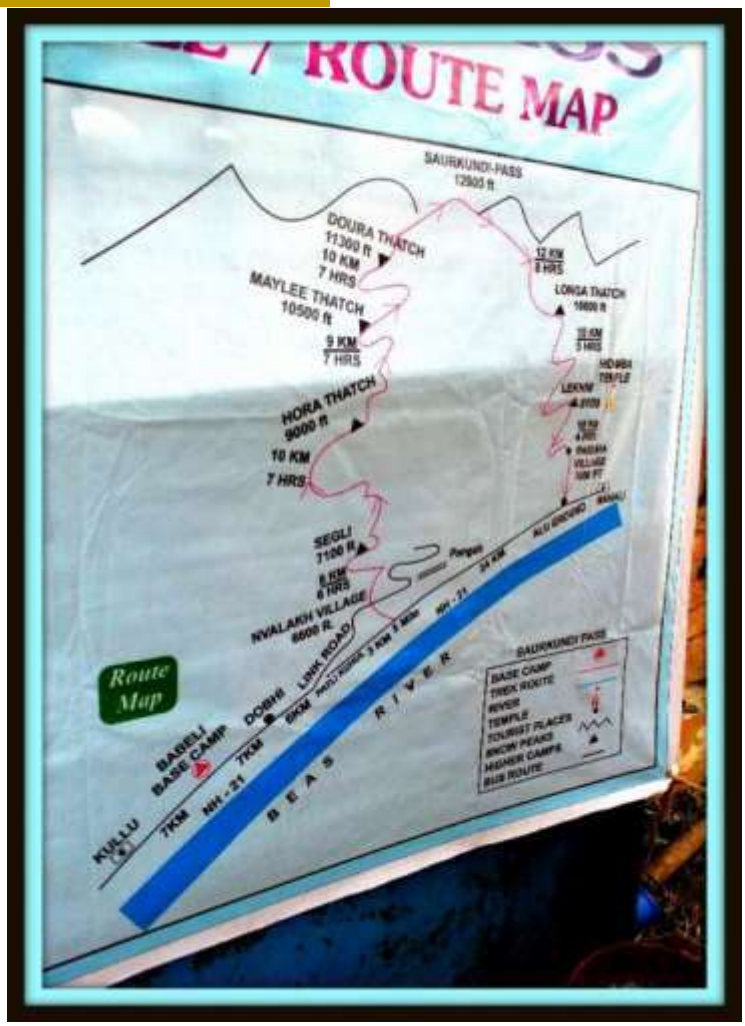

टेंट मे पहिले से कई लोग रहन जा । ओह मे ए गो कम उम्र लइकन के ग्रुप रहे जे कि आपन इंटर के परिक्षा दे के आइल रहन स । देख के बड़ा बढ़िया लागल। हमनी ईहा ई चीज़ ना लउकत रहे। हमनी के इंटर के परीक्षा के बाद ना त अतना समझ रहे आउर न ही हमनी के बाबूजी भीरी अतना पईसा की उ हमरा के आईएससी के बाद ट्रेकिंग करे जाए दिहतन। खैर सबसे परिचय भइल। पता चलल कि जादे लोग बैंग्लोर आऊर महाराष्ट्र से रहन जा । बिहार से एक मात्र हमही रहीं।

बेस कैंप प हमनी तीन दिन गुजरे के रहे। जेकरा मे पहिला दिन कवनों प्रोग्राम न रहे। ओह दिन बस रेपोर्टिंग आऊर आराम। हम टेंट बदलला के बाद आस पास घूमे निकलनी आपन नया साथी पवन के साथे। बेस कैंप के पिछही ब्यास नदी बहत रही, त हमनी के ओह नदी के किनारे कुछ देर बैठनी जा। ओह नदी के किनारे बड़ा रमणीक लागल। दूध नियन उजर पानी पत्थर से लड़ लड़ के तेज आवाज़ से बहत रहे। पानी मे जैसही गोड डलनी लागल जइसे बिछी मारत होखे। कुछ देर ओहिजा बिता के आउर कुछ फोटो खिच के हमनी के वापस आ गइनी जा काहे की कतहु बाहर गइला प 5 बजे तक वापस आ जाए के

नियम रहे।

सांझ के 7:30 बजे खाना लाग गईल। आउर रात के 8:30 बजे से हमनी के पहिले वाला ग्रुप ए गो रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कइलस। प्रोग्राम के शुरुवात में कैंप फ़ायर के एगो अजीब रिवाज ओहिजा लउकल। ओहिजा कैंप फ़ायर मे आग ना जलावल जाला। प्रकृति प्रदूषण कम रखे खाती। ओहिजा कैंप फायर बिजली बत्ती जला के कइल जाला आ "फ़ायर फ़ायर कैंप फ़ायर" ज़ोर ज़ोर से बोलल जाला। ओकर बाद सर्टिफिकेट वितरित कइल गइल जे ट्रेकिंग पूरा क के आइल रहे। उ लोग आपन अनुभव सुनइलख आ सुझाव दीहलस। करीब 9:30 बजे प्रोग्राम खतम भइल ओही घरी कैंप लीडर हमनी के अगिला दिन के प्रोग्राम बतईले। रात के एगो हैल्थ ड्रिंक मिलल शायद गरम पानी मे बोर्नवीटा जे हमरा तनिकों ठीक ना लागल आउर ठीक 10:00 बजे लाइट ऑफ। ओकर बाद सबके सूत जाए के रहे बाकी हमार टेंट मे लइकन के नींद आवते न रहे आ उ सब अपना मे बातचीत करत रहन सा हंसी मज़ाक करत रहन स, जे प कैंप लेयदार आ के डटले आ सब के सुते के कहले। बाकी लइकन त लइकन, उ सब कहा सुने वाला रहन स। खैर कैसहू क के उ सब सुतल स।

भोरे भोरे करीब 5:00 बजे बेड टी खाती सीटी बाज गइल। 6:00 बजे हमनी के दौड़ आउर कसरत खाती जाए के रहे। हमनी के ठंडा मे उठे मे तनी दिक्कत भइल बाकी कवनों उपाय न रहे। खैर उठ के मर-मैदान होके लाइन मे खड़ा भइनी जा जहा से हमनी के दौड़ते हुए कुछ दूर ए गो खाली जगहा तक जाए के रहे। हमनी के साथे दू गो इन्सट्रकटर लोग रहन जा आउर साथे साथे कैंप लीडर भी। करीब 1 से डेढ़ घंटा कसरत करवावल गइल जे कि बेसिक स्ट्रेचिंग एक्सर्साइज़ रहे बाकी इहो कम भारी न बुझाइल। कसरत के अंत मे रिलैक्स करावे खाती ए गो गीत प देह हाथ मोड़े के रहत रहे जे मे बड़ा मज़ा आइल। उ गीत के जस के तास एहिज दे तानी :

Making a melody in my life, king of kings,
thumps up, thumps up, thumps down,
Elbow bent, elbow up, Knee bent, back bent,
neck bent, tongue out… and turn around…

करीब 7:30 मे नास्ता लाग गइल। नास्ता कईला के बाद कुछ समय मिलल आपन बाकी काम करे खाती। 8:30 में फेर लाइन मे खड़ा होखे के रहे। एह बार आपन पिट्ठू(रकसैक) मे दु गो कंबल आउर दो लिटर पानी के बोतल भर के रखे के रहे। ए सब समान ले के हमनी के एक्लेमेटाएजेसन (Acclimatization) खातिर जाए के रहे। एक्लेमेटाएजेसन मे पीठ प बैग भर के पास के पहाड़ी प कुछ उचाई तक जाए के रहे ताकि पता चल सके कि वास्तव मे ट्रेकिंग में बोझा ले के चले मे कइसन लागी। एक्लेमेटाएजेसन चढ़ाई मे जाए से पहिले हमनी के ओह ग्रुप के हौसला बढावे के रहे जवन ओह दिन ट्रेकिंग सुरू करत रहे। हमनी के करतल ध्वनि से वोहनी के हौसला बढ़इनी जा। ओह ग्रुप के गइला के बाद हमनी के ग्रुप एक्लेमेटाएजेसन चढ़ाई खातिर निकलल। चढ़ाई त आसान रहे बाकी तबों हालत खराब हो गइल। उपरे जा के हमनी के ले गइल पानी से शर्बत बनल जे की बुरांश (Rhododendron) के फूल के रहे। फेर ओहिजे हमनी के ग्रुप परिचय भइल। सब कोई बारी बारी से आपन परिचय दिहलख आ साथही ग्रुप नेता, वातावरण नेता आउर संस्कृति नेता चुनल गइल। ग्रूप

नेता प पूरा ग्रुप के ज़िम्मेदारी रहे, वातावरण नेता प ज़िम्मेदारी रहे की उ साफ सफाई के ध्यान राखी , ई देखि की केहु कूड़ा कचरा कैंप चाहे जंगल मे न फैलावे । संस्कृति नेता के ज़िम्मेदारी रहे सांझ के होखे वाला सांस्कृतिक कार्यक्रम । सांझ के सांस्कृतिक कार्यक्रम मे सब लोग आपन आपन प्रस्तुति दिहलस। कुछ नाच, कुछ गवनई, एगो छोट नाटक कुछ कविता। हमहू ए गो कविता सुनवनी।

अगिला दिन सुबह फेर उहे रूटीन। सुबह बेड टी फेर दौड़ आउर कसरत । ओकर बाद एगो ग्रुप के उचाई प विदाई । ओकरा बाद आज हमनी के पत्थर चढ़ाई आउर रस्सी उतरे (Rock Climbing & Rappelling) के प्रोग्राम रहे । बाकी बारिश के कारण खाली रस्सी उतराई भइल (Rappelling)। सांझ के हमनी के आपन फालतू समान जमा करे के रहे आउर ट्रेकिंग खाती जरूरी समान आपन रकसैक मे डाल के चेक करावे के रहे। सब फालतू समान एगो कमरा मे रख के ओकरा मे ताला लगा दियाइल आ चाभी ग्रुप लीडर के दिया गइल।

(अगिला अंक में जारी...)

सपना : हकीकत से अंजान (भाग -1)

जलज कुमार अनुपम

ए भाई का हाल बाटे हो ? तनी हेने आवS, तोहरा से कुछ पूछे के बाटे ? एतने कान के चादर ले बात पहुँचल रहे कि हम पीछे मुड़ गईनी । देखनी त पवनी कि एगो बाबू कांख में करियाका बेग लटकवले, हाथ में बड़का वाला मोबाइल लेले हमके इशारा करिके अपना ओरी बोलावत रहले। गईनी हमहू तनी अंग्रेजिये मिला के पूछनी- हा सर कहल जाव, का सेवा करी हम राउर ? देखS हम पटना से आइल बानी अउरी हमरा गाँव के बारे में कुछ जाने के बाटे । मन में हमरा कगो सवाल एक संगे आइल, लेकिन हम ओमे से एके गो पहिले निकलनी, काहे खातिर सर ? हम पी एच डी कर रहल बानी " भूमंडलीकरण के युग में ग्रामीण जीवन " नामक शीर्षक पर। ओही से हम चंपारण के ई गाँव में अइनी हई। हमरा उनकर बात पूरा समझ में आ गईल रहे फिर भी दिमाग में कुछ सवाल रहे । हम ओहके मनावते रहनी कि उ टप से सवाल करी देहलें - तू इहवे रहेलS कि शहर में ? जी हम गावहिं में बानी आजकल। बाबूजी हमनी के कुछ जादा पढ़ावे के चक्कर में शहर में ले के गईल रहनी, तबो साँच त इहे बा कि हमनी के पूरा बचपन गाँव के छाव में ही गुजरल रहे। हमनी के शहर का अइनी गाँव के सारा खेत बटाई पर चल गईल। हई न देखी आपन परिचय त हम रउरा के देबे न कईनी - हमर नाम रमन हवे। कृषि विज्ञान से स्नातक कईला के बाद अब हमहू अपना गाँव में ही रहिले। कीटनाशक बेचे वाला एगो दूकान चलावेनी, साथे साथे एगो निजी गन्ना कंपनी से भी जुडल बानी। ओहमे अपना क्षेत्र के गन्ना के सर्वेक्षण के जिम्मेवारी बाटे।

मन त हमर करत रहे कि कुछु अउरी कहीं तले शहरी बाबू बिचवे में टोक देहलें- रमन जी हमरा के गाँव से सम्बंधित लगभग हर विषय पर तनी तनी बतावल जाव । सर पहिले रउरा आपन नाम बताईं हमके ? नाम हमर गोपाल हवे . जी ठीक बा अब हेने आइल जाव का चीज के जल्दीबाजी बा, राउर सारा सवाल के जबाब दे दम हम, पाहिले तनिक ठंडा लेहल जाव बड़ी गर्मी बा आइ हेने घोटा में बइठल जाव। हमनी के घोटा की तरफ चलनी सन अउरी हम आवाज मरनी, मंगरु हो तेनी दू गिलास कस के चापाकल चला के ठंडा पानी लेआव अउरी भौजी के कह तेनी चाय बनावे के। वह बेरा पी एच डी से सम्बंधित क गो सवाल हमरा भीतर जाग गईल रहे एक एक करिके हम उगले के कोशिश में लग गईनी।

सर एक दिन में राउर पी एच डी ला जानकारी मिल जाइ बहुते मासूम तरीका से हम ई सवाल अपना मुह से निकलनी

www.bhojpurisahityangan.com

। तब गोपाल बाबू कहल शुरु कईले ना जी एक दिन में कुछु होला ना लेकिन एकरा आधार पर हमनी के जवन विवरण तइयार कईल जाई ओहमे बड़ी मदद मिली, हम लक्ष्य रखले बानी कम से कम 10 गो जिला में जेक हालत के जायजा लेवे के रउरा जिला में सबसे पहिले आईल बानी। चंपारण के नाम हम बहुत पहिले सुनले रहनी एहि से पहिले हम चंपारण में ही अयिनी। अछे सर पी एच डी केतना साल के होला फेनु हम एक गो सवाल दाग देहनी। साढ़े तीन साल के ऐसे हवे लेकिन पूरा करे में जादा वक़्त भी लग सकत बाटे। पानी आ गईल मंगरु लेके पानी एहि बीच में, पानी लेहल जाव सर हम गिलासवा उठा के उहा के ओरी बढ़ा देहनी। मंगरु जा के देख तेनी चाय के हालत, ले आव। तेले सहसा गोपाल जी पूछ बैठनी ई आधुनिकरण के युग में गाँव में सबसे बड़का बदलाव का आईल ?

सपना सर सपना, हकीकत से अनजान सपना, आजकल गाँव अब गाँव रह नइखे गईल, गाँव के नाम पर अब सिर्फ बुढ लोग रहत बा, गाँव के मायने बदल गईल बा, छोट लईका पढ़े खातिर शहर पकड़ लेहलक अउरी नौजवान कमाए खातिर, जेकर इहवा खत बारी बाटे उहो एकरा के हुंडा बाटाई देके शहर पकड़ लेहलक। गाँव बा लेकिन वोकर आत्मा मर गइल बा शहरीकरण के चलते गाँव मरल जातबाटे केहु पुछनिहार नइखे। लोगन के मानसिकता अजीब हो गईल बा लोग के बुझात बाटे की शहर यानि उन्नत अउरी प्रगतिशील लोग-गाँव यानि गवार लोग . पिछला कुछ दसक से सर मान के चली की शहर गाँव पर अतिक्रमण कईल शुरू कर देले बा।

ना अब गाँवमें कही पनघट लउकत बाटे ना, नाही सुनाई देतबा उ लयबध्य पायल के झंकार, अब गाँव के लोग भी नदी, पोखर में स्नान करे से कतराता कहे की ओहमे प्रदुषण के भरमार बा। पहिले गाँव के मुकदमा गाँव में सुलझ जाट रल लेकिन अब कोर्ट जा बा, पहिले सबसे ज्यादा अपना बाप - माई के सेवा केकर लईका करत बा इहे चर्चा के विषय रहत रहे, अब रहत बा की जानत बाड़ हो हुनकर बेटा हुनका के घर से निकाल देहलक । गोपालजी चुपचाप टकटकी लगा के हमरा ओरी सुनत रहनी इतने में मंगरु आईल कहत भइया चाय लेहल जाव। हमनी के दुनू आदमी चाय के हाथ में उठवनी सन, चाय के पहिलका चुस्की लियाईल रहे की गोपाल जी पूछ बइठलें अछे हमके तेनी ई समझायी की लोग शहर के ओरी एतना आकर्षित कहे बा ? उनकर ई सवाल हमरा बहुते वाजिब लागल।

सर दुनिया में हर जगह एके गो रीत होला, उहा के हर आदमी चाहेला की हमर आवे वाला पीढ़ी जवन बा तवन हमरा से बेहतर बने, ओहि तर्ज पर यह पर भी जे जेतने में बा प्रयास करत बाटे की कैसे अपन अगला पीढ़ी के बेहतर से बेहतर बनावल जाव। गाँव से शहर के ओरी पलायन के एगो मुख्य कारन बा शहर में मिले वाला शिक्षा, गाँव के सरकारी स्कूल अब पाहिले जइसन ना रह गईल, स्कूल के माकन त एकदम नया हो गईल बाटे लेकिन शिक्षा के स्तर उहा खत्म हो गईल बाटे। गरीब के लइका अब उहा खली खिचड़ी खाए जात बा, शिक्षा के नाम पर कुछु नइखे भेटत उहवा से, एहि से जे तेनी समझदार बा उ कोशिस करत बा की हमर लइका तेनी शहर में पढ़ित,एगो अंखिया में सपना बा की हमरो लइकवा तेनी हमर नाम रौशन करीत, कुछ निमन बनी। ओहि खातिर लोग गाँव के २ रुपया किलो तरकारी छोड़के शहर के 10 रुपया किलो तरकारी खाए पर मजबूर होता। एहमे सबसे ज्यादा दोष राज्य सरकार अउरी केंद्र सरकार के बा सर हम त इहे मानिले, काहे ही आजादी के बाद से ई जेतना ध्यान शहर के विकाश पर देहल गईल अगर वोकर 50 % भी ध्यान गाँव के बचावे पर देहल रहित त आज ई हालत ना रहित। का गाँवमें बढ़िया स्कूल नइखे खुल सकत ? का गाँव में बढ़िया स्वास्थ्य के बेवस्था नइखे हो सकत ? हो सकत बा सर लेकिन केहु ईमानदार कोशिश ना कइलक आज ले। सच कही त अब त लोग के खेती में भी मन जादा नइखे लागत गाँव में पाहिले जेतना भी कुटीर उधोग रल सब बंद होत जात बा। अछे रमन जी एगो बात बताई सरकार के जवन एतना

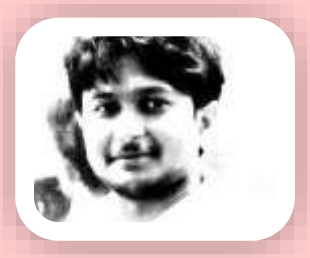

जलज कुमार अनुपम

बेतिया, बिहार के रहे वाला जलज जी भोजपुरी में लगातार लिख रहल बानी आ आखर के पेज पे भी इंहा के कविता-कहानी प्रकाशित होत रहेला। फिलहाल जलज जी दिल्ली रह रहल बानी।

योजना आवत बाटे गरीब लो ला ओहसे यह लोगन के जीवन जापन पर कुछ असर भईल बा का ?

देखि सर आदमी के स्थिति तब ही जा के सुधरेला जब ओकरा ज्ञान होला की हम का करत बानी अउरी हमरा का करे के चाही। चाय हमनी के दुनू आदमी के खत्म हो गईल रहे लेकिन बात अभिन बहुते रहे, गोपाल बाबू के मन में बहुत बिंदु पर असमंजस रहे गाँव के ले के। अचानक से गोपाल बाबू पूछ बैठनी,रमन जी एगो बात बताई रउरा हिसाब से आजादी के बाद से गाँव के जीवन स्तर, रहन सहन में का का परिवर्तन आइल बा, ई त एगो अइसन सवाल रहे जेकरा उत्तर एतना आसानी से केहु नइखे दे सकत , फिरू हम मन को समेट के कहल शुरू कईनी गोपाल सर हमरा त लागेला की हर गाँव हमनी सब से कुछ सवाल पुछेला की आखिर गाँव के गलती का बा जैसे लोग ओकरा से ठुकरावत जात बा, जेभी तेनी बड़का बनल गाँव से शहर के ओरी बढ़ल उ काहे नु शहर के होके रह गईल ? एकदम से भुला देहलक अपना गाँव के अपना समाज के अपना लोग बाग के ? गाँव त हरदम बाटे जोहत रह गईल की सब केहु अपना जनम धरती पर आईत तेनी हमरा के सवारित सम्भारित, कुछ आगे बढायित, खाली अपने आगे बढ़ल कवनो बढ़ल न होला, बढे के मतलब होला की अपना संगे संगे दोसरो के आगे ले के बढ़ल जाव। गोपाल सर अइसन चलल ई बदलाव के बयार की बहुत कुछ बदल गईल न अब उ सभ्यता लउकत बा न उ संस्कृति, सब कुछ धीरे धीरे खत्म होत जात बा। अब त युग ई आ गईल बा की लोग गाँव के नाम पर लजात अउरी शर्मात बा, सकुचात बा एतनो काहे में की हम हे जगहिया के हई, हमर हई गाँव हवे। हमरा कुछु बदलाव महसूस न होला उहे रूढ़िवादिता के शिकार मानसिकता, जातिवाद में जकड़ल समाज, समझदारी से ज्यादा स्वार्थपरायणता से लिप्त लउकत बा। सपना अइसन लोग देख रहल बा जेकर नव धरातल पर कही हई लही नइखे .आज के युवा पीढ़ी के खेती करे में लाज लगत बा, गाँव में मजदूरी या रोजगार नइखे हो सकत लेकिन उहे काम शहर में आसानी से होत बा। अभी हुम येतने कह्ही कि सुरेश काका अवाज देह्ले, रमन, जी काका, का हो पंचाईती में नइखे चले के का, ना ना चलेम नु रउरा आगे बढ़ी हम पीछे से आवत बानी, ठीक बा काका कहके आगे बढ़ गईनी। फिर हम गोपाल बाबू से पूछनी की आजे निकल जायेके बा की रहे के बा इहवा, ना बानी आज रात रुकम, तब त ठीक बा, फेरु बात होई, अभी खातिर हम माफ़ी चाहें कहे की हमरा ईगो पंचाईती में जाये के बा, ठीक बा कवनो दिक्कत नइखे गोपाल बाबू सहमती में आपन सर हिलवले, गोपाल बाबू :- ठीक बा त हम चलत बानी। जी आवल जाई दुबारा, जी हम प्रयाश करेम, हमहू उठनी , मन में हमरो बहुते सवाल जाग गईल रहे, मनवा में हम सोचत रहनी की ई कइसन अनजान सपना बा लोग कमाए खातिर गाँव छोड़ के दूर शहर जाला लेकिन हर केहु के जीवन में एगो अइसन वक़्त आवेला जब उ फेर शहर से गाँव की ओर लौटेला। ई सपना जे ना करावे इंसान से ... !

भोजपुरी में फइलत अश्लीलता के खिलाफ खड़ा -अम्बा

अविनाश राव

कलाकारन के गढ़ ह आरा, तबे इंहवा क टाइट रहेला पारा "। जेठ के घाम होखे भा पूस के जाड़ कलाकारन के जोश में कमी ना देखे के मिलेला। भाग दौड़ के जिनगी में सभे से मिलल मुश्किल हो गइल। एही व्यस्तता में लोगन से जुड़े खातिर करीब दू बरिस पहिले व्हाट्सअप्प पे "रंगमंच" नाम से ग्रुप बनल। एह में रंगमंच से जुडल सिनेमा से जुड़ल लोग सम्मिलित भईल। सांझे बिहाने चर्चा होखे, हिन्दी सिनेमा वाले लोग भी दू चार महिना पे हाय-हैलो करत रहे लोग।

25 दिसंबर 2014 के ग्रुप में बात रखाईल की "आज जेतना तरह से भोजपुरी सिनेमा आउर गाना मे अश्लीलता बढ़ गइल, ई हमनी के मातृभाषा के बदनाम कर दीहन स, एकरो के रोके के कुछ करे के चाहिँ"। एह बात पे हिन्दी सिनेमा के अभिनेता सत्यकाम आनंद आ ओपी पांडे जे आरा से बाड़ें आपन चुप्पी तोड़लें। फेर त लंबा चौड़ा बहस भईल। विचार मिलल आ विचार के बल मिलल। एही लोग के प्रेरणा से "भोजपुरिया आर्ट एण्ड ड्रामा" के ओफ्फ़िस में 5-6 लोग के उपस्थिती में "अश्लीलता मुक्त भोजपुरी आरा (AMBA)" के नेव पड़ल। 1 जनवरी 2015 बखोरापुर काली मंदिर में 15-20 गायक गायिका लोग ओहिजा के ग्रामीण लोग के सामने सपथ लेलस कि आज के बाद ना अश्लील गाना गाईब, ना सुनब, ना बढ़ावा देब।

"अम्बा" के ग्रुप व्हाट्सअप्प पे भी बनल आ चर्चा ज़ोर पकडलस। एह मुहिम में ढेर लोग जुडल आ फेर सबके सहमति से "अश्लीलता मुक्त भोजपुरी आरा" से आरा मे कई जगह पे एसोसियेसन कर दिहल गइल। तब से लेके अब तक अश्लीलता के विरोध में ढेर काम भईल। ओह घरी सरस्वती पूजा नजदीक रहे, लोग पुजा पंडाल आ विसर्जन तक में भोजपुरी अश्लील गाना बजावेला। एकरा के रोके के प्रयास भईल। जिला प्रसाशन के सहयोग से एगो नोटिस शहर भर में लागल- "अबकी बार मूर्ति रखे खातिर इजाजत लेवे पड़ी आउर अश्लील गाना बजावला प जुर्माना आ जेल भी हो सकेला। एकर नतीजा ई रहल कि शहर में अश्लील गाना बहुत कम बाजल। एह प्रयास में कुछ लोग से कहा सुनी भी भईल बाकी सरसवती पुजा में हमनी के प्रयास के सफलता मिलल त उत्साह में बढ़ोतरी हो गइल। फेर त पूरा आरा शहर में जन जागरूकता शुरू भईल, रोजाना दू चार लोग अम्बा से जुड़े लगले।

करीब दू महिना बाद "अम्बा" खाति मुंबई से आरा के फिल्म अभिनेता सत्यकाम आनंद अईले। उंहा के विशेष सहयोग अम्बा खातिर रहल, आ सहर्ष एह अभियान के अगुआई करे के स्वीकार लेनी। होली नजदीक आइल त होली में भी अश्लील गाना के विरोध में काम शुरू भईल। रैली, जन जागरण, नुक्कड़ नाटक, सभा, सभे के माध्यम से लोग के समझावे के काम शुरू भईल। प्रसाशन के डर भी देखावल गइल - "जे बजाई अश्लील गाना, टांग के ले जायी पुलिस थाना"। पूरा शहर में प्रचार भईल कि जहां अश्लील गाना बाजत सुनी पुलिस के फोन करीं। जागरूकता बढल आ लोग के सहयोग मिलल। पुलिस के भी 100 नंबर पे ढेर फोन आइल आ एही क्रम में ढेर डी० जे० जब्त भईल। प्रयास सफल रहल आ एह सफलता में मीडिया के भी खूब सहयोग रहल।

अम्बा आपना प्रयास में लागल बा- गाँव गाँव नुक्कड़ नाटक से आपन बात राखत बड़ुवे। आवे वाला समय में अम्बा के कुछ कार्यक्रम एह प्रकार से बा -

1. अश्लील गाना गावेवाला, बढ़ावा देवेवाला लोगन के चिन्हित करके उनका पे कानूनी कार्यवाही कइल जायी।
2. भोजपुरी खाति भी सेंसर बोर्ड के स्थापना के मांग
3. साफ सुथरा पारिवारिक सिनेमा के बढ़ावा आ निर्माण में सहयोग
4. साफ सुथरा गाना आ सिनेमा के बढ़ावा
5. युवा वर्ग के जागरूक करे आ जोड़े के प्रयास

अम्बा से जुड़ीं आ भोजपुरी के अस्मिता बचावे में सहयोग करीं।

www.bhojpurisahityangan.com

सिनेमा बिना कवन अकाज हो जाई ?

ए ह सवाल के पुछे से पहिले इ पूछे के चाहीं कि का कहानी कहल, लिखल, सुनावल जरुरी बा ? बा त केकरा खातिर ? लिखे वाला खातिर के पढ़े भा सुने वाला खातिर ? हज़ारन साल पहिले राम, सीता, रावण आ लछमन के कहानी बतावल गईल । का जरुरी रहे बतावल ? अर्जुन, कृष्ण के का कहलन कुरुक्षेत्र में ? काहे जरुरी रहे बतावल गीता के रूप में ? ईसा मसीह के होली ग्रेल के घटना का रहे ? बुद्ध कवन उ आठ बात कहले रहलन बेहतर जीवन खाति ? भिखारी ठाकुर काहे नाटक करत रहलन जेकरा में पुरुब देस के कहानी आइल आ दोसरा ओरि भोजपुरिया क्षेत्र के गावन के ओह समय का हालत रहे, इहो पता चलल ।

कई बार इतिहास किंवदंती के रूप ले लेवेला । आ किंवदंती इतिहास हो जाले । ई बहस पुरान बा कि रामायण कहानी बा कि सांचो उ कुल भईल रहे । लेकिन हमार सवाल ई बा कि रामायण लिखे के का जरुरत रहे ? अब आ जाईं सिनेमा के बात पर । देखल जाव कि हमनी के देस के पहिला फिलिम भी साहित्य पर आधारित बा । राजा हरिश्चंद्र - 1911 में बनल । रामायण भी 1987 में टी वी खातिर बनल । महाभारत भी टी वी पर आ गईल । हमार एक ठो जान पहचान के लईका बा पटना के । एक दिन कहता कि बी० आर० चोपड़ा नु लिखें थे महाभारत ? त हम कहनी कि फिर त रामायण रामानंद सागर लिखे होंगे । त कहता, हाँ । बाप रे हँसत - हँसत पेट बथा गईल रहे ओ दिनवा । अब दोसर सवाल बा कि जब पन्ना पर लिखाईल रहे त टी वी सीरियल आ सिनेमा बनावे के का जरुरत बा ? इयाद होखी कि दीपिका आ अरुण गोविल के लोग पूजा करत रहे । ई ह ऑडीओ - विज़ुअल (audio - visual) के असर ।

हॉलीवुड में पिछला कुछ साल में अडाप्टेशन, मने किताब से फिल्म बनावे के चलन बढ़ल बा । पहिले त होत रहे कि किताब छपला के कई महीना दिन साल बाद फिलिम बनत रहे । अब त अईसन हो गईल बा कि किताब छपे से पहिले ओकर सिनेमा बनावे के अधिकार बिक जाला । देखीं हैरी पॉटर आ हंगर गेम्स दुन्नो सीरीज़ के इहे भईल । अईसन बहुत बाड़ी सन । अभी "अमेरिकन स्नाइपर" आईल रहे हमार पसंदीदा निर्देशक क्लिंट ईस्टवुड के । पिछला साल उपन्यास लिखाईल रहे, लेकिन एह साल ओपर फिल्म बन गईल । रउवा लोग सुनले होखब कि चेतन भगत के किताब "हाफ गर्लफ्रेंड" के फिल्म बनावे के राइट्स (अधिकार), किताब आवे के पहिले एकता कपूर खरीद लेले रहली । तनि सोंची कि अगर हिंदी फिल्म इंडस्ट्री बंद हो जाए त हिंदी भाषा पर का असर पड़ी ? आज अगर लोग, आ खासकर सहरुआ लोग हिंदी से जुड़ल बा त ओकरा पीछे सिनेमा के छोड़ि के कवनो दोसर अतना मजबूत माध्यम नईखे । आ धीरे धीरे छोट शहर जइसे पटना, इलाहाबाद, बोकारो, रांची में भी ई चीज़ धीरे - धीरे ढुक गईल बा ।

हम एक कोरोलरी भा थेओरी देबे के चाहब । हम चाहब कि केहू एकरा के गलत सिद्ध करे ताकि हमनी इ फेनोमेना के अवरी समझीं । **"भाषा के भविष्य, सिनेमा के हाँथ में सुरक्षित बा । भाषा उहे बाँची जेकर सिनेमा होखी आ जेकर साहित्य बरियार रही । सिनेमा ओकर बढियां होखी जवन समाज आपन भाषा से दूर नइखे गईल । नया युग के साहित्य सिनेमा हटे ।"**

अब इ थियरी भोजपुरी सिनेमा पर लगाईं । साहित्य बा लेकिन समाज भाषा बोलत नईखे । त सिनेमा उजड़ गईल । Mass Communication के पढ़ाई में एक चीज़ कहल जाला । "Media shapes society and society shapes Media". मने ई कहल जा सकेला कि "सिनेमा समाज के आकार दिही आ समाज सिनेमा के" । सिनेमा एहिसे जरुरी बा काहे

नितिन चन्द्र

डुमरांव , बिहार के रहे वाला युवा निर्देशक , भोजपुरी सिनेमा मे सकारात्मक चर्चा के शुरुवात करे वाला देसवा फिल्म के निर्देशक नितीन चंद्रा जी , भोजपुरी भाषा आ साहित्य खाति कलम से ही ना कैमरा से भी आपन शत प्रतिशत दे रहल बानी । एह घरी इँहा के मुम्बई मे बानी ।

कि जवन जुग में हमनी के बानी जा, इहां से उ जुग के सुरुआत भईल बा; जहां लोग "गांधी" आ "हिटलर" के ना पढ़ी ना देखी। जहां लोग भिखारी ठाकुर के जीवन पर लिखल "सूत्रधार" ना पढ़ी ना ओकरा ऊपर बनल सिनेमा देखी। छपरा के बहुत युवा के मालूम भी नईखे कि भिखारी ठाकुर के रहलन, , लेकिन एगो फिल्म छपरा के पंकज सिनेमा में लग जाए त सब लोग जान जाई। पढ़े वाला लोग के संख्या दिन पर दिन घट रहल बा। साहित्य से सिनेमा आ सिनेमा से साहित्य निकलता लेकिन अब ई बात मान लिहीं कि नया साहित्य "सिनेमा" ह। रउवा धेयान से देखीं, जवन लोग के साहित्य मजबूत रहे, उ लोग के सिनेमा मजबूत बा। मजबूत सिनेमा वाला सब राज्य कवनो ना कवनो तरीका से विकसित बा। खासतौर पर जहां पर शुरु से भाषा आ साहित्य रहे। लेकिन उ राज्य जहां साहित्य रहे आ सिनेमा कमजोर पड़ गईल, उ राज्य आ समाज के विकास ना भईल। सीधा बात बा कि हम बात भोजपुरी के कर रहल बानी। भोजपुरी में जईसन सिनेमा बनी ओकर पहचान वइसने होखी। बतावे के जरुरत नईखे कि का हालत बा। एक साल पहिले तक हम इहे सोचत रहनी कि युवा के भोजपुरी में बात करे के चाहीं। माँ पिता के भोजपुरी में बात करे के चाहीं। लेकिन काहे ? हमनी किहाँ सबसे पहिला सवाल इहे पुछल जाला कि बड़ होके का बनबS ? आ साँच बात बा कि हमनी के कुछुओ बनी जा, चाहे हमनी के बच्चा बनिहन सन, ओकरा में भोजपुरी के लेके कुछो बने के उमेद नईखे। त जनरल माता पिता इहे सोचेला कि बच्चा के भविस का होई। इहे हाल हम मैथिली के देख के आ रहल बानी। लेकिन देस के कई राज्यन के सरकार ई बात समझ गईल बिया कि सिनेमा खाली कला आ मनोरंजन के साधने नईखे बल्कि बिजनेस के साथे संस्कृति आ राज्य के पहचान के माध्यम भी बा।

अगर बिहार सरकार के बात कईल जाव त उ लोग के तैयारी सुन्ना बटा सन्नाटा जोड़ कटहर बा। हम कई हाली बिहार सरकार के लोग से मिलल बानी 2011 से लेके आज तक। कई मंत्री अइलन गइलन लो, बाकिर सिनेमा ओहिजा के ओहिजे बा। हम बिहार सरकार के नीति देखनी हS। "बिहार राज्य फिल्म प्रोत्साहन" नीति। लेकिन सच पूछीं त प्रोत्साहन नीति नईखे ई हतोत्साहन नीति बा। एकरा में अभी भी ई लोग फिल्म निगेटिव के बात करता | ई लोग के पता होखे के चाहीं कि देश के सब लैब अब बंद हो चुकल बा। बस एक ठो खुलल बा। निगेटिव सप्लाई खातिर फुजी आ कोडेक आपन ऑफिस बंद क देले बिया। लेकिन अभी उ लोग एकरे पर चलता। सबसे बड़ बात कि ई लोग फिल्मकार के 10-12 प्रतिशत ब्याज पर पैसा दिही । उहो कुछो बनकी रख के। जेकर माथा खराब होखी उहे नु बिहार सरकार के गाईडलाईन में फिल्म बनाई। उहो पइसा ब्याज पर लेके। माछियो के मुड़ी जतना अकिल रहित त कम से कम दोसरा राज्यन के नीति देख लेबे के चाहत रहे ई लोग के। उत्तर प्रदेश सीधा सीधा कहता कि हम 2 करोड़ देब 90 प्रतिशत शूटिंग होखी त। भोजपुरी बुंदेली अवधी के अतना देब आ बाकी लोग के ओतना। महाराष्ट्र सरकार में मराठी बनावे वाला के 50 लाख रुपिया देबे के प्रावधान बा। कर्नाटक में भी। हर राज्य में सरकार स्थानीय सिनेमा खातिर बहुत कुछ करतिया , लेकिन हमनी किहाँ नेता सब के मालुमे नईखे कि करे के का बा ?

अगर 2025 के आगे भाषा के ले जाए के बा त इ काम खाली सिनेमा कर सकेला, काहेकि इहे नवका जुग के साहित्य बा। उपन्यास आ दोसर साहित्य पढ़े के ना त रूचि बाँचल बा ना समय। आ ई मय भाषा में भईल बा। भोजपुरी के तनी मामिला इहो गड़बड़ बा कि लोग बोलबो कम करेला। एहिसे अवरी बर्बादी भईल बा। आज हमनी के कतनो भोजपुरी के कागज़ पर लिखीं लेकिन उ सेलुलॉइड पर ना गईल त इ खाली कुछ लोग के शौक़ आ प्रेम बनके रह जाई। भोजपुरी के 100 साल दबावल गईल, तेपर भी हमनी के किताबी साहित्य से शुरुवात नईखीं कर सकत। रोड पर बैलगाड़ी ना मोटर कार चाहीं। बढ़िया सिनेमा आई त भाषा के भी बल मिली।

त आखिर में हम इहे कहब कि भोजपुरी से प्रेम करेवाला लोग के अच्छा सिनेमा खातिर सामने आवही के पड़ी। काहेकि दोसर कवनो रास्ता नईखे। चाहे कतनो उपन्यास लिखाए, सिनेमा ना होखी त चीज़ ना बदली। सिनेमा ना होखी त भाषा खत्म हो जाई। एकरा से बड़ अकाज का हो सकेला ?

"We will have to repent in this generation not merely for the vitriolic words and actions of the bad people, but for the appalling silence of the good people. " - MARTIN LUTHER KING.

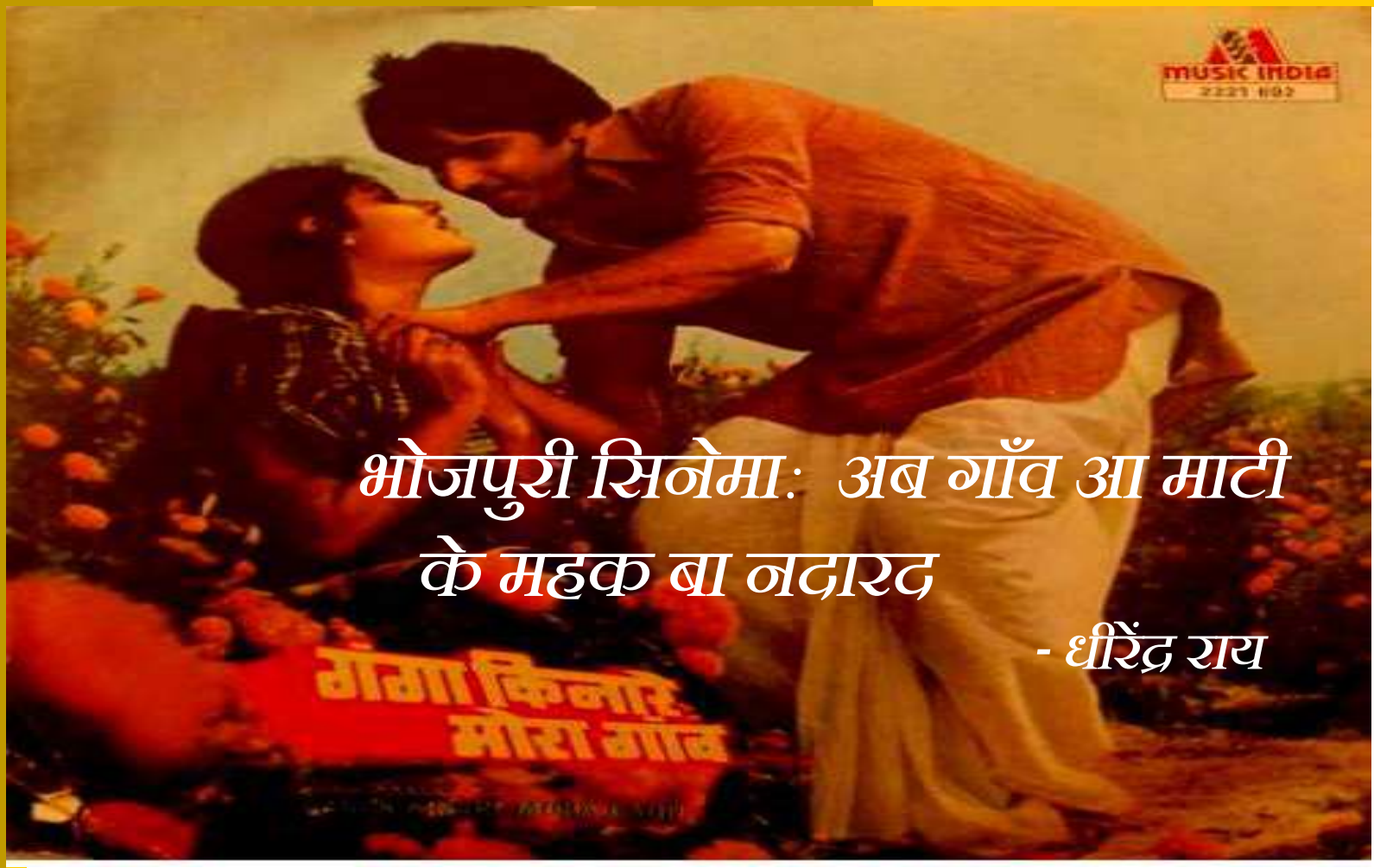

भोजपुरी सिनेमा: अब गाँव आ माटी के महक बा नदारद

- धीरेंद्र राय

भोजपुरी के मिठास, गाँव-जवार के वातावरण और भाषा के सरलता, सहजता कुछ अइसन गुण हवे जेकरा चलते ऊ रग-रग में संजीवनी के तरह बहत रहेले। एही चलते सात समुंदर पार गइला के बाद भी भोजपुरी भाषी लोग आपन बोली और संस्कृति के गर्व से जी रहल बाड़े। भोजपुरिया समाज अपने आप में बहुते अनूठा समाज हवे। एह समाज के बहु-आयामी संस्कृति, सभ्यता अउर रीति-रिवाज के जाने ला जेतना भी कोशिश कइल जाव, आकर्षण ओतने बढ़त जाला। भोजपुरिया माटी पर सगरो तीज-त्योहार अउर व्रत मनावल जाला जवन एगो सभ्य समाज के पोढ़ थाती हवे। इहाँ के लोक कथा, लोक गीत एकर सांस्कृतिक अउर सामाजिक संस्कार के थाती ह। बच्चा-बुतरू, जवान-बूढ़ सबका बीच किस्सा, कहानी, गीत सुने-सुनावे के भी आपन खास महत्व हवे। एही कथा-कहानी, भाषा अउर संस्कृति के जन-जन तक पहुंचावे के प्रयोजन से ही भोजपुरी सिनेमा के जनम भइल।

भोजपुरी सिनेमा के लोकप्रियता में ओकर गीतन के बड़हन हांथ रहे। फिल्म के अलावा भोजपुरी समाज में शादी-बियाह, तीज-त्योहार, उत्सव, व्रत, छठी-बरही चाहे कउनों भी छोट-बड़ जलसा होखे गीत के चलन बहुत पहिले से चलल आ रहल बा। देखल जाय त भोजपुरी फिल्म के सफलता में ओकर मजगर संगीत पक्ष के बड़हन योगदान बा। जइसे एकाद फिल्म के गीत पर धियान दिहल जा सकेला। फिल्म पिया के गाँव के

धीरेन्द्र राय

गाजीपुर(उत्तर प्रदेश) के रहे वाला धीरेन्द्र राय जी महात्मा गाँधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय से किसान आंदोलन पऽ पीएचडी करत बानी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर हईं। भोजपुरी सिनेमा पे एम॰फिल॰, विभिन्न पत्र-पत्रिका में आलेख प्रकाशित, सिनेमा पर सशक्त लेखन, भोजपुरी सिनेमा एवं एलबम में गीत/संवाद लेखन से संबंध राखेनी।

गीत- ए डॉक्टर बाबू बताव दवाई..., चुमही बइठे ली अम्मा सोहागिन शिवशंकर हरि...., आँख से आँख मिलके जे चार हो गइल, साँच मान जिनिगिया तोहार हो गइल..., आँख में सुरतिया तोहरी माँथ पर बिपतिया हाय कहंवा जाईं सगरो अन्हरिया हो राम...। फिल्म गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो के गीत- काहे बसुरिया बजवल..., सोनवा के पिजरा में बंद भइले हाय राम..., हम त खेलत रहली अम्मा जी के गोंदिया। फिल्म गंगा किनारे मोरा गाँव के गीत- गंगा किनारे मोरा गाँव हो..., कहे के त सब केहूं आपन..., जइसे रोज आवेलू तू टेर सुनिके... एही तरह फिल्म बिदेसिया अउर दंगल के गीत- नीक सइयाँ बिन गवनवा नाही लागे सखिया..., हंसी-हंसी पनवा खियाये बेइमनवा..., मोरे होठवा से नथुनिया कुलैल करेला..., पटना से बइदा बुलाई दा जइसन बहुते उदाहरण भरल पड़ल बा। फिल्म बिहारी बाबू के एगो गीत जवना में समाज में बढ़ रहल दहेज के चलन पर चिंता जतावल गइल बा। गीत- निर्धन दुखिया के बिटिया ह भईया बिन बियहल रहि जाय, शादी भईल अब व्यापार मोरे भईया देखीं आज दुलहा बिकाय...। एह गीतन में गाँव के संस्कृति अउर परंपरा में पड़े वाले अवसर पर गावल जाये वाला लोकगीत अउर लोकधुन के जड़ देखल जा सकेला। भोजपुरी के पहिला दू दौर के फिल्मन में एह तरह के मीठास भरल गीत के बहुते लम्बा चिट्ठा बा।

आज जेतना तेज रफ्तार से भोजपुरी फिल्म बन रहल बा ओतने तेज रफ्तार से ओकर गुणवत्ता अउर विश्वास में कमी आ रहल बा। दरअसल क्षेत्रीय भाषा में सिनेमा एह सोच के देन ह कि उ अपना माटी से जुड़के ही आपन बात मजबूती से कह पाई।

आज के पीढ़ी के एह समय के फिल्मकार लोग जवना तरह से तोहार चढ़ल जवानी रसगुल्ला, गमछा बिछाइ के, हमरा हउ चाही, जोबना में आइल सुनामी, तोहार लंहंगा उठा देब रिमोट से, लालीपाप लागेली, निरहुआ सटल रहे, चोलिए में मुर्गा जइसन गीत परोस रहल बाड़ें। का ओकरा में भोजपुरी लोकतत्व के तनिको खोजल जा सकेला? एह समय में बनल कुछ चर्चित फिल्मन के गीत के ओर ध्यान दिहल जाये त फिल्म पियवा बड़ा सतावेला के गीत- काहें देहियां से देहियां रगरेलू..., फिल्म फौजी के गीत- बटनिया हो गइल टाइट..., सात सहेलिया के गीत- मार के ब्लेड जींस तोहार फार दी कौनो..., खैर एह तरह के गीतन के एगो बड़हन सूची बा जेकर खाली एकहीं यथार्थ हवे अधिका से अधिका लाभ कमाइल। द्विअर्थी शब्द अउर हिरोइनन के उघार देखा के घटिहाई अउर अश्लीलता के छौंक से गरीब बिना पढ़ल रिक्शा ठेला वाला के सोचे समझे के शक्ति के नुकसान पहुचावल जा रहल बा। बाकिर भोजपुरी सिनेमा के पक्ष लेवे वाला लोग बड़ा हल्के में इ कह देले कि जब समाज बदल रहल बा त फिल्मों में बदलाव अइबे करी। बाकिर उ लोग इ भूल जालन कि फिल्म समाज में बदलाव के हथियार होले। कला के बड़प्पन अउर उपयोगिता समाज के सही दिशा में होवे वाला बदलाव से जुड़ल होला बाकिर का सांचो आज के भोजपुरी फिल्म समाज के सही दिशा देवे में तनिको चिंतित बिया? अगर उ तनिकों भी एकरा प्रति जागरूक रहित त संवाद, गीत अउर नृत्य के एतना अश्लील अउर बदरंग चेहरा फिल्म में देखे के ना मिलित। एह गीतन के सुनला पर इहे लागेला कि गीत लिखल खाली तुकबंदी अउर द्विअर्थी शब्द के खेल हो गइल बा। जइसे लागत बा कि एके लिखे वाला लोगन के चेतना लोक संस्कृति से जुड़ले नइखे। एह लोगन खातिर लोक के अर्थ बस रिक्सा अउर टैक्सी ड्राइवर के भीड़, आ महानगर में यू.पी अउर बिहार से जाके बसल झुग्गी-झोपड़ी वाले लोग बाड़े। अइसना में 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो और 'गंगा किनारे मोरा गाँव' जइसन फिल्म के गीत के तरह शब्द अउर धुन भला कइसे निकल सकेला।

गीत चाहे उ फिल्म के होखे चाहे लोक के उ तबे तक गीत होला जब तक ओकरा में आदमी के जियरा झकझोर देवे वाला ताकत होला। शरीर के भड़कावे वाला तत्व गीत ना होला। गीत नाहीं त द्विअर्थी शब्द के घूरा होला अउर ना ही फटहा बांस के आवाज। गीत एक तरह के साधना होला, योग होला जेके सुनला पर करेजा के ठंडक मिलेला न कि अउर बउखला जाला। दुर्भाग्य से सांचो आज के फिल्मी गीत जे तरह से लोगन के भावना से खिलवाड़ कर रहल बा आगे चलके ओसे जवन फसल पैदा होई ओकरा बारे में सोच के मन कांप उठता।

बात खाली गीते तक रहित त अउर बात रहित। एकरा दृश्यांकन पक्ष पर एक नजर डालीं त इहां कैमरा के भी बहुत कमाल दिखाई देई। फिल्मकार के हर तरह से इहे कोशिश रहेला कि दर्शक के हिरोइन के छलछलात देह के छिटिका से

www.bhojpurisahityangan.com

भींगा देई । आप लोग भी उहे देख सकीला जवन कैमरा देखावल चाही। पर्दा पर कैमरा पूरा नाच के दौरान हिरोइन के उघार जांघ अउर सीना पर टिकल रहेला । द्विअर्थी गीत, आधुनिक बाजा अउर तड़क-भड़क वाला धुन में हिरोइन के एह तरह के मादक रूप देखावल जाला जइसे नाच-नौटंकी नाहीं उघार देह देखावे वाला कउनो दंगल होत होखे। फिल्म में हिरोइन के अइसना मौका पर छोट-छोट कपड़ा पहिनावल जाला त एह खातिर नाहीं कि उ भोजपुरिया गाँव-समाज के पारंपरिक पहनावा हवे बलुक एह खातिर कि दर्शकन के नाच के समय अधिका से अधिका उघार देह देखावल जा सके।

फिल्म से जुड़ल लोग छाती पीट के कह रहल बा कि आज हमनी के तकनीकी रूप से बड़ा मजबूत हो गइल बानी जा। बाकिर आप सच्चाई जाने के कोशिश करब त पहिले के दौर में बनल फिल्म के फिल्मांकन आज के एह फिल्मन से लाख दर्जा उपर बा । का तकनीकी मजबूती के बस एतने फायदा मिलल बा कि ज्यादा से ज्यादा अंग प्रदर्शन करावल जाय। भोजपुरी के पहिला दौर अउर आज के समय के सिनेमा में गाँव के यथार्थ के प्रस्तुतिकरण एक जइसन नइखे अउर न ही गाँव के यथार्थ खाली किसान अउर गरीब के आर्थिक शोषण से ही जुड़ल बा बलुक एकर कई गो अलगा आयाम भी बा। अगर हम पिछला पांच दशक में बनल भोजपुरी फिल्म के बारे में सोची त इ बात आसानी से समझल जा सकेला कि कवना तरह समाज के बदलत यथार्थ फिल्म के कहानी अउर प्रस्तुति पर असर डालत आ रहल बा। फिल्म 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' में गरीबी, लाचारी अउर सामंती जीवन के फिल्म के कहानी बनावल गइल त 'बिदेसिया' में समाज में फइलत जाति-पांति के दलदल में जूझत गाँव-समाज त 'पिया के गाँव' में धार्मिक एकता अउर दहेज के आधार बनावल गइल । ओही तरे 'बिहारी बाबू' में दहेज के लेके समाज के चेतावे के पहल कइल गइल त 'गंगा किनारे मोरा गाँव' में प्रेम अउर परिवार के एगो बड़हन मूल्य स्थापित कइल गइल । सिनेमा के कहानी, परिवेश, कलाकार, गीत-संगीत हर एक चीज भोजपुरी के आपन रहे। फिल्म के ढेर शूंटिग गाँव में कइल गइल बा जेमे भोजपुरी क्षेत्र अउर गाँव के बड़ा बारीकी से देखावल गइल बा। फिल्म में गीत-संगीत, खेत-खलिहान, हुक्का-बीड़ी कहनी-कहावत, खेल, घर-दुवार सब जियतार पोंथी के तरह बाटे।

नया दौर में हम भाषा त दूर भोजपुरी के कुछउ खोजल चाहीं त निराशे हाथ लागी। कहानी सीधे-सीधे हिन्दी फिल्म के नकल बाटे । अगर आज भोजपुरी फिल्म में भोजपुरी लोकतत्व के छोड़के बाकी कउनों चीज खोजीं त उ मिल जाई । आज भोजपुरी सिनेमा के बढ़त बाजार के देख के अलग भाषा के फिल्म निर्माता निर्देशक लोग भी एकरा ला रूचि देखावे लगले। कम समय अउर कम पइसा में चपकस कमाई के देख के लोग एह धंधा में खूब पइसा लगइले अउर कमा रहल बाड़े। 'ससुरा बड़ा पइसा वाला' से शुरू होखे वाला इ नया दौर हर तरह से मुंबइया फिल्म के पजरा बाटे। आज के समय के भोजपुरी फिल्मन के सिनेमा के कसौटी पर कसल जाय त गुणवत्ता के लिहाज से एकदम निचला सीढ़ी पर नजर आ रहल बा।

इहा आज के भोजपुरी फिल्म के निर्माण के आर्थिक पहलू पर धियान देहल बड़ा जरूरी बाटे। भोजपुरी के पहिला अउर दूसरा दौर के फिल्म में समान्य रूप से पाँच से पच्चीस लाख तक के पूँजी लागत रहे बाकिर नया दौर के मात्र तीस लाख के पूँजी से बनल 'ससुरा बड़ा पइसा वाला' के करोड़न में भइल कमाई के चलते बड़वार पइसा वालन के एहरो दबदबा बढ़े लागल। फिल्म बनावे के लागत भी करोड़ो तक पहुंच गइल। अइसना समय में जहां फिल्म पइसा कमाये के बस एगो जरिया भर रह गइल उहां कला के अभिव्यक्ति मान के सामाजिक सच के पर्दा पर उजागर कइल खाली कोरा कल्पना के अलावा कुछ नइखे । अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण सिद्धान्त के तरह भोजपुरी सिनेमा भी माँग अउर पूर्ति के अलावा कुछ खास नइखे रह गइल । बड़हन पूँजी वाला एह फिल्म अर्थव्यवस्था में अगर आज भी 'देसवा' जइसन एकाध गो यथार्थवादी फिल्म कबो-कबो आ भी जाले त ओकर अवकात बरगद जइसन बड़वार पेड़ के नीचे जामल कुकुरमुत्ता से अधिका ना होला काहें कि उ जोश उ आंदोलन जवन कबो शुरू भइल रहे उहे जब आज खतम हो चुकल बा त ओकरा विषय में ढेर का कहल जा सकेला।

इतिहास गवाह रहल बा कि पूँजीवादी व्यवस्था अपना लाभ खातिर लोगन के हमेशा अपना शर्त पर जिये के मजबूर कइले बा । कला के प्रदर्शन में जब भी ढेर पूँजी लागी त अइसन व्यवस्था के जन्म होई जवन एह माध्यम के उपयोग झूठ के साँच बनाके दिखावे में करी, एही में ओकर कमाई बा। साफ-साफ कहल जाय त आज के भोजपुरी सिनेमा खाली एगो बिकाये वाला समान बनके रह गइल बा।

भोजपुरिया परिवेश में मुट्ठी भर धनी-मनी लोगन के अलावा बहुते बड़ अइसन समाज बा जवन अबो अपना जीये के बुनियादी लड़ाई लड़े में बाझल बा। इ उ लोग हवे जेकरा के गाँव के मड़ई-टाटी और झोपड़ा मे देखल जा सकेला। दू जून के रोटी कमाये शहर गइल लोगन के झुग्गी-झोपड़ी बस्ती में देखल जा सकेला। ए मेहनत अउर जुझारू गरीबन में हर जाति -धरम के लोग बाड़े जवन आपन जीवन चलावे खातिर, पेट भेरे खातिर रिक्शा खींचत, पत्थर फोरत, भट्ठा पर ईटा ढोवत अउर बड़-बड़ परिवार में बर्तन माजत, खाना बनावत, उनकर गाड़ी पोछत, होटल अउर चाय के दुकान पर गिलास पलेट धोवत मिल जइहें। एह में महिला पुरूष सभे शामिल बाटे। लेकिन पिछला एक दशक में धड़ाधड़ जारी भोजपुरी फिल्म के लेखा-जोखा एह बात के गवाही देत बा कि हाल के समाज के यथार्थ एह दौर के फिल्मन से पूरी तरह गायब बाटे।

आज जेतना तेज रफ्तार से भोजपुरी फिल्म बन रहल बा ओतने तेज रफ्तार से ओकर गुणवत्ता अउर विश्वास में कमी आ रहल बा। दरअसल क्षेत्रीय भाषा में सिनेमा एह सोच के देन ह कि उ अपना माटी से जुड़के ही आपन बात मजबूती से कह पाई। लेकिन आज के भोजपुरी सिनेमा एगो अलगे धारा में ठहर गइल बा। इहां से बाहर निकले खातिर ओके अपना के हिन्दी के छाप से अलग करे के पड़ी। कहानी कहे खातिर अपना गाँव-समाज अउर माटी से जुड़े के होई। आज के हीन बिचार अउर भावना से बाहर निकल के एगो नया सूत्र अउर खुद के मुहावरा गढ़े के पड़ी। एह खातिर जरूरी बा एगो नया बदलाव के ताकि उ आपन नैतिकता अउर अंतरआत्मा के बचा सके। जवना समाज अउर दर्शक से एतना कमाई कर रहल बा ओकरा खातिर कुछ जिम्मेदारी निभा सके। उ जनता के विश्वास दिला सके कि भोजपुरी फिल्म लोक संस्कृति, परंपरा, समाज अउर सभ्यता के रक्षक अउर ओकरा विश्वास में सहायक हवे। उनके इ धियान रखे के पड़ी कि दर्शक केहूं के न होला। आपन बोली, आपन कलाकार, आपन भाषा अउर अपना समाज से जुड़ाव ही ओके भोजपुरी फिल्म देखे खातिर अपना ओर खींचेला। अगर सिनेमा के हालत अउर नयापन के ओर धियान ना देहल जाई त एक दिन इ दर्शक ओकर साथ छोड़ देई अउर इ बात भोजपुरी सिनेमा खातिर बहुत ठीक ना होई। इ सोचे वाला बात बा कि जवना परिवेश अउर गाँव के धुरी में रख के भोजपुरी फिल्म संसार के बुनियाद खड़ा कइल गइल आज उ गाँव भोजपुरी सिनेमा से गायब हो रहल बा। जब भोजपुरी सिनेमा के नींव रखल गइल तब केहूं इ ना सोचले रहल कि एकर आवे वाला दिन अइसन दुखदाई होई जवन हमनी के देख रहल बानी जा। आज के दौर के मुख्य धारा के फिल्मन में इ असर खास तौर पर देखे के मिलत बा कि कहानी पूरा-पूरा बॉलीवुड के तर्ज पर गढ़ल जा रहल बा। संवाद भी पूरा भोजपुरी के नइखे। जवन चित्रण कईल जा रहल बा ओकरे आधार पर कहल जाय त हीरोइनन के पूरी तरह यौन कुण्ठा के पूर्ति के साधन मान लेहल गईल बा। आज के समय के भोजपुरी फिल्म में हीरोइन के काम मुख्य रूप से हीरो के अहम के सोहरावल होला। फिल्म के कहानी से गाना के कउनो संबंध होई इहो जरूरी नइखे। भोजपुरी सिनेमा आज अपना उम्र के पचास साल पूरा कर लिहले बा। एकर शुरूवात करे वाला अधिकतर लोग हिन्दी सिनेमा के स्थापित कलाकार रहलें जिनके आपन भाषा, माटी अउर आपन लोगन के प्यार भोजपुरी में फिल्म बनावे खातिर प्रेरित कइलस। मेहनत, लगन, अउर त्याग के बाद बड़ा मजबूती से हमार पूर्वज लोग भोजपुरी सिनेमा के नींव रखले। बड़-बड़ कलाकार, गायक, लेखक अउर राजनेता जइसे नाजिर हुसैन, कन्हैयालाल, असीम, कुमकुम, जद्दनबाई, मोती बीए, चित्रगुप्त, डा. राजेन्द्र प्रसाद जइसन लोग मिलके एकर बीज बोइले। एह बीज के रोपले आज पचास साल हो गइल। एह पचास साल में एहमा बहुते उतार-चढ़ाव आइल लेकिन तमाम नीक-खराब समय के झेलत जब एकर जड़ मजबूज होइल अउर डाल पूरा विश्व में आपन छाप छोड़े लागल त लोग एकर जड़े काटे में लग गइले।

भाषा खाली एगो भाषा ना होला बलुक उ एगो समाज के अंग अउर ओह सभ्यता के अगुआ होले। भारतीय भाषा में भोजपुरी एगो मात्र अंतरराष्ट्रीय भाषा ह जवना के दायरा दुनिया के कई देश में फइलल बा। आज कई देश में इ मातृ भाषा के तरह प्रयोग में बा बाकिर भोजपुरी फिल्म के ना ओह दुनिया से कउनो सरोकार बा अउर ना ही भोजपुरी समाज से। भोजपुरी पट्टी के समस्या के परछाई भी आज के भोजपुरी फिल्म में नइखे लउकत। असलियत पूरी तरह गायब बा। बॉलीवुड के फूहर नकल, अश्लील गीत, नाच-गाना ही एकर पर्याय बन गइल बा। लोक अउर समुदाय से अलगा, समाज अउर संस्कृति के बहरी ढकेलत एगो नया तरह के फिल्मी संसार खड़ा कइल जा रहल बा। आज के भोजपुरी सिनेमा भोजपुरी भाषा अउर समाज के का छबि बना रहल बा इ एगो बड़हन समस्या बा। जेकरा पर गंभीरता से विचार कइल गइल अबे बाकी बा।

सियासत के आपन ताकत देखावे के पड़ी

'.. हर गंउआ में बड़े-बड़े नेता,

संसद से बढ़ के बा बजरिया...'

भाजपा सांसद अउर भोजपुरियन के कथित खेवनहार 'मनोज तिवारी' जी के एगो गीत के ई पंक्ति बिहारी लोगन के राजनीतिक जानकारी के उजागर करत बा बाकी सियासी सपना के हर बार चकनाचूर भइला के बाद ई साफ़ कहल जा सकेला कि बिहारी बाजार के बतकही संसद बना त सकेला बाकी अपना आंखी में बसावल सपना के ज़िंदा होत ना देख सकेला। जी हाँ हम ओही सपना के बात कर रहल बानी जवन पिछला कई दशक से भोजपुरियन के आंखी में हमनी के नेता लोग अपना स्वार्थसिद्धि ला सजावत आ रहल बा बाकी आज तक कवनो अईसन असली रहनुमा ना मिल पाईल भोजपुरिया समाज के जे भोजपुरी के ओकर वाजिब हक़ दिला सके। हर चुनाव में हर पार्टी के हर नेता से भोजपुरिया लोगन के ई आश्वासन इतिहास के कुछ शब्द ही बन के रह जाला कि अबकी बार भोजपुरी संविधान के आठवी अनुसूची में शामिल हो जाई।

भोजपुरी भाषी क्षेत्र से आवे वाला सांसद विधायक लोग के वादा आ सपना के बिसार दी तब भी इतिहास के पन्ना पलटला पर पता चलेला कि कई गो हुक्मरान लोग भी भोजपुरी के ओकर वाजिब हक़ दिलावे के बात कईले बाड़न। हालाँकि अब तक के परिणाम इहे बतावत बा कि सत्ता पक्ष होखे भा विपक्ष, नेता जी लोगन के उ आवाज भी सियासत के चक्रव्यूह में फंस के रह गईल। 3 साल से ज्यादा बीत गईल जब 17 मई 2012 के हिन्दी भी ठीक से ना बोले वाला गृहमंत्री पी. चिदंबरम, सदन में भोजपुरिया लोगन के सांत्वना देत कहले रहलन कि, 'हम रउरा सब के भावना समझS तानी'। भोजपुरिया समाज के भावना समझे के ई बात एगो सियासी चाल ही बन के रह गईल। मानसून सत्र के समय देहले रहलन पी चिदंबरम जी बाकी एगो का कई गो मानसून सत्र बीत गईल पर भोजपुरी आज भी ओही दुर्दशा से दो-चार हो रहल बिया। पता ना ई सियासी मजबूरी ह या सत्ता मिलला के बाद के व्यस्तता, कांग्रेस के समय में पक्का भोजपुरिया खेवनहार दिखे वाला तमाम नेता जी लोग आज भोजपुरी के बारे में एक शब्द भी बोलत नईखे दिखत। सरकार के रूप में कांग्रेस के विफलता अउर भोजपुरी के हक़ के आवाज सुने वाला नेता ढूंढत भोजपुरिया समाज के परेशानी के नरेन्द्र मोदी भी भरपूर फायदा उठवले। 27 अक्तूबर के पटना के गांधी मैदान में जब मोदी जी आपन भाषण भोजपुरी में शुरू कईले त पूरा भोजपुरिया लोगन के एगो आस जगल कि ई आदमी सत्ता में अईला के बाद जरुर ही भोजपुरी के काया कल्प करी। पर अफ़सोस कि भाजपा के तमाम भोजपुरी भाषी नेता जी लोगन के ई बात एगो बिना असर वाला खबर ही बन के रह गईल कि 'मोदी बनिहे पीएम त भोजपुरी शामिल होई आठवी अनुसूची में।

इ सोच के दुःख होला कि भारत में हिन्दी के बाद सबसे ज्यादा बोलल जाए वाली भाषा आज आजादी के लगभग 7 दशक बाद भी संवैधानिक मान्यता से दूर बिया। लानत बा ई देश के सियासी समाज पर जवन कि ओह भाषा के संवैधानिक मान्यता ना दे सकल जवन भारत के पहिलका राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के साथ-साथ दू गो प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री अउर चंद्रशेखर के भी मातृभाषा ह। ए से ज्यादा शर्म के बात का हो सकेला कि अपना देश में ही उपेक्षा के शिकार भोजपुरी के मॉरिशस जईसन देश में संवैधानिक मान्यता

निरंजन कुमार मिश्र

पश्चिम चम्पारण, बेतिया (बिहार) के एगो गाँव जयसिंहपुर के रहे वाला 'निरंजन कुमार मिश्रा' जी, अभी दिल्ली के एगो कॉलेज 'इआन स्कूल ऑफ़ मॉस कम्युनिकेशन से पत्रकारिता स्नातक के पढाई कर रहल बानी। पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न समाचार पत्र/पत्रिका में भी नियमित लेख लिखे नी। राजनीति, समाज, साहित्य-सिनेमा आ संस्कृति पऽ इहाँ के सअधिकार लेखनी। सोशल मीडिया के संघे-संघे इहाँ के आपन ब्लॉग http://niranjankinajar.blogspot.in/ पर भी सक्रीय बानी।

मिलल बा। सरकार के हर एक कदम के आंकडा के नजर से देखे वाला हमनी के नेता लोग के ई आंकडा भी पता ही होई कि देश-दुनिया में 20 करोड़ से ज्यादा लोगन के भाषा भोजपुरी उत्तर प्रदेश के 17, बिहार के 9, झारखंड और मध्यप्रदेश के 2-2 जिला के साथ-साथ दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता अउर चेन्नई जईसन महानगर में भी बोलल जाला। सियासी उपेक्षा के शिकार भोजपुरी भाषा के ई सम्मान भी हासिल बा कि मॉरिशस, त्रिनिदाद, फिजी, टोबैगो अउर सूरीनाम जइसन देश में भी भोजपुरी बोले वाला लोग रहेला। पूरा देश के सियासी अउर राजनीतिक फैसला के जमीन, दिल्ली के ही जमीनी पड़ताल कईल जाव त पता चल सकेला कि दिल्ली के सत्ता पर काबिज होखे वाली सरकार पूर्वांचली लोगन के उंगली के मोहताज बिया।

राजनीति ही उ एकमात्र कारण बा जवन हमनी सब के मातृभाषा के संवैधानिक मान्यता से दूर रखले बा। इतिहास गवाह बा कि सरकार के ओर से मिले वाला कवनो भी अधिकार संसद के बाट जोहला से ना मिलेला एकरा ला सड़क पर उतर के आपन हक़ जनावे के पड़ी अउर अपना ताकत से सियासत के अवगत करावे के पड़ी। हम त इहे कहब,

''अब छोड़ दी आसरा, सरकार बात कुछ करी,

ह ई भूले वाला जात का ई याद कुछ करी,

ई आपन भाषा अउरी संस्कृति के बात बा,

चली उठी हमही रउरा ही आज कुछ करीं''

सामाजिक चरित्र (लघुकथा)

पंडित केसव शास्त्री जी अपना परिवार के पारंपरिक शिक्षा, दीक्षा, ज्योतिष, करमकाण्ड आदि के दरकिनार कइके आपन लइका नबीन के नाव कान्वेंट इस्कूल में करववले रहीं | दलील इ रहे कि जमाना बदलत बा, आ हमनी के समाज के संगे गोड़ से गोड़ मिला के चले के चाही | एकही चिज में बनहाइल रहल समय के मांग नइखे | बात सही भी रहे आ समाज के लोग एह्के सराहल भी |

नबीन मनेजमेंट के पढ़ाई कके एगो नामी कंपनी में नोकरी करेलगलन त उनका अपना एगो महिला सहकर्मी जिनकर नाव नाजनीन रहे से नेह लागि गइल जेकर नतीजा उ अपना बाबुजी के सोझा नाजनीन से बिआह करे के बिचार राखि दिहलन | नबीन के बाति सुनि के पंडी जी तिलमिला गइनी आ जाति-धरम, कुल-खानदान के बात इयाद दियावे लगनी साथ में समाज में होखे वाली बदनामी के भी जिरह भइल |

ब्रिज भूषण चौबे

बक्सर के रहे वाला ब्रिज भुषण चौबे जी , भोजपुरी गद्य साहित्य मे युवा उभरत नाव बानी । इँहा के लेख कहानी पहिले भी आखर प आ चुकल बा । एह घरी इँहा के मुम्बई मे रहि रहल बानी ।

पर्यटन : गुप्त धाम, रोहतास

ऐसे त बिहार में ढेर पुराण मंदिर बा बाकी रोहतास जिला के बाबा गुप्तेश्वर धाम के गुफा में स्थित भगवान शिव के मंदिर अपने आप में अनूठा बा। जिला के मुख्यालय सासाराम से लगभग 50 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम कोना पर कैमूर पहाड़ी के प्राकृतिक सुषमा से सुसज्जित वादी में एह गुफा में स्थित शिवलिंग पर जलाभिषेक से मनई के सब मनोकामना पूर्ण होला अइसन प्राचीन काल से ही मान्यता ह ।

जब बिहार आ झारखण्ड के बंटवारा भइल त भोजपुरियन के सौभाग्य वश भगवान भोले बिहार के ही हिस्सा में परलन । अइसन किवंदंती ह कि जब कैलास पर्वत पर भगवान भोले भस्मासुर के तपस्या से प्रसन्न हो "एवमस्तु " के वरदान दिहले त उ दुष्ट सबसे पहिले शंकरे जी के आपन निशाना बनवलस । उ माँ पार्वती के सौंदर्य पर मोहित हो गइल आ सबसे पहिले अपना राह के सबसे बड़का रोड़ा भगवान भोले के ही निशाना बना लिहलस। ई सोच के कि भोले जवन वरदान देले बाड़ें उ साँच बा की ना। अब महाराज जब वरदान दे देले रहीं त ओकरा से मुकरल खुद शंकर भगवान के भी बस के ना रहे।

अब ओह दानव से बचे खातिर भोले महाराज के एगो सुरक्षित स्थान के तलाश रहे जवना के गुप्त स्थान के नाम दिहल गइल। आगे चल के इहे जगह गुप्त धाम के नाम से विख्यात भइल । अपना भागम -भाग के क्रम में भगवान एह गुफा में भी प्रवास कइलन एह से एकर नाम गुप्त धाम पड़ल। भगवान विष्णु जी से शंकर जी के विवशता देखल ना गइल एह से उ मोहिनी रूप धारण क के भस्मासुर के नाश कइलन । तब जाके भगवान भोले के जान बाचल। भगवान के एह प्रवास स्थान के गुप्त धाम नाम पड़ल।

पहाड़ी पर स्थित एह पवित्र गुफा के द्वार 18 फीट चौड़ा आ 12 फीट ऊंचा मेहराबनुमा ह। गुफा में लगभग 363 फीट अंदर गइला पर एगो बहुत गहरा खड्ड मिलेला जवना में सालों भर पानी भरल रहेला, एह से ए जगह के पातालगंगा कहल जाला । एह गुफा के अंदर प्राचीन काल के दुर्लभ शैल चित्र आज भी मौजूद बा । आगे चल के तुलसी चौरा पार कइला के बाद गुफा के अंदर प्राकृतिक शिवलिंग के दर्शन होइ। गुफा के अंदर ऊपर से शिवलिंग पर हमेशा पानी टपकत रहेला जवना के भक्त लोग भगवान के प्रसाद समझ अपना मुहं में रोक के ग्रहण करेला। सावन भर जलाभिषेक के कार्यक्रम चलेला । लाखों श्रद्धालु बक्सर से कांवर में गंगा जल भर के जलाभिषेक क के अपना सुखशांति के प्रार्थना करेला । सावन महीना के अलावा महाशिवरात्रि और बसंत पंचमी के अवसर पर भी एहिजा भारी मेला लागेला। एहिजा पहुंचे के दू गो रास्ता बा पहिला रास्ता सासाराम से बस द्वारा आलमपुर फिर आलमपुर से उतर के कुछ दूर पैदल फिर पनारी घाट से पहाड़ी रास्ता शुरु हो जाला गुफा तक पहुंचे के । दूसरा रास्ता सासाराम से बस से चेनारी उतर के फिर सवारी गाडी से स्थल पर पहुंचल जा सकेला ,लेकिन चेनारी से सवारी वाहन खाली मेला के समय ही मिलेला ।

आदर्श तिवारी

रोहतास के रहनियार आदर्श तिवारी जी स्वतंत्र पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय बानी। इहाँ के राजनीति-समाज आ भोजपुरी साहित्य-संस्कृति पऽ आपन कलम चलावेनी। पूर्व में इहाँ के दैनिक जागरण से संबद्ध रहल बानी।

दू ठो कविता

इंसानी रिश्ता रीस रहल बा

कलम के नोक में इ सख्ती
शब्द के मायने में इ तल्खी
जर -जवांर ,घर -दुवार
ई इंसानी रिश्ता ...रीस रहल बा
उ तल्खी में केहु के पीस रहल बा

उन्माद ,उमंग से बेदम ,घमंड
नजर तिरछा से , सोझा
गावं में पगडण्डी के हिसाब
शहर के सीधा सड़क पे
ई तिरछी चाल
ई इंसानी रिश्ता रीस रहल बा
उ तल्खी में केहु के पीस रहल बा

सांझ रात से पहिले ,आ दिन के बाद
बदल रहल बा लिबास
कि बेशक ,लुका जाये के बाद
ना चिन्हा पाये के मकसद
बेनकाब,बेलिबास हो जाये के डर
ई इंसानी रिश्ता रीस रहल बा
उ तल्खी में केहु के पीस रहल बा

अख़बार के खबर बेहिसाब
साँझ के सजल दरबार
शब्द के तल्खी में सिमट के
अलग-अलग मायने में बिकात
भावहीन ,मुस्कुरात ,बदचलन आँख
घुर रहल बा , अधनंगा से नंगा सोच
दिल -दिमाग के रिश्ता में
ई इंसानी रिश्ता रीस रहल बा
उ तल्खी में केहु के पीस रहल बा

बाबू के बड़का कमाई

रात ख्याल में
ढिबरी डिबडीबात रहे
गाँव के चौराहा
से दू मील के फासला
खेत के डरेर पे कुदकत मन
चहुंप गइले बथानी

सुखल पतइ छिटाइल
घुप अँधेरा पसराइल
कबो ऐजा बाबूजी के
महफ़िल लागत रहे
अभियो लागेला
शहर के बिचो - बीच
बालकोनी के शीशा से
झाँकत .....
आँख के सिकुरन
उहे खोज रहल बा

बाबू के बड़का कमाई
बथानी के बइठकी
लुट लिहलस.....

मन अब डेगे -डेगे बढ़ रहल बा
दुवरा धुप ,सूखल पेड़ के सुखा रहल बा
केवाड़ी के कोन से , आँगन में छितराइल
रौशनी ,बड़ा मद्धिम लागल

श्वेताभ रंजन

सिवान , बिहार के रहे वाला श्वेताभ रंजन जी , पिछिला कुछ सालन से भोजपुरी साहित्य के थाती मे गजब के बढोतरी कईले बानी। लगातार गद्य आ काव्य के माध्यम से भोजपुरी के साहित्यिक पछ के अउरी बरिआर करत , इँहा के भोजपुरी काव्य संग्रह " कुछ कह रहल बा " प्रकाशित भईल ह। श्वेताभ जी एह घरी दिल्ली मे बानी।

अम्मा के आवाज़
दुवरा के इन्नार .....सब सुख गइल

अम्मा अभियो सोचेले ,
तनी गजन होला

पर भोरे बालकोनी के उहे कोना पे
सूरज निहारेले ...रोज उ जल ढारेले

बाबू के बड़का कमाई
इन्नार के पानी

भोजपुरी दोहा

खेती के घाटा बढ़ल, भुक्खे मरस किसान।
दोषी कवना के कहीं, मुखिया जी धनवान ॥

सहरन में जिनगी भइल, कुंठा-दुःख-संत्रास।
दुखवा कवना से कहीं, सभ करिहें उपहास॥

बेर-बेर छटनी भइल, हरदम लूट-खसोट।
दुर्गत भइल मजूर के, लगल चोट पर चोट॥

आपन गलती के मढ़े, दोसरा प इल्जाम ।
मतलब से दरकार बा, भारी-भरकम नाम ॥

राउर आपन देस में, हँसल छाँव सँग धूप ।
किस्सा आपन देस के, इत खाई उत कूप ॥

चिउड़ा-लिट्टी ना रुचे, बिरयानी के चाह ।
चलल बहुरिया मेम बन, घर फूँकन के राह॥

पन्ना ठंढाई भइल, पिछड़न के पहचान।
कोला पेप्सी पेग बस, अगिड़न के अरमान॥

महिमा आपन देस के गावे बेद-पुरान।
राउर बिटवा रटि रहल, पच्छिम रहल महान ॥

सावन सुलगल जेठ अस, साँस भइल बा भार।
बसले पिया विदेस में, बरखा ओद कटार ॥

घाटा के सौदा बनल, खेत-किसानी आज।
गाँव-गली में भोर से, दारू पियलस लाज॥

परसउती के का दरद, मरम न बूझे बाँझ।
दुपहरिया के घाम का, कइसे बूझे साँझ ?

इकवटिये जिनिगी भइल, अब कवना से आस ?
डूबत सूरज जानि के, केऽहु न आवे पास॥

आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल'

जन्मस्थान - मंडाला (मप्र), बाकिर अब जबलपुर में स्थायी निवास। बुन्देली भासा-भासी भइला के बावजूद हिन्दी में साहित्यकर्म करे के अलावा बुन्देली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, अवधी, ब्रज आदि भासा में काव्य-लेखन प जोर। शास्त्रीय छन्द प गहन अध्ययन। सम्प्रति अवकाश प्राप्त कार्यपालक अभियंता, लोक निर्माण विभाग, अधिवक्ता मप्र उच्च न्यायालय। प्रकाशित पुस्तक - कलम के देव (भक्ति गीत), लोकतंत्र का मकबरा (कविता-संग्रह), मीत मेरे (कविता-संग्रह), भूकंप के साथ जीना सीखें (लोकोपयोगी तकनीकी), एकरा अलावा कई पत्र-पत्रिका, स्मारिका, संकलन के संपादन आ शोधपरक लेख प्रकाशित। 12 राज्यन के विविध संस्था द्वारा 100 से अधिक सम्मान आ अलंकरण।

कवि-पाठक के बीच में, कविता बड़हन सेतु।
लिखल-पढ़ल आनंद बा, सभ के जोड़े-हेतु॥

धइले हाथ करेज पर, खोजे आपन दोष।
अइसन नर के ही सदा, मिलल 'सलिल' संतोष॥

सरस सरल जब-जब भइल, 'सलिल' भाव-अनुरक्ति।
कहले पाठकगण सदा, इहे काव्य अभिव्यक्ति॥

पीर पिये आ प्यार दे, इहे सृजन के रीत।
अंतर से अंतर भइल, दूर- कहाइल गीत॥

मन अइसन हहरल परल, जइसन नदिया धार।
गले लगल दूरी मिटल, टूटल लाज पहार॥

कुल्हि कहानी काल्ह के, गइल जवानी साँच।
प्रेम-पत्रिका छाँड़ के, क्षेम-पत्रिका बाँच॥

जतने बीते ज़िन्दगी, बढ़त गइल अभिमान।
तन जतने सँइता गइल, मन होला बलवान॥

नेह-छोह राखब 'सलिल', धन-बल केकर मीत।
राउर मन से मन मिलल, साँस-साँस संगीत॥

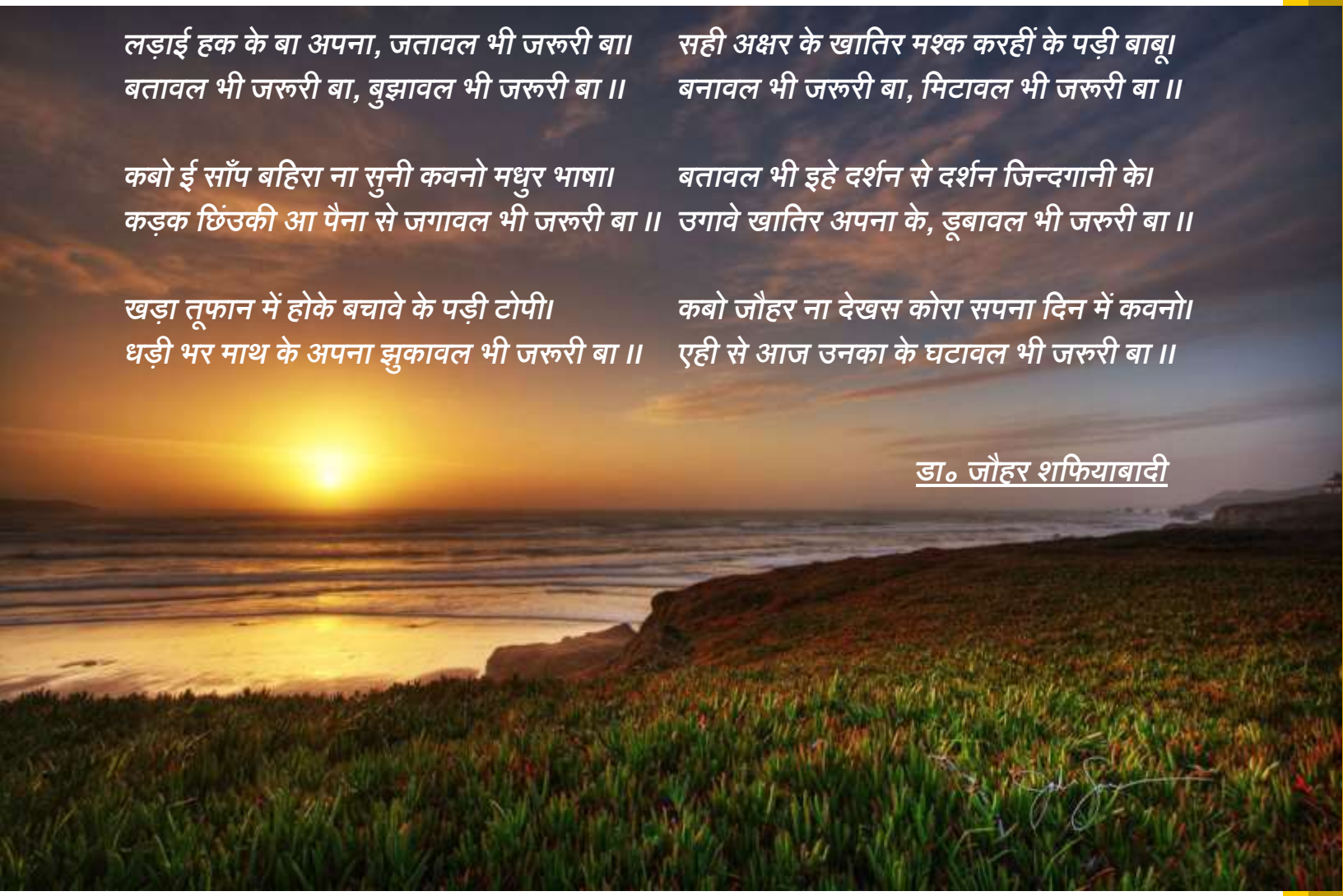

लड़ाई हक के बा अपना, जतावल भी जरूरी बा।
बतावल भी जरूरी बा, बुझावल भी जरूरी बा॥

सही अक्षर के खातिर मश्क करहीं के पड़ी बाबू।
बनावल भी जरूरी बा, मिटावल भी जरूरी बा॥

कबो ई साँप बहिरा ना सुनी कवनो मधुर भाषा।
कड़क छिंउकी आ पैना से जगावल भी जरूरी बा॥

बतावल भी इहे दर्शन से दर्शन जिन्दगानी के।
उगावे खातिर अपना के, डूबावल भी जरूरी बा॥

खड़ा तूफान में होके बचावे के पड़ी टोपी।
धड़ी भर माथ के अपना झुकावल भी जरूरी बा॥

कबो जौहर ना देखस कोरा सपना दिन में कवनो।
एही से आज उनका के घटावल भी जरूरी बा॥

डा० जौहर शफियाबादी

www.bhojpurisahityangan.com

राउर बात

आखर नीमन प्रयास बा , डिजाईन बहुते नीमन लागल ह , भोजपुरी मे अईसनो लिखाता हमरा विश्वास ना रहल ह। आखर टीम के बधाई हवे , पत्रिका से जुड़ल सभ विद्वत जन के बधाई हवे।

• **अंजना पाण्डेय, गोरखपुर**

बड़ नीमन लागल , बतकुचन से ले के मय लेख। बहुत नीमन कोशिश।

• **कुंवर रवीद्र, गाजीपुर**

बड़ा बढिमा प्रयास होता भोजपुरी , खुब जमता , बहुत बधाई बा , प्रिंट निकाली सभे।

• **प्रदीप राय, बलिया**

हतना नीमन लिखाता भोजपुरी मे , हमनी के त विश्वासे नइखे होत। दुर दुर देस के आदमी लिख रहल बा भोजपुरी इ कुल्हि देखि के बहुते नीमन लागत बा। अईसही बढत रही रउवा सभे। आखर टीम के शुभकामना बा।

• **संतोष कुमार, बलिया**

आखर पत्रिका के फ़रवरी से मई तक के 4 अंक देखनी। फरवरी प्रवेशांक और होली अंक के मुख्यपृष्ठ बहुत अच्छा बनल बा । चारो अंक में रचना के चयन से गागर में सागर के उक्ति चरितार्थ होता। खली बाचल जगह के भी तस्वीर आ छोट कथा देके उपयोग भइल बा। बहुत अच्छा। कलेवर आ प्रस्तुतिकरण त देश के प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिका से भी बढ़िया बा। पत्रिका से जुडल सभी लोग , चाहे उ संपादक मंडल हो , चाहे तकनिकी संपादक ; समन्यवय ठीक बा। पत्रिका के भविष्य सुंदर हो , एही कामना के साथ।

• **ललितेश्वर नाथ तिवारी**

आखर टीम के आभार हवै , शुभकामना के साथ। लेख बहुते जब्बर हवन स एह अंक मे बानी ।

• **त्रिलोकी चौबे, बनारस**

जबरजस्त रहल अबकी के , आखर हमनी सब के भोजपुरी से बांध के राखत बा , बड़ रुचत बा।

• **रत्नेश कुमार, सिवान**

छपरा मे शोरा के व्यवसाय के बारे मे जानकारी भईल बड़ा बढिमा लागल। अईसने जानकारी देत रही सभे। खेती बारी प भी कुछ लिखात रहे।

• **विनोद सिंह, रोहतास**

आखर के मई अंक पढ़नी। बड़ाई करे खातिर शब्द ना जुटल। का कहीं, केतना कहीं।

• **गुड्डू कुमार शाह**

भोजपुरी साहित्य के संभारे खाती आ नया ऊंचाई देवे खाती राउर सहयोग के जरूरत बा। भोजपुरी में लिखीं आ "आखर" के साथे भोजपुरी साहित्य के बढ़ावे में सहयोग करीं।

~आखर परिवार

निहोरा

जय भोजपुरी !

माई, मातृभाषा आ मातृभूमि के कवनो विकल्प नइखे। इनका आँचर के नीचे जवन सुख के अनुभुति होखेला ऊहे स्वर्गिक सुख हऽ। रोजी-रोटी के मजबूरी में ना चाहते करीब सभे अपना माई आ माटी से दूर बा। एह कमी के तऽ ना भरल जा सकेला बाकि मातृभाषा से दूरी के पाटे के काम आखर करत बा।

आखर के नींव भी एही उद्देश्य के पूरा करे खाति रखल गइल बा। आखर रउआ सभे से बा, रउआ सभे खाति बा। इ राउर आपन मंच हऽ जहाँ रउआ आपन माई, माटी आ मातृभाषा भोजपुरी से जुड़ल अनुभव यथा -कथा कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, रिपोतार्ज, गीत-गज़ल, कविता, चित्रकारी भेज सकत बानी।

आखर के अगिला अँक (जुलाई) सांस्कृतिक योद्धा भिखारी ठाकुर जी के श्रधांजलि देत (10 जुलाई) , अमर शहीद मंगल पांडे जी जन्मदिवस के मनावत (19 जुलाई) आ सावन महीना पऽ केंद्रित रही। एह अँक में सावन के तीज, त्योहार, कजरी, झुलुआ, हिंडोला, रोपनी जइसन लोकगीत-लोक संगीत पऽ विशेष आलेख , भिखारी ठाकुर जी के भोजपुरी साहित्य आ क्षेत्र खाति योगदान , मंगल पांडे जी के जीवन काल प केंद्रित लेख कविता आमंत्रित कइल जा रहल बा।

राउर बात सुने आ पढ़े खातिर भोजपुरिया समाज आँख बिछवले बा।

रचना भेजे के कुछ जरुरी नियम -

- आपन मौलिक रचना युनिकोड फॉन्ट/कृतिदेव फॉन्ट में टाइप करके भेजीं।
- रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार अपने से प्रूफ रीडिंग जरुर कर लीं। कौमा, हलंत, पूर्णविराम पे विशेष ध्यान दीं। रचना में डॉट के जगहा सिर्फ पूर्णविराम राखीं।
- ध्यान रहे राउर रचना में कवनो असंसदीय आ अश्लील भाषा भा उदाहरण ना होखे।
- राउर रचना के स्वीकृति के सूचना मेल भा मैसेज से दियाई।
- रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज के फोटो आ आपन परिचय (नाम, पता, कार्य आ आपन प्रकाशित किताबन के बारे में यदि होखे त) जरुर भेजीं।
- रचना भेजे के पता बा- aakharbhojpuri@gmail.com
- पत्रिका खातिर राउर हाथ के खींचल फोटोग्राफ, राउर बनावल रेखाचित्र, कार्टून जे विभिन्न विषय के अनुरूप होखे, उहो भेजीं |
- छोट-छोट लईकन के कलाकारी के भी प्रोत्साहित करे

आखर

भोजपुरी ई -पत्रिका

ISSN 2395-7255

ISSN 2395-7255

www.aakhar.com www.facebook/Aakhar @aakharbhojpuri